मनोविज्ञान के सम्प्रदाय (School of Psychology)

☞ सीखने में प्रभावी कारक हैं :
(a) विद्यालय (b) परिवार
(c) समुदाय (d) उपर्युक्त सभी (d)

☞ मीड महोदय के 'आई. एंड वी. सिद्धांत' के अनुसार बच्चों की शैशवावस्था और बाल्यावस्था में किस प्रकार का भाव क्रमशः मुख्य होता है?
(a) हम और अहम् (b) अहम् और हम
(c) हम और तुम (d) तुम और अहम् (b)

☞ निम्नलिखित में से विवरण विधि के अंतर्गत नहीं आने वाली विधि है :
(a) व्यक्ति इतिहास (b) नैदानिक
(c) प्रक्षेपण (d) अंतर्निरीक्षण (d)

☞ निरीक्षणात्मक पद्धति के अंतर्गत आने वाली विधि
(a) अंतर्दर्शन विधि (b) बहिर्दर्शन विधि
(c) उपर्युक्त दोनों (d) इनमें से कोई नहीं (c)

☞ निम्नलिखित में से अंतनिरीक्षण विधि की विशेषता नहीं है :
(a) सामान्य निष्कर्ष बहुत अंशों में सत्य होते हैं।
(b) इस विधि में निरीक्षण बहुत अंशों में सत्य होते हैं।
(c) इस विधि में निरीक्षण के लिए अन्य व्यक्ति को खोजना पड़ता है।
(d) इस विधि में निरीक्षण आसानी से हो जाती है। (c)

☞ "प्रयोगात्मक अंग रहित मनोविज्ञान एक भ्रम मात्र है।", कथन है :
(a) गैरेट का (b) कॉलिंस और ड्रेवर
(c) फ्रायड का (d) स्किनर का (b)

☞ "शिक्षा–मनोविज्ञान, विज्ञान की विधियों का प्रयोग करता है" कथन है:
(a) थार्नडाइक का (b) रुसो का
(c) फ्रायड का (d) चार्ल्स ई. रिकनर का (0)

☞ "निरीक्षण के परिणाम स्वरुप प्राप्त होने वाली खोजों के आधार पर विद्यार्थियों में अनेक वांछनीय परिवर्तन किये गये हैं", कथन है:
(a) डार्विन का (b) टिचनर का
(c) रेबर्न का (d) डगलस व हॉलैंड का (d)

☞ "सब पद्धतियों के लिए नियोजित कार्य, नियंत्रित निरीक्षण और घटनाओं का सतर्क लेखा अनिवार्य है", कथन है :
(a) गैरेट का (b) टिचनर का
(c) रेबर्न का (d) डगलस व हॉलैंड का (a)

☞ योग निर्धारण विधि का प्रतिपादन किसने किया?
(a) वुडवर्थ (b) एडवर्ड
(c) लिकर्ट (d) ई.ए. पील (c)

☞ आंकड़ों के ग्राफीय (रेखीय) प्रस्तुतीकरण की विधि कौन–सी है?
(a) रेखावृत्ति चित्र, आवृत्ति बहुभुज
(b) स्तम्भाकृति / आवृत्ति चित्र
(c) आवृत्ति वक्र, संचय आवृत्ति वक्र
(d) उपरोक्त सभी (a)

☞ प्रयोजना विधि का प्रयोग विद्यार्थियों में जागृत करता है :
(a) सहयोग (b) प्रेम
(c) निराशा (d) आशा (a)

☞ खेल, गीतों व उपहारों द्वारा शिक्षा दी जाती है :
(a) प्रोजेक्ट पद्धति में (b) डाल्टन पद्धति में
(c) मोंटेसरी पद्धति में (d) किंडर गार्डन पद्धति में (d)

☞ सफल साक्षात्कार के लिए आवश्यक है :
(a) सहयोग (b) परामर्श
(c) आत्मीयता का स्थान (d) पुनः स्मरण (c)

☞ आत्मनिष्ठता का दोष किस विधि में पाया जाता है
(a) प्रयोगात्मक (b) विकासात्मक
(c) निरीक्षण (d) सांख्यिकीय (c)

☞ तथ्यों का निर्धारण करने के बाद उनका या निकालकर संख्यात्मक रुप में व्यक्त करना क्या कहलाता है?
(a) आत्मकथा (b) व्यक्ति इतिहास अध्ययन
(c) निर्धारण मान (d) समाजमिति (c)

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

☞ फ्रायड के अनुसार बालक के सर्वांगीण विकास के लिए किस पर अधिक ध्यान दिया जाता है?
(a) मूल से अस्थिर की ओर
(b) चेतन के साथ अचेतन की ओर
(c) स्थिर से मूल की ओर
(d) इनमें से कोई नहीं (b)

☞ प्रेरकीय सम्प्रदाय के जन्मदाता कौन हैं?
(a) एंजिल (b) विलियम मैक्डूगल
(c) फ्रायड (d) डीवी (b)

☞ चिरसम्मत अनुकूलन सिद्धांत के प्रतिपादक हैं :
(a) फ्रायड (b) पावलोव
(c) विलियम वुंट (d) जॉन ब्राड्स (b)

☞ प्रकार्यवाद सम्प्रदाय के प्रवर्तक हैं :
(a) फ्रायड (b) इवान पावलोव
(c) एंजिल व डीवी (d) विलियम व मैक्डूगल (c)

☞ संरचनावादी सम्प्रदाय के प्रतिपादन का श्रेय किस जर्मन प्रोफेसर को दिया जाता है?
(a) विलियम जेम्स (b) विलियम वुंट
(c) विल्हम वुंट (d) विलियम साट (b)

☞ संयुक्त राज्य अमेरिका में मनोविज्ञान के जनक विलियम जेम्स किसके प्रतिपादक हैं?
(a) कार्यात्मंवादी सम्प्रदाय (b) संरचनावादी सम्प्रदाय
(c) प्रकार्यवाद सम्प्रदाय (d) गैस्टाल्ट सम्प्रदाय (a)

☞ जॉन ब्रोड्स वाटसन ने कौन–सा सम्प्रदाय प्रस्तुत किया?
(a) कार्यात्मंवादी सम्प्रदाय (b) संरचनावादी सम्प्रदाय
(c) व्यवहारवादी सम्प्रदाय (d) गैस्टाल्ट सम्प्रदाय (c)

☞ वाटसन द्वारा प्रतिपादित व्यवहारवाद किया जाता है। वैज्ञानिक के जांच परिणामों पर आधारित है?
(a) पावलोव (b) वाटसन
(c) गेटे (d) मैक्डूगल (a)

☞ शिक्षा के क्षेत्र में वस्तुनिष्ठता किसका योगदान है?
(a) उदारवादियों का (b) व्यवहारवादियों का

(c) उग्रवादियों का (d) इनमें से कोई नहीं (b)

☞ पूर्ण से अंश की ओर शिक्षण पद्धति का अधिगम पद्धति किस सम्प्रदाय की देन है?
(a) कार्यात्मंवादी सम्प्रदाय (b) संरचनावादी सम्प्रदाय
(c) व्यवहारवादी सम्प्रदाय (d) गैस्टाल्ट सम्प्रदाय (d)

☞ कोहलर व कुर्त लेविन का सम्बन्ध किस सम्प्रदाय से है?
(a) कार्यात्मवादी (b) गेस्टाल्ट
(c) संरचनावादी (d) प्रेरकीय (b)

अधिगम (Learning)

☞ अधिगम :
व्यवहार परिवर्तन की प्रक्रिया।
अधिगम सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों ही प्रकार का हो सकता है।

☞ निरीक्षण करके सीखना :
वह विधि बालकों में अन्वेषण करने एवं अनुसंधान करने की प्रकृति का विकास करती है।

☞ प्रेरणा :
अधिगम का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक।

☞ आंशिक क्रिया का नियम :
विषय सामग्री का इकाईयों में विभाजन का आधार।

☞ अनुकूलित अनुक्रिया सिद्धांत :
इस सिद्धांत का आधार शरीर–क्रिया विज्ञान है।

☞ क्रिया–प्रसूत अनुबंधन सिद्धांतः
निदानात्मक शिक्षण इस सिद्धांत पर आधारित है।

☞ व्यवहार सिद्धांत :
यह सिद्धांत पाठ्यक्रम के विकास के लिए सैद्धांतिक पृष्ठभूमि प्रदान करता है।

☞ गेस्टाल्टवाद :
इस सिद्धांत के अनुसार व्यक्ति अंतदृष्टि या सूझ द्वारा सीखता है।

☞ टॉलमैन का सिद्धांत :
यह सिद्धांत सीखने के प्रतिकों के बोध पर बल देता है।

☞ क्षेत्रीय सिद्धांत :
इसका आधार वातावरण एवं व्यक्ति है।

☞ मानसिक शक्तियों का सिद्धांत :
अधिगम स्थानांतरण का प्राचीन सिद्धांत।

	अधिगम सिद्धांत	प्रयुक्त जीव–जंतु
☞	अनुकूलित–अनुक्रिया सिद्धांत	कुत्ता
☞	उद्दीपन–अनुक्रिया सिद्धांत	बिल्ली
☞	क्रिया–प्रसूत अनुबंधन सिद्धांत	चूहा एवं कबूतर
☞	प्रतिस्थापन सिद्धांत	खरगोश
☞	व्यवहार सिद्धांत	चूहा
☞	गेटाल्ट सिद्धांत	चिम्पांजी (नामः सुल्तान)

	सिद्धांत	प्रतिपादक
☞	उत्तेजक–अनुक्रिया	ई.एल. थार्नडाइक
☞	प्रयास व त्रुटि	ई. एल. थार्नडाइक
☞	टॉलमैन का सिद्धांत	टॉलमैन
☞	क्षेत्रीय सिद्धांत	कुर्त लेविन
☞	अनुकूलित–अनुक्रिया सिद्धांत	पावलो
☞	क्रिया–प्रसूत अनुबंधन सिद्धांत	वी.एफ. स्किनर
☞	प्रतिस्थापन/स्थापन सिद्धांत	एडविन गूथरी
☞	उद्देश्यवाद का सिद्धांत	एडवर्ड टॉयमैन
☞	व्यवहार सिद्धांत	क्लार्क एल.हल
☞	गेस्टाल्ट सिद्धांत	वर्दीमर

☞	समान तत्वों का सिद्धांत	थार्नडाइक
☞	सामान्यीकरण का सिद्धांत	सी.एच. जूड
☞	सामान्यकरण का सिद्धांत	स्पीयरमैन
☞	सामान्य व विशिष्ट तत्वों का सिद्धांत	स्पीयर मैन

	सिद्धांत (नियम)	उपनाम
☞	साहचर्य	सम्बन्धवाद और बन्ध–सिद्धांत।
☞	अभ्यास का सिद्धांत	उपयोग–अनुपयोग, परिणाम या प्रभाव, संतोष व असन्तोष का नियम।
☞	क्रिया–प्रसूत अनुबंधन	नैमितिक अनुबंधन सिद्धांत
☞	व्यवहार सिद्धांत	क्रमबद्ध व्यवहार सिद्धांत, हल का प्रबलन सिद्धांत, परिष्कृत सिद्धांत या यथार्थ सिद्धांत, अन्तर्नोद न्यूनतम का सिद्धांत, उत्तेजक–अनुक्रिया का सिद्धांत।
☞	प्रयत्न और भूल का सिद्धांत	सम्बन्धवाद का सिद्धांत, उद्दीपन–अनुक्रिया सिद्धांत
☞	टॉलमैन का सिद्धांत	प्रतीक सीखने का सिद्धांत
☞	अभ्यास का नियम	उपयोग–अनुपयोग का नियम
☞	परिणाम या प्रभाव का नियम	संतोष–असतोष का नियम
☞	प्रयास व त्रुटि का सिद्धांत	चयन एवं सम्बन्धन का सिद्धांत, प्रभाव का विस्तार नियम
☞	क्रिया प्रसूत अनुबंधन सिद्धांत	रिक्त प्राणी उपागम, द्वि–कारक सिद्धांत
☞	क्षेत्रीय सिद्धांत	लक्ष्य सूझ सिद्धांत

☞ अधिगम या सीखना एक व्यापक शब्द है। यह जन्मजात प्रतिक्रिया पर आधारित है।

☞ सीखना वह मानसिक क्रिया है जिसमें बालक परिपक्वता की ओर बढ़ता हुआ अपने अनुभवों से लाभ उठाता हुआ अपने स्वाभाविक व्यवहार में प्रगतिशील परिमार्जन करता है।

☞ गेट्स के अनुसार : "अनुभव और प्रशिक्षण द्वारा व्यवहार में परिवर्तन लाना ही अधिगम है।"

☞ मॉर्गन और गिलीलैंड के अनुसार : "अधिगम या सीखना, अनुभव के परिणामस्वरुप प्राणी के व्यवहार में कुछ परिमार्जन है, जो कम से कम कुछ समय के लिए प्राणी द्वारा धारण किया जाता है।"

☞ वुडवर्थ के अनुसार : "नवीन ज्ञान और नवीन प्रतिक्रियाओं को प्राप्त करने की प्रक्रिया, सीखने की प्रक्रिया है।"

☞ क्रो व क्रो के अनुसार : "सीखना या अधिगम आदतों, ज्ञान और अभिवृत्तियों का अर्जन है।"

☞ क्रॉनबैक के अनुसार : "सीखना या अधिगम अनुभव के परिणास्वरुप व्यवहार में परिवर्तन द्वारा व्यक्त होता है।"

☞ कॉलविन के अनुसार : "अधिगम या सीखना अनुभव के कारण हमारे पहले के बने–बनाये (मौलिक) व्यवहार का परिवर्तन है।"
"पहले से निर्मित व्यवहार में अनुभवों द्वारा हुए परिवर्तन को अधिगम कहते हैं।"

☞ जे.पी. गिलफोर्ड : "व्यवहार के कारण, व्यवहार में परिवर्तन ही अधिगम है।"

☞ चार्ल्स ई. स्किनरः "व्यवहार के अर्जन में उन्नति की प्रक्रिया को अधिगम कहते हैं।"

- ☞ मैस्लो : इनके अनुसार अधिगम की दृष्टि से वर्द्धक अधिगम महत्वपूर्ण है। ये अधिगम के उच्च स्तर, मनोगामक तथा भाव पक्षों से संबंधित है। मैस्लो इन्हें स्वत्व अभिप्रेरक कहते हैं। मैस्लो ने बी–मोटिक की संख्या 18 बताई है।
- ☞ अधिगम की उत्तम परिभाषा और व्याख्या ई.आर. हिलगार्ड द्वारा लिखित पुस्तक "Theory of Learning (सीखने या अधिगम के सिद्धांत) में दी गई है।
- ☞ स्वाभाविक व्यवहार में होने वाले प्रगतिशील परिवर्तन या परिमार्जन को ही अधिगम या सीखना (Learning) कहते हैं।

अधिगम :

- ☞ अधिगम मानव प्रकृति है। यह प्रक्रिया तथा परिणाम है।
- ☞ इसकी प्रकृति मानसिक क्षमताओं को विकसित करने की प्रक्रिया है।
- ☞ यह एक परिवर्तनशाली, सतत्: सामाजिक और विवेकपूर्ण समायोजन व समस्या समाधान की प्रक्रिया है।

अधिगम की विशेषताएँ

- ☞ अधिगम सार्वभौमिक है।
- ☞ अधिगम विकास है। इसके फलस्वरुप व्यक्त का शारीरिक व मानसिक विकास होता है।
  पेस्टॉलॉजी ने वृक्ष और फ्रोबेल ने उपवन के उद्धरण के द्वारा सीखने की इस विशेषता को स्पष्ट किया है।
- ☞ अधिगम परिवर्तन है, अर्थात् व्यक्ति अपने व्यवहारों, विचारों, इच्छाओं, मूल प्रवृत्तियों, भाषाओं आदि में परिवर्तन करता है।
- ☞ अधिगम अनुकूलन है।
- ☞ अधिगम अनुभवों का संगठन है। सीखना नये और पुराने अनुभवों का संगठन है।
- ☞ अधिगम उद्देश्यपूर्ण है। उद्देश्य जितना प्रबल होता है, सीखने की प्रक्रिया भी उतनी ही तीव्र होती है।
- ☞ अधिगम विवेकपूर्ण है, अर्थात् सीखना यांत्रिक कार्य न होकर विवेकपूर्ण कार्य है।
- ☞ अधिगम सक्रिय है।
- ☞ अधिगम व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों है, व्यक्ति दूसरों को देखकर और सुनकर सीखता है।
- ☞ अधिगम अन्वेषणा है।

अधिगम को प्रभावित करने वाले मुख्य कारक

सीखने की क्रिया में तीन तत्व मुख्य होते हैं :

(अ) मनोवैज्ञानिक कारक

1. प्रेरणा : प्रेरक एक आंतरिक शक्ति होती है जो व्यक्ति को क्रिया करने के लिए बाध्य करती है। शिक्षक बालकों को प्रशंसा, प्रोत्साहन, पुरस्कार आदि के द्वारा सीखने के लिए प्रेरित कर सकता है।

स्टीफन के अनुसार : शिक्षक के पास जितने भी साधन उपलब्ध है, प्रेरणा सम्भवतः सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।"

2. रुचि और रुझान : बालक की जिस विषय के प्रति रुझान होता है उसी को वह अधिक पढ़ता है। फलतः उसे वह आसानी से सीख लेता है।
3. सीखने की इच्छा : जिन व्यक्तियों में सीखने की इच्छा होती है वही सीख
4. बुद्धि : तीव्र बुद्धि वाले बालक कम बुद्धि वाले बालकों की अपेक्षा शीघ्र सीख लेते हैं।

(ब) शारीरिक कारक

1. शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य : हमारे सम्पूर्ण ज्ञान का आधार प्रत्यक्षीकरण (perception) है जो संवेदना पर आधारित है। आँख खराब होने से आसानी से पढ़ना नहीं सीखा जा सकता है, कान खराब होने पर सुनकर सीखने में कठिनाई होती है।
2. परिपक्वता : शारीरिक और मानसिक दृष्टि से परिपक्व छात्र नई विषय सामग्री को सीखने के लिए सदैव तत्पर एवं उत्सुक रहते हैं। कालेस्निक के अनुसार – "परिपक्वता और सीखना पृथक प्रक्रियाएँ नहीं, वरन् एक दूसरे से अविच्छिन्न रुप से सम्बद्ध और एक–दूसरे पर निर्भर है।"

(स) वातावरण सम्बन्धी कारक

- ☞ सीखने की दृष्टि से पारिवारिक वातावरण, सामाजिक वातावरण, विद्यालयी वातावरण तथा कक्षा का वातावरण प्रमुख है।
- ☞ परिवार में स्वस्थ वातावरण बालक को अच्छी बातें सीखने में काफी सहायक होता है।
- ☞ बालक के सीखने को सबसे अधिक, कक्षा का वातारवरण प्रभावित करता है।

अधिगम को प्रभावित करने वाले अन्य कारक

1. सीखने की विधियाँ : सीखने की विधि जितनी अधिक रुचिकर और उपयुक्त होती है, सीखना उतना ही आसान हो जाता है। इसलिए प्रारम्भिक कक्षाओं में खेल पद्धति और करके सीखने का भी उपयोग किया जाता है।
2. अभ्यास : किसी कार्य को बार–बार करने से कार्य करने की गति बढ़ती है और त्रुटियाँ कम होती जाती है।
3. शिक्षक तथा सीखने की प्रक्रिया : सीखने की प्रक्रिया में शिक्षक एक पथ–प्रदर्शक का कार्य करता है।
4. परिणाम का ज्ञान : सीखने की प्रगति का ज्ञान होता रहता है तो सीखने वाले में उत्साह बना रहता है और सीखने के लिए प्रेरणा मिलती रहती है।

अधिगम के भेद

(Types of Learning)

1. बौद्धिक : संवेदन गति से प्राप्त होने वाले ज्ञान के विकास का अर्जन करना।
2. प्रतिबोद्धात्मक : बालक के संपर्क में आने वाली प्रत्येक वस्तु का अर्थ मस्तिष्क में स्पष्ट हो जाता है।
3. संकल्पनात्मक : इसमें व्यक्ति में तर्क, चिंतन कल्पना आदि का विकास होता है।
4. साहचर्यात्मक : नए संकल्प तभी कारगर सिद्ध होते हैं जब साहचर्य के द्वारा पूर्व धारणाओं को बल प्रदान किया जाता है।
5. श्लाघात्मक : संकल्पना के ज्ञान की ओर बढ़ने पर बालक में प्राप्त अनुभव व ज्ञान के मूल्यांकन के गुण–दोष की विवेचना करने की शक्ति आ जाती है।
6. अभिवृत्यात्मक : किसी वस्तु व कार्य के प्रति धारणा बन जाती है जो उसके व्यवहार को निर्धारित करती है।
7. संवेदन गति : यह व्यवहार में संशोधन का सरलतम रुप है जिसके अंतर्गत बालक कौशल का अर्जन करता है।
8. गत्यात्मक : इसमें बालक शरीर के संचालन गति पर नियंत्रण करना सीखता है।

अधिगम और परिपक्वता (Learning And Maturation)

परिपक्वता का अर्थ उस अभिवृद्धि और विकास से है जो किसी विशेष प्रकार के व्यवहार को सीखने के पहले आवश्यक होता है।

अधिगम की प्रभावशाली विधियाँ

(Effective Methods of Learning)

1. करके सीखना : बालक क्रियाशीलता से अधिक सीखते हैं। गलतियों को ज्ञात करके उनका निवारण करने का प्रयास करते हैं।
2. निरीक्षण करके सीखना : बालक सीखने में अपनी ज्ञानेन्द्रियों का उपयोग करता है।

यह विधि बालकों में अन्वेषण करने एवं अनुसंधान करने की प्रकृति का भी विकास करती है।

3. परीक्षण करके सीखना : बालक जितनी आसानी से पढ़कर नहीं सीख सकता है वह परीक्षण द्वारा सीख लेता है।

4. सामूहिक विधियों द्वारा सीखना : इसमें कुछ प्रमुख विधियाँ निम्नलिखित हैं :

(अ) वाद–विवाद विधि : छात्र को प्रश्न पूछने एवं विचार–विमर्श करने की स्वतंत्रता होती है।

(ब) सम्मेलन एवं विचार गोष्ठी विधियाँ : छात्र परस्पर विचारों के आदान–प्रदान द्वारा ज्ञान की वृद्धि करते हैं।

(स) कार्यशाला विधि : इसे विभिन्न विषयों पर सभाओं का आयोजन किया जाता है।

(द) प्रोजेक्ट, डाल्टन व बेसिक विधियाँ : इन विधियों में सीखने की व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों प्रकार के प्रेरकों को स्थान दिया जाता है।

(य) मिश्रित विधि द्वारा सीखना : सीखने की दो मुख्य विधियाँ हैं : पूर्ण विधि और आंशिक विधि।

☞ पूर्ण विधि में पहले पाठ्य–विषय का पूर्ण ज्ञान दिया जाता है फिर उसके विभिन्न अंशों के बीच सम्बन्ध स्थापित किया जाता है।

☞ आंशिक विधि में पाठ्य विषय को छोटे–छोटे अंशों में विभक्त करके प्रत्येक अंश का अलग–अलग अध्ययन किया जाता है।

इन दोनों विधियों के मिलने से ही मिश्रित विधि का जन्म हुआ है।

अधिगम के सिद्धांत

किन्हीं दो घटनाओं के बीच काल एवं स्थान का सम्बन्ध होना साहचर्य कहलाता है।

अधिगम के अनेक सिद्धांत और नियम निर्धारित किये गये हैं जिन्हें प्रमुखतया दो वर्गो में बाँटा जा सकता है :

(अ) साहचर्य का सिद्धांत

(ब) सीखने का क्षेत्रीय सिद्धांत

1. साहचर्य का सिद्धांत

(Theory of Association)

सीखने की इस अवधारणा का प्रतिपादन सर्वप्रथम अंग्रेज दार्शनिकों ने किया था। इसके समर्थक हॉल्स, लॉक, हरबर्ट एवं वर्कल थे।

इस सिद्धांत के अनुसार एक प्रत्यय दूसरे का स्मरण करता है।

थार्नडाइक का उत्तेजक–अनुक्रिया सिद्धांत

इसके अनुसार सीखना उत्तेजक–अनुक्रिया के फलस्वरुप होता है।

थार्नडाइक–इस सिद्धांत के प्रतिपादक ।

थार्नडाइक एवं वुडवर्थ के अनुसार सभी मानसिक घटनाएँ उत्तेजकों के प्रति प्रतिक्रिया है। किसी भी क्रिया के लिए एक उत्तेजक (S) होता है जो प्राणी पर प्रभाव डालता है जिसमें वह अनुक्रिया (R) करता है। उत्तेजक और अनुक्रिया के बीच सम्बन्ध (S-R Bond) बन जाता है। इसलिए इस सिद्धांत को सम्बन्धवाद और बन्ध–सिद्धांत भी कहते हैं।

रेन के अनुसार : "सम्बन्धवाद, वह सिद्धांत है जो समस्त मानसिक प्रक्रियाओं को परिस्थितियों तथा अनुक्रियाओं के बीच मूल एवं अर्जित संयोजन का कार्य मानता है।"

थार्नडाइक के सीखने (अधिगम) के नियम :

1. तत्परता का नियम (Law of Readiness) : बालक में पढ़ने की जिस समय इच्छा होती है उसी समय वह पढ़ता है। इच्छा न होने पर वह डर के मारे पढ़ने अवश्य बैठ जाता है किन्तु सीख नहीं पाता है।

2. अभ्यास का नियम (Law of Exercise) : इसे उपयोग अनुपयोग का नियम भी कहा जाता है।

उपयोग का नियम : इस नियम के अनुसार जिस कार्य का अभ्यास बार–बार किया जाता है उसे सरलतापूर्वक सीख लिया जाता है।

उदाहरणार्थ : कविता और पहाड़े याद करके कल उन्हें बार–बार दोहराना पड़ता है।

☞ अनुप्रयोग का नियम : यदि व्यक्ति सीखे हुए कार्य का अभ्यास या उपयोग नहीं करता है तो वह उसे भूल जाता है।

3. परिणाम या प्रभाव का नियम (Law of Effect) : इस सिद्धांत को संतोष–असंतोष का नियम भी कहते हैं। थार्नडाइक के अनुसार यह नियम सीखने और अध्यापन का आधारभूत नियम है।

इसके अनुसार जिस कार्य के फलस्वरुप हितकर परिणाम प्राप्त होते हैं, उसी को व्यक्ति दोहराता है।

☞ उपर्युक्त तीनों नियम 'सीखने (अधिगम) के मुख्य नियम' कहलाते हैं ओर उत्तेजक प्रतिक्रिया सिद्धांत या सम्बन्धवाद पर आधारित है।

☞ इन नियमों के अतिरिक्त सीखने (अधिगम) के गौण नियम भी है जो मुख्य नियमों को विस्तार देते हैं जो निम्नलिखित हैं :

अधिगम के गौण नियम :

1. बहु–प्रतिक्रिया का नियम (Law of Multiple Response) प्राणी जब कोई नया कार्य करना सीखते हैं, तो सफलता प्राप्त करने के लिए विभिन्न प्रकार की प्रतिक्रियाएँ करते हैं। अंत में वे उस कार्य को करने की एक संतोषजनक प्रतिक्रिया ज्ञात कर लेते हैं।

यह प्रत्यय और भूल पर आधारित है।

----

2 : 30

2. मानसिक विन्यास का नियम (Law of Disposition) :

यदि सीखने वाला–मानसिक रुप से सीखने के लिए तैयार नहीं होता है तो वह सीखने में असफल रहता है, त्रुटियाँ अधिक करता है एवं विलम्ब से सीखता है।

3. आंशिक क्रिया का नियम (Law of Partial Activity) : वह नियम इस बात पर बल देता है कि कोई एक प्रतिक्रिया सम्पूर्ण स्थिति के प्रति नहीं होती है। यह केवल सम्पूर्ण स्थिति के कुछ पक्षों या अंशों के प्रति ही होती है। सम्पूर्ण विषय सामग्री को इकाईयों में विभाजित करके छात्रों के सामने प्रस्तुत करें। अंश से पूर्ण की ओर इस सिद्धांत की प्रेरणा है।

4. आत्मीकरण का नियम (Law of Assimilation) : नवीन ज्ञान का पहले दिये हुए ज्ञान से सम्बन्ध स्थापित होने से बालक ज्ञान को आत्मसात करता है।

5. साहचर्य–परिवर्तन का नियम (Law of Association Shifting) : पहले की गई क्रिया को उसी के समान दूसरी परिस्थिति में उपयोग में लेने से इसमें क्रिया का स्वरुप वही रहता है किन्तु परिस्थिति बदल जाती है। उदाहरणार्थ – रसायन का यदि कोई छात्र क्लोरोफॉर्म बनाने की विधि और उसके गुणधर्म सीख चुका है जो आयोडोफॉर्म पढ़ाते समय उसके उस ज्ञान का उपयोग करना चाहिए। इसमें बालक शीघ्र ही आयोडोफॉर्म के बारे में भी ज्ञान प्राप्त कर लेंगे। इसके अतिरिक्त साहचर्य परिवर्तन, सादृश्य तथा अनुक्रिया, तत्वों की पूर्व सामर्थ्य, रुझान या मनोवृत्ति आदि नाम से भी शिक्षा सिद्धांतों का प्रतिपादन किया गया है।

प्रयास का त्रुटि का सिद्धांत

- थार्नडाइक का प्रभाव या परिणाम का नियम प्रक्रिया में पुरस्कार और दंड के महत्व को प्रकाश में लाता है।
- थार्नडाइक ने अपने अभ्यास के नियम में परिवर्तन कर इसका प्रतिपाद किया। अभ्यास के साथ पुरस्कार मिलने पर ही सीखना प्रभावी होता है। पुरस्कार के साथ दंड भी प्रतिक्रिया को कम नहीं करता है। इसे प्रभाव का विस्तार नियम भी कहा जाता है।
- आलोचकों ने इस सिद्धांत को अलग न मानकर थार्नडाइक के सम्बन्धवाद के ही अंतर्गत माना।
- इस सिद्धांत के अनुसार, प्राणी के सामने जब कोई नई परिस्थिति उत्पन्न होती है तो वह इससे अभियोजन करने के लिए स्वाभाविक प्रतिक्रियाएँ करने लगता है। यह प्रतिक्रियाएँ आरम्भ में त्रुटिपूर्ण होती है किन्तु प्रतिक्रिया करते–करते उसे अचानक सफलता मिल जाती है। सफलता मिलने पर वह उस क्रिया की पुनरावृत्ति करता है जिससे प्रत्येक प्रयास में त्रुटियों की संख्या कम होती जाती है और धीरे–धीरे वह बिना किसी त्रुटि के, कम समय से ठीक ढंग से कार्य करने लगता है।
- इस सिद्धांत द्वारा बालक अपनी पहले की गलतियों से होने वाले अनुभवों से लाभ उठाता है। यह सिद्धांत निरंतर प्रयास पर बल देता है इसलिए बालक किसी भी समस्या से घबराता नहीं है। यह सिद्धांत अभ्यास की क्रिया पर आधारित है। इसलिए यह सीखे हुए कार्य को स्थायी बनाता है।
- क्रो एवं क्रो के अनुसार : "यह सिद्धांत गंभीर चिंतन वाले विषयों के लिए बहुत उपयोगी है, जैसे–गणित, विज्ञान और समाजशास्त्र"
- इस सिद्धांत के अंतर्गत बालक प्रयासों द्वारा लक्ष्य की प्राप्ति का सही तरीका ज्ञात करता है।
- प्रयत्न और भूल सिद्धांत के विभिन्न नाम :
- सम्बन्धवाद का सिद्धांत
- उद्दीपन–अनुक्रिया सिद्धांत
- सीखने का संबंध सिद्धांत
- चयन एवं सम्बन्ध का सिद्धांत
- अधिगम का बंध सिद्धांत
- आवृत्ति का सिद्धांत
- S-R थ्योरी
- प्रयत्न और भूल सिद्धांत की आलोचना :
- व्यर्थ के प्रयत्नों पर बल दिया गया है, इस कारण सीखने में समय नष्ट होता है।
- व्यक्ति कैसे सीखता है, इसे स्पष्ट नहीं करता।
- अभ्यास व रटने पर आवश्यकता से अधिक बल दिया गया है।
- सिद्धांत का शैक्षिक निहितार्थ :
- छात्रों को अनुक्रिया के अवसर देने चाहिए।
- यह मंद बुद्धि बालकों के लिए उपयोगी है।
- अर्थपूर्ण सामग्री अंशों से विभक्त होनी चाहिए।
- प्राप्त ज्ञान का मूल्यांकन।
- जीवन से संबंधित का पढ़ाना।
- अनुभवों का लाभ उठाने की क्षमता का विकास। त्रुटियों का निराकरण करता है।
- बालकों में धैर्य एवं परिश्रम के गुणों का विकास।
- यह गणित, विज्ञान और समाजशास्त्र जैसे विषयों को सीखने में अधिक उपयोगी है।
- प्रभाव के नियम के अनुसार बालक को उचित प्रोत्साहन–पुरस्कार या प्रशंसा देना चाहिए जिससे वह उचित रुप से शिक्षण कर सके। यह सिद्धांत शिक्षण में प्रेरणा को पर्याप्त महत्व देता है।

2. पॉवलो का अनुकूलित–अनुक्रिया सिद्धांत

(Pavlov's Conditioned Response Theory)

इस सिद्धांत का आधार शरीर–क्रिया विज्ञान है। यह सिद्धांत मनुष्यों के सीखने की क्रिया की सफलतापूर्वक व्याख्या कर सकता है।

यह सिद्धांत, सम्बन्धवाद के इस सिद्धांत को महत्व देता है कि उत्तेजना और प्रतिक्रिया का सम्बन्ध होना ही सीखना है। इस सिद्धांत के प्रतिपादक रुसी मनोवैज्ञानिक पॉवलो थे।

अस्वाभाविक या कृत्रिम उत्तेजक के कारण–स्वाभाविक या प्राकृतिक उत्तेजक के समान हुई प्रतिक्रिया को 'सम्बद्ध प्रतिक्रिया' कहते हैं।

पॉवलो का प्रयोग–पॉवलो एक कुत्ते को प्रतिदिन एक निश्चित समय पर भोजन दिया करता था। भोजन को देखते हुए कुत्ता लार टपकाने लगता था। कुछ प्रयासों के बाद भोजन (स्वाभाविक उत्तेजक) देने से पहले घंटी बजाई (अस्वाभाविक उत्तेजक) जाने लगी। फलस्वरुप भी कुत्ते के मुंह से लार टपकने (स्वाभाविक प्रतिक्रिया) लगती थी। इसे पॉवलो ने भोजन देखकर लार टपकाने की स्वाभाविक प्रतिक्रिया को घंटी बजने के अस्वाभाविक या कृत्रिम उत्तेजक से सम्बद्ध कर दिया। भोजन (स्वाभाविक उत्तेजक) और घंटी (अस्वाभाविक उत्तेजक) दोनों उत्तेजकों में सम्बन्ध स्थापित हो जाने के कारण कुत्ता लार टपकाने (स्वाभाविक क्रिया) लगता था।

इसके बाद पॉवलो ने घंटी बजाई परन्तु भोजन नहीं दिया। घंटी की आवाज सुनते ही कुत्ते के मुंह से लार टपकने लगी। यहां घंटी बजना (अस्वाभाविक या कृत्रिम उत्तेजक) और लार टपकने (स्वाभाविक प्रतिक्रिया) में सम्बन्ध स्थापित हो गया। इस प्रकार स्वाभाविक प्रतिक्रिया एक अस्वाभाविक उत्तेजक के प्रति होने लगी।

उत्तेजक (S) और अनुक्रिया (R) के सम्बन्ध दर्शाने के लिए अनुबंधन प्रक्रम को निम्न प्रकार चित्रित किया जा सकता है :

वाट्सन का प्रयोग : वाट्सन ने एक 11 वर्ष के बालक पर प्रयोग किया और यह सिद्ध किया कि बालकों में भय, घृणा, प्रेम तथा आदतों का विकास अनुबंधन के कारण ही होता है।

- इस सिद्धांत में क्रियाशीलता के सिद्धांत का उपयोग सीखने के लिए अत्यंत आवश्यक है।
- यह सिद्धांत सह–सम्बन्धन के सिद्धांत पर बल देता है।
- यह सिद्धांत क्रिया की पुनरावृत्ति पर बल देता है।
- अनुशासन स्थापित करने के दंड और पुरस्कार के सिद्धांत इसी विधि पर आधारित है। यह बालकों में अच्छी आदतों के निर्माण और पुनर्बलीकरण की भी व्याख्या करता है।
- वह सिद्धांत भाषाओं के सीखने और सिखाने के लिए भी विशेष महत्वपूर्ण है।
- इस सिद्धांत की उन विषयों को सीखने या सिखाने के लिए विशेष रुप से सहायता ली जा सकती है जिसमें सोचने–समझने की क्रिया न हो। जैसे–सुलेख और अक्षर–विन्यास।
- शिक्षण में श्रवय–दृश्य सामग्री का उपयोग, इसी सिद्धांत पर आधारित है।
- अनुकूलित अनुक्रिया सिद्धांत के दोष :
- मानव को यांत्रिक मानना।

- केवल सरल विषयवस्तु के अधिगम को बताता है जटिल–विचार श्रृंखला को नहीं।
- मानव के विवेक, तर्क व चिंतन आदि गुणों की अवहेलना।
- अधिगम अस्थायी होता है – यदि उत्तेजकों का संबंध समाप्त कर दें तो प्राणी उसे भूल जाता है।

3. स्किनर का क्रिया–प्रसूत अनुबंधन सिद्धांत
(Skinner's Operant Conditioning Theory)

प्रति अमेरिका के मनोवैज्ञानिक बी.एफ. स्किनर ने 1938 ई. में किया। इस सिद्धांत को नैमित्तिक अनुबंधन सिद्धांत भी कहते हैं।

- इसमें व्यवहार या अनुक्रिया को अनुबंधित किया जाता है।
- अनुक्रिया के लिए किसी बाह्य उद्दीपन की आवश्यकता नहीं होती है।
- अनुक्रिया को सबलीकृत या पुनर्बलित कर दिया जाये तो उसकी भविष्य में पुनरावृत्ति की संभावना बढ़ जाती है।
- पील–'सबलीकरण का सिद्धांत यह प्रतिपादित करता है कि जो अनुक्रिया आवश्यकता पूर्ति के ठीक पूर्व में सम्पन्न होती है, वह सीख ली जाती है।'
- स्किनर ने पुनर्बलन को प्रधान बनाया। समस्या के समाधान के लिए तर्क एवं समझ का उपयोग किया।

स्किनर ने दो प्रकार के व्यवहारों का वर्णन किया है – प्रतिक्रियात्मक व्यवहार तथा क्रिया प्रसूत व्यवहार।

इसे स्किनर का द्वि कारक सिद्धांत भी कहा जाता है। स्किनर के अनुसार छः महीने के बच्चे भी इस सिद्धांत से सीख सकते हैं।

स्किनर के प्रयोज्य क्रियाशील रहते हैं इसलिए इस सिद्धांत को क्रिया–प्रसूत अनुबंधन सिद्धांत कहा गया है।

स्किनर का प्रयोग – स्किनर ने पहले अपना कार्य चूहों पर किया और बाद में कबूतर पर।

स्किनर ने एक ऐसे बॉक्स की रचना की जिसमें एक छड़ और एक भोजन की तश्तरी लगी थी। छड़ को दबाया जा सकता था। इस बॉक्स को स्किनर बॉक्स कहा गया। एक भूखे चूहे को एक बॉक्स में रखा। चूहा बॉक्स के इधर–उधर घूमता रहा और जैसे ही उसने छड़ दबाई भोजन तश्तरी में आ गया। जब भोजन को चूहे के इस व्यवहार का पुनर्बलन कर दिया और वह बार–बार वही व्यवहार करने (छड़ दबाने) लगा।

स्किनर ने अपने सिद्धांत के आधार पर परंपरागत S-R सूत्र को R-S सूत्र में परिवर्तित कर दिया। स्किनर उत्सर्जित अनुक्रियाओं को क्रिया–प्रसूत तथा निष्कर्षित अनुक्रियाओं को उद्दीपन प्रसूत कहते थे।

शिक्षा में उपयोग

बालकों में वांछित व्यवहार का विकास।

जब बालक लिखना या पढ़ना आरम्भ करता है तो माता–पिता या शिक्षक बालक के सही लिखने पर चॉकलेट या कोई अन्य खाने की चीज देकर उसकी क्रिया या प्रबलन कर सकते हैं।

वांछित और अच्छे व्यवहार का पुनर्बलन देकर तुरन्त करना चाहिए, देर करने से प्रभाव कम हो जाता है।

- स्किनर के क्रिया–प्रसूत अनुबंधन में सही अनुक्रिया का होना अधिक महत्व रखता है।
- स्किनर का यह सिद्धांत अभिप्रेरणा पर बल देता है।
- शिक्षण की कार्यक्रमित अनुदेशन प्रणाली पूर्णतः इस सिद्धांत पर आधारित है।

मानसिक एवं संवेगात्मक अस्थिरता का उपचार। बालक का स्वभाव निर्माण, अभिवृत्ति का विकास, निदानात्मक शिक्षण इस सिद्धांत पर आधारित है।

4. गूथरी का प्रतिस्थापन सिद्धांत

एक दिया हुआ उत्तेजक अथवा उत्तेजकों का संचय एक निश्चित अनुक्रिया करने की प्रवृत्ति रखेगा और गूथरी के अनुसार सीखना, जन्मजात अनुक्रियाओं को दूसरे उत्तेजकों की ओर विस्तारित करने की क्रिया है।

गूथरी ने अपने सिद्धांत के प्रतिपादन हेतु खरगोश पर प्रयोग किये।

5. हल का व्यवहार सिद्धांत
(Hull's Systematic Behaviour Theory)

इस सिद्धांत का प्रतिपादन मनोवैज्ञानिक क्लार्क एल. हल द्वारा किया गया।

इस सिद्धांत के अनुसार 'आवश्यकता की पूर्ति सीखने की प्रक्रिया का आधार है'।

हल ने चूहों पर अनेक प्रयोग किये। इन प्रयोगों के आधार पर उसने निष्कर्ष निकाला कि उत्तेजना (S) और अनुक्रिया (R) के बीच सम्बन्ध अन्तर्नोद पर निर्भर है।

चार्ल्स ई. स्किनर के अनुसार : "अब तक सीखने के जितने भी सिद्धांत–प्रस्तुत किये गये हैं उनमें यह सर्वश्रेष्ठ है।"

पाठ्यक्रम छात्रों की आवश्यकताओं के अनुरुप बनाया जाना चाहिए।

शिक्षक को चाहिए कि वह ज्ञान की पुनरावृत्ति कराये।

छात्र के सफल और वांछित प्रयास को उसकी प्रशंसा करके अवश्य ही प्रबलित कराना चाहिए। इसमें वह क्रिया की पुनरावृत्ति करेगा और उसके ज्ञान की पुष्टि होगी।

जो ज्ञान बालक की आवश्यकता की पूर्ति नहीं कर पाता है, वह उसके लिए बेकार होता है।

हल का सीखने का सिद्धांत आवश्यकता की पूर्ति या न्यूनतम द्वारा सीखने पर बल देता है। अनेक शिक्षाविदों तथा मनोवैज्ञानिकों ने इसे सर्वोत्कृष्ट सिद्धांत के रुप में मान्यता दी है।

गेस्टास्ट या समग्राकृति सिद्धांत
(Gestalt Theory)

गेस्टाल्ट स्कूल का जन्म सन् 1920 ई. में हुआ था। इस स्कूल से सम्बन्धित व्यक्ति मैक्स वर्दीमर, कोहलर तथा कोफका है। वर्दीमर इस सिद्धांत के प्रवर्तक है और कोफका तथा कोहलर ने इस सिद्धांत को आगे बढ़ाने का कार्य किया।

गेस्टाल्ट का अर्थ होता है समग्राकृति या पूर्णाकार।

- मस्तिष्क में चीज को पूर्ण रुप या समग्र रुप से देखते हैं।
- बालक या व्यक्ति गाय को देखता है तो वह उसे गाय के रुप में ही देखता है न कि आँख, नाक, कान, सिर, धड़, पैर आदि के रुप में।
- गेस्टाल्टवादी, मनोवैज्ञनिक वातावरण में विश्वास करते हैं। वे भौतिक वातावरण को अधिक महत्व नहीं देते।
- गेस्टाल्ट के अनुसार मानव व्यवहार को गणितीय रुप से विश्लेषित नहीं किया जा सकता है।
- कोहलर द्वारा सुल्तान नामक चिम्पांजी या वनमानुष पर किया गया प्रयोग अधिक विख्यात है।

शिक्षा एवं गेस्टाल्ट सिद्धांत

- यह सिद्धांत कल्पना, तर्क और चिन्तन आदि पर विशेष बल देता है। इनका सम्बन्ध बुद्धि से होता है।
- यह सिद्धांत रचनात्मक कार्यो के लिए विशेष लाभकर है।
- इस सिद्धांत के अनुसार बालक स्वयं खोजकर, ज्ञानार्जन के लिए तैयार रहता है।
- इस सिद्धांत का अनुसंधान कार्य में बहुत महत्व होता है।
- शिक्षण में समस्या–समाधान विधि को अपनाना चाहिए। इस सिद्धांत के अनुसार बालक इसी विधि से सीखता है।

टॉलमैन का सिद्धांत
(Tolman's Theory)

इस सिद्धांत में सीखने की क्रिया में उद्देश्य का विशेष महत्व है। सीखने की क्रिया में प्राणी का व्यवहार उद्देश्यपूर्ण होता है।

यह सिद्धांत सीखने के प्रतीकों के बोध पर बल देता है। इसलिए इसे प्रतीक सीखना भी कहते हैं।

इस सिद्धांत के अनुसार अंधाधुंध प्रतिक्रियाएँ सीखने में सहायक नहीं होती हैं। सीखने के लिए केवल बौद्धिक व्यवहार ही उत्तरदायी होता है।

इस सिद्धांतानुसार बालक को शिक्षा देते समय उसकी आयु तथा अनुभवों को भी ध्यान में रखना चाहिए।

कुर्त लेविन का क्षेत्रीय सिद्धांत
(Field Theory)

इसका आधार वातावरण एवं व्यक्ति की स्थिति है।

इसके प्रवर्तक कुर्त लेविन है। लेविन ने जीवन–स्थल के आधार पर व्यक्ति के अनुभवों की व्याख्या की है।

लेविन के सिद्धांत में भर्त्सना, लक्ष्य तथा अवरोध प्रमुख तत्व है। किसी व्यक्ति को लक्ष्य की समाप्ति के लिए अवरोध को पार करना आवश्यक है।

लेविन के सिद्धांत का विकास अभिप्रेरणा और प्रत्यक्षीकरण सिद्धांत के रुप में हुआ है। इसलिए लेविन सीखने की क्रिया में प्रेरणा तथा प्रत्यक्षीकरण पर बल देते हैं। प्रत्यक्षीकरण का तात्पर्य है कि कोई व्यक्ति किस प्रकार किसी परिस्थिति को देखता है।

यह सीखने का लक्ष्य सूझ सिद्धांत है।

अधिगम या सीखने के प्रमुख प्रकार

(1) निरीक्षण से सीखना : शिक्षकों को चाहिए कि वह शिशुओं और बालकों को सिखाने के लिए प्रतीकों का प्रयोग न करके मूर्त वस्तुओं का प्रयोग करे क्योंकि उनका अवधान मूर्त वस्तुओं पर ही केन्द्रित होता है। अतः मॉडल, चार्ट, वास्तविक वस्तु आदि का शिक्षण में प्रयोग करना चाहिए।

(2) अन्तर्दृष्टि या सूझ से सीखना : सूझ का अभिप्राय वस्तुत पर ध्यान केन्द्रित करके अर्थात् उसका निरीक्षण करके वस्तु सम्बन्धी उपयुक्त ज्ञान प्राप्त करना है।

वह मानसिक संगठन जिसके द्वारा कोई समस्या या परिस्थिति अपने सभी सम्बन्धों के साथ स्पष्ट रुप से दिखाई देने लगती है, सूझ कहलाती है।

अंतर्दृष्टि किस प्रकार उत्पन्न होती है इसकी व्याख्या गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों (कोहलर 1927, कोपका 1935, वरदाइमर 1945) ने मुख्यतः पांच सम्प्रत्ययों के माध्यम से की है :

1. लक्ष्य
2. बाधा
3. तनाव
4. संगठन
5. पुनः संगठन

(3) अनुकरण से सीखना : इस प्रकार के सीखने में कोई व्यक्ति अपने से श्रेष्ठ व्यक्तियों के द्वारा किये गये कार्यो की पुनरावृत्ति करता है।

(4) प्रयास एवं त्रुटि से सीखना : इस प्रकार से सीखने को सफल अनुक्रियाओं के चुनाव द्वारा 'सीखना' भी कहते हैं। प्रयास एवं त्रुटि द्वारा सीखने में वे अनुक्रियाएँ जो सफल प्रतीत होती हैं उन्हें सीखने वाला दोहराता है और जो असफल तथा बाधा उत्पन्न करने वाली होती है, उन्हें त्याग देता है।

फ्रायड का मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत
(Freud's Psycho-analatical Theory)

फ्रायड ने मन की तीन दशायें बताई हैं :

(1) चेतनः चेतन का सम्बन्ध वर्तमान से होता है। यह वह भाग है जो तत्कालीन ज्ञान से सम्बन्धित रहता है।

(2) अचेतनः फ्रायड के अनुसार मन का सबसे बड़ा भाग अचेतन होता है जिसमें व्यक्ति की दमित इच्छायें विद्यमान रहती है।

(3) अर्द्ध चेतन : जीभ का लडखड़ा जाना, परिचित नामों को भूल जाना आदि क्रियायें अर्द्ध–चेतन में आती हैं।

व्यक्तित्व संरचना की दृष्टि से फ्रायड ने तीन स्थितियों को महत्व दिया है :

(i) इद (Id) : यह इच्छाओं की जननी है। इसे उचित अनुचित का कुछ ज्ञान नहीं होता क्योंकि यह आनन्द सिद्धांत हो मानता है।

(ii) अहं (Ego) : अहं को वास्तविक सिद्धांत कहते हैं। यह हमारे व्यवहार पर नियंत्रण करता है। साथ ही हमारी इच्छाओं तथा वास्तविकताओं के बीच संतुलन बनाये रखता है।

(iii) परम अहं (Super-Ego) : इसका विकास सबसे देर में होता है तथा इसे आदर्शवादी या नैतिकता का सिद्धांत कहते हैं। इस के आधार पर व्यक्ति के अंदर पछतावे की भावना आती है।

फ्रायड के सिद्धांत के कुछ अन्य मुख्य प्रत्यय दस प्रकार हैं :

लिबिडोः फ्रायड काम शक्ति को लिबिडो कहते हैं। व्यक्ति के वे सभी कार्य जिनसे उसे सुख मिलता है, लिबिडो से सम्बन्धित होते हैं।

शैश्व–कामुकता : फ्रायड के अनुसार छोटे बच्चों में भी काम–वासना होती है।

स्व–मोह : कभी–कभी बच्चा अपने ही रुप पर मोहित होकर अपने आप से ही प्रेम करने लगता है। फ्रायड ने इसे स्व–मोह या नार्सिजिज्म कहा है।

मूल–प्रवृत्तियाँ : फ्रायड के अनुसार व्यक्ति में दो प्रकार की मूल प्रवृत्तियाँ होती हैं : जीवन मूल प्रवृत्ति व मृत्युमूल प्रवृत्ति।

अधिगम वक्र
(Learning Curves)

व्यक्ति जब किसी कार्य को सीखना आरम्भ करता है तो वह शींघ्र ही उसमें प्रवीण नहीं हो जाता है। सीखने की गति कभी तीव्र हो जाती है कभी मंद हो जाती है और कभी बिल्कुल रुक जाती है।

यदि सीखने की इस गति को ग्राफ पेपर पर अंकित करें तो सीखने की उन्नति या अवनति या दोनों को दर्शाती हुई एक वक्र रेखा बन जाती है। इस वक्र रेखा को अधिगम वक्र कहते हैं।

अधिगम वक्र के प्रकार

सीखने की वक्र रेखाएँ सदैव एक–जैसी नहीं होती है, उनमें सीखने की क्रिया के रुप ओर परिस्थिति के आधार पर भिन्नता पाई जाती है।

1. सरल रेखीय वक्र : सीखने की क्रिया में प्रगति जब एक समान रहती है तो सरल रेखीय वक्र प्राप्त होता है।
2. उन्नतोदर वक्र : इस प्रकार के सीखने में, आरम्भ में सीखने की गति तीव्र होती है किन्तु क्रमशः धीरे–धीरे मंद होती जाती है।
3. नतोदर वक्र इसमें सीखने की गति मंद होती है किन्तु बाद में क्रमशः तीव्र होती जाती है।
4. मिश्रित वक्र : यह उन्नतोदर तथा नतोदर वक्रों का मिश्रित रुप होता है।

अधिगम के पठार
(Plateaus of Learning)

सीखना जब स्थिर हो जाए तो इस अवस्था को सीखने का पठार कहते हैं।

इससे ज्ञात होता है कि इस समय सीखने में न तो उन्नति ही हो रही है और न ही अवनति, वरन् सीखने की प्रगति रुकी हुई है।

रॉस के अनुसार : "सीखने की प्रक्रिया की एक प्रमुख विशेषता पठार है। ये उस अवधि को व्यक्त करते हैं जब सीखने की क्रिया में कोई उन्नति नहीं होती है"

सीखने के पठारों के कारण

1. ज्ञान की सीमा : ज्ञान में पूर्ण कुशलता प्राप्त हो जाती है।
2. उत्साह की सीमा या प्रेरणा की सीमा :
   उदाहरणार्थ : जो बालक कक्षा में, किसी विषय में, अधिकतम अंक प्राप्त कर लेता है तो उसमें उत्साह कम हो जाता है। वह यह सोचने लगता है कि अब अधिक परिश्रम निरर्थक है क्योंकि इससे अधिक अंक नहीं मिल सकते हैं।
3. सीखने की अनुचित विधियों का प्रयोग : सीखने में अनुचित विधि का उपयोग, सीखने की उन्नति को रोक देती है।
4. कार्य की जटिलता : कार्य की जटिलता भी सीखने की क्रिया में रुकावट डालती है।
5. शारीरिक सीमा : प्रत्येक कार्य के लिए प्रत्येक व्यक्ति में अधिकतम कुशलता होती है, जिससे आगे वह नहीं बढ़ सकता है। इसको शारीरिक सीमा कहते हैं।

सीखने के पठारों का निराकरण

- प्रोत्साहित और प्रेरित करना।
- रोचक और उत्तम विधियों का प्रयोग।
- विश्राम देना।
- उपयुक्त वातावरण की व्यवस्था।
- 'सरल से जटिल की ओर' के सिद्धांत को अपनाना।
- सोरेन्सन के अनुसार : "शायद ऐसी कोई भी विधि नहीं है, जिससे पठारों को बिल्कुल समाप्त कर दिया जाए पर उनकी संख्या और अवधि को कम किया जा सकता है।"

अधिगम वक्र का शिक्षा में महत्व

शिक्षक बालक की सामान्य प्रगति को जानने हेतु उपयुक्त शिक्षण विधियों का प्रयोग, सीखने की क्रिया, प्रेरणा, विषय सामग्री का मनोवैज्ञानिक ढंग से संगठन का उपयोग कर सकता है।

अधिगम उन्नयन हेतु विद्यालय द्वारा किये जाने वाले प्रयास

- पाठयवस्तु का बालक के अनुभवों की सीमा के अनुसार होना।
- बालक के व्यक्तित्व का आदर तथा अहमवृत्ति को आकृष्ट करना।
- छात्रों की रुचि पाठ की ओर आकर्षित करना।
- छात्रों के सीखने हेतु प्रेरणा प्रदान करना।
- सहायक सामग्री का उपयोग करना।
- पाठ को जीवन से संबंधित करना।

अधिगम स्थानांतरण

- अधिगम के स्थानांतरण से अभिप्राय किसी सीखी हुई क्रिया का विभिन्न परिस्थितियों में उपयोग करने से है। अधिगम स्थानांतरण में सीखना अथवा प्रशिक्षण दोनों निहित है।
- सोरेन्सन के अनुसार : "स्थानांतरण एक परिस्थिति में अर्जित ज्ञान, प्रशिक्षण और आदतों का दूसरी परिस्थिति में, स्थानांतरित किए जाने का उल्लेख करता है।"
- यलोन व वीनस्टीन के अनुसार : "अधिगम के स्थानांतरण से अभिप्राय है : एक कार्य की निष्पत्ति दूसरी निष्पत्ति से प्रभावित होती है।"

  इस प्रकार अधिगम का स्थानांतरण एक सौद्देश्य क्रिया है। इससे समायोजन में सहायता मिलती है अंतर्दृष्टि का विकास होता है।

अधिगम स्थानांतरण के प्रकार

- अधिगम स्थानांतरण दो प्रकार का होता है :

1. सकारात्मक स्थानांतरण :
   पूर्व ज्ञान का प्रयोग नई क्रिया को सीखने में सहायता देता है तो इसे सकारात्मक स्थानांतरण कहते हैं।
2. नकारात्मक स्थानांतरण :
   यदि पूर्व ज्ञान नई क्रिया के सीखने में कठिनाई उपस्थित करता है, तो इसे नकारात्मक स्थानांतरण कहते हैं।

स्थानांतरण के सिद्धांत

1. मानसिक शक्तियों का सिद्धांत :
   यह अधिगम स्थानांतरण का प्राचीन सिद्धांत है। इसके अनुसार तर्क, ध्यान, स्मृति, कल्पना आदि एक–दूसरे से अनाश्रित है, अतः उनको स्वतंत्र रुप से प्रशिक्षित करके सबल बनाया जा सकता है।
2. औपचारिक मानसिक प्रशिक्षण का सिद्धांत :
   स्थानांतरण के तथ्यों की मानसिक शक्तियों की सामान्य व चतुर्मुखी उन्नति के आधार पर व्याख्या नहीं की जा सकती है।
3. समान तत्वों का सिद्धांत :
   इस सिद्धांत के प्रतिपादक थार्नडाइक है।
   इस सिद्धांत के अनुसार अन्योन्य आश्रित विषय एक–दूसरे के अध्ययन में सहायता देते हैं। जैसे – गणित विषय का ज्ञान, विज्ञान विषय में सहायक है।
4. सामान्यीकरण का सिद्धांत :
   इस सिद्धांत के प्रतिपादक सी.एस. जूड है।
   इनके अनुसार छात्र विज्ञान के किसी विषय के सामान्य सिद्धांत को भली प्रकार समझ जाता है, तब उसमें अपने प्रशिक्षण की दूसरी स्थितियों में स्थानांतरित करने की क्षमता उत्पन्न हो जाती है।
5. सामान्य व विशिष्ट तत्वों का सिद्धांत :
   इस सिद्धांत के प्रतिपादक स्पीयरमैन हैं।
   इनके अनुसार मनुष्य में दो प्रकार की बुद्धि होती है : सामान्य व विशिष्ट। स्थानांतरण केवल सामान्य योग्यता का होता है।

अधिगम स्थानांतरण के लिए अनुकूल स्थितियाँ

1. समान अध्ययन विधियाँ : जिन विषयों की अध्ययन विधियाँ समान होती हैं उनमें अल्प परन्तु वास्तविक स्थानांतरण होता है।
2. समान विषय वस्तु : यदि दो विषय पूर्ण रुप से समान हो तो स्थानांतरण अधिकतम होता है।
3. विषयों के स्थानांतरण का गुण : विज्ञान और गणित विषयों में स्थानांतरण का गुण अधिक होता है जबकि इतिहास और साहित्य में कम होता है।
4. सामान्य बुद्धि : श्रेष्ठ छात्रों में निम्नतम सामान्य बुद्धि के छात्रों की अपेक्षा स्थानांतरण करने की योग्यता कई गुना अधिक होती है।
5. सीखने की इच्छा : छात्र में विषय को सीखने के प्रति रुचि होने पर स्थानान्तरण शीघ्र होता है।

अधिगम स्थानांतरण में शिक्षक की भूमिका

फ्रैंडसन के अनुसार : "स्थानांतरण, अधिगम की कुशलता पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालने वाला व्यापक कारक है।"

स्थानांतरण को प्रभावित करने वाले कारक

1. सामान्यीकरण
   शिक्षक को विषय के सामान्य सिद्धांत निकालने की विधियाँ बनानी चाहिए।
2. अर्जित ज्ञान
   शिक्षक को विभिन्न परिस्थितियों में अपने ज्ञान का प्रयोग अधिक से अधिक करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।
3. विषयों की समानता

शिक्षक को अपने शिक्षण के समय पाठ्य विषय में आने वाले तथ्यों को दूसरे विषय के तथ्यों में समानता बतानी चाहिए।

4. अध्ययन की विधियाँ

शिक्षक को बालकों के अध्ययन की सर्वोत्तम विधियाँ अपनानी चाहिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

☞ टॉलमैन के अधिगम के प्रकार अभिनिर्वेश का सामजस्य है :
(a) फ्रायड की अभिप्रेरणा के मनोविश्लेषण सिद्धांत से
(b) स्कीनर के अनुबंधित पुनर्बलकों के सिद्धांत से
(c) गुथरी के उद्दीपक अनुक्रिया सान्निध्य सिद्धांत से
(d) चिन्ह गेस्टाल्ट प्रत्याशाएँ (a)

☞ टॉलमैन ने किस अधिगम के प्रकार को गुथरी की उद्दीपक अनुक्रिया संयोजन सानिध्य द्वारा सीखने के लिए उपयुक्त माना है?
(a) चालन भेद (b) गामक प्रतिरुप
(c) क्षेत्र संज्ञान रीतियाँ (d) क्षेत्र प्रत्याशाएँ (b)

☞ अधिगम स्थानांतरण की दशाएँ किस पर निर्भर नहीं करती है?
(a) सीखने वाले की इच्छा पर
(b) सीखने वाले की शैक्षिक योग्यता पर
(c) समान विषय वस्तु पर
(d) सीखने वाले की शैक्षिक योग्यता पर (d)

☞ व्यवहार का गढ़ना (Shaping) अधिगम के किस नियम की उपलब्ध है?
(a) थार्नडाइक के तत्परता के नियम की
(b) स्कीनर के सक्रिय अनुबंधन के नियम की
(c) पावलोव के पुरातन अनुबंधन के नियम की
(d) गेस्टाल्टवाद के अधिगम नियम की (b)

☞ विशिष्ट अधिगम स्थानांतरण सामान्य अधिगम स्थानांतरण की तुलना में अधिक :
(a) सर्वमान्य है (b) कठिन
(c) सरल है (d) अनावश्यक (a)

☞ सीखने के लिए सीखने का सिद्धांत के प्रतिवादक है :
(a) थार्नडाइक (b) गेस्टाल्ट
(c) कोहलर (d) हार्लो (c)

☞ किस अधिगम स्थानांतरण के सिद्धांत को मानसिक अनुशासन का सिद्धांत भी कहा जाता है?
(a) समान तत्वों का सिद्धांत
(b) सामान्यीकरण का सिद्धांत
(c) औपचारिक अनुशासन का सिद्धांत
(d) पक्षांतरण सिद्धांत (c)

☞ विद्यार्थियों को जो भी नियम एवं सिद्धांत पढ़ाए जाएं उन्हें उनका अलग–अलग क्षेत्र में कैसे उपयोग किया जा सकता है, यह बताना किस अधिगम स्थानांतरण के प्रत्यय से सम्बन्धित है?
(a) सीखने के लिए सीखने का सिद्धांत
(b) पक्षांतरण सिद्धांत
(c) सामान्यीकरण का सिद्धांत
(d) औपचारिक अनुशासन का सिद्धांत (c)

☞ थार्नडाइक ने किन दो प्रत्ययों के मध्य साहचर्य को अधिगम का आधार का आधार माना?
(a) संवेदी प्रभाव एवं क्रिया के मनोवेग
(b) प्रेरणीक प्रभाव एवं सहायक क्रिया के मनोवेग
(c) क्रिया का क्रियापरक मनोवेग
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं (a)

☞ बालक उसी समय सीखेगा जब वह सीखने हेतु तत्पर हो, अर्थात् उसकी परिपक्वता इतनी होगी कि, वह उस कौशल अथवा संकल्पना को सीखे, यह प्रत्यय थार्नडाइक के किस नियम से सम्बन्धित है?
(a) तत्परता का नियम (b) अभ्यास का नियम
(c) प्रभाव का नियम (d) बहु अनुक्रिया का नियम
(a)

☞ अधिगम के क्रम में कौन–सी क्रिया बालक पहले करेगा?
(a) आत्मसात (b) व्यवस्थापन
(c) संशोधन (d) मूल्यांकन (a)

☞ सीखने को प्रभावित करता है, कक्षा का :
(a) आर्थिक वातावरण (b) प्रशासनिक वातावरण
(c) मनोवैज्ञानिक वातावरण (d) सामाजिक वातावरण
(c)

☞ गेस्टाल्टवादी थे :
(a) चीनी (b) फ्रांसीसी
(c) जर्मन (d) रुसी (c)

☞ अधिगम को प्रभावित करने वाली दशाओं में से कौन–सी नहीं है?
(a) परिपक्वता (b) उचित वातावरण
(c) प्रेरणा (d) खेलकूद (d)

☞ कौन–सा सिद्धांत 'प्रयत्न और भूल द्वारा सीखने' के सिद्धांत का रुप नहीं है?
(a) उद्दीपन अनुक्रिया सिद्धांत
(b) सम्बन्धवाद का सिद्धांत
(c) प्रेरणास्पद अनुबंध का सिद्धांत
(d) अधिगम का बन्ध सिद्धांत (c)

☞ अंतर्दृष्टि पर प्रभाव डालने वाला तत्व है :
(a) बुद्धि (b) प्रयत्न एवं त्रुटि
(c) अनुभव (d) उपर्युक्त सभी (d)

☞ कक्षा–कक्ष अधिगम के लिए कौन–सी विधि का प्रयोग किया जा सकता है?
(a) प्रयत्न एवं त्रुटि विधि (b) वाद–विवाद विधि
(c) अवलोकन विधि (d) उपर्युक्त सभी (d)

महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक कृतियाँ

	पुस्तक	रचनाकार
☞	टाप्स ऑफ मैन	जुग
☞	एन इन्टॅाडक्शन टू सोशियल साइकॉलोजी	विलियम
☞	साइकोलॉजी फ्रॉम द स्टैंड प्वाईंट ऑफ बिहेवियरिस्ट	वाटरसन
☞	ए डिकशनरी ऑफ साइकोलॉजी	जैम्स ड्रेवर
☞	आउटलाइन साइकोलॉजी	मैक्डूगल
☞	चाइल्ड डेवलेपमेंट	स्पिंज
☞	एजूकेशनल साइकोलॉजी	कैली
☞	फाउंडेशन ऑफ साइकोलॉजी	बोरिंग
☞	इन्टरोडक्ट्री लेक्चर्स ऑन–साइको–एनालिसिस	फ्रायड (Freud)
☞	जनरल साइकोलॉजी	गैरेट
☞	एडोलेसेन्स	स्टैनली हॉल
☞	Social Living	लैंडिस एंड लैंडिस
☞	Theories of Learning	हिलगार्ड

शिक्षण (Teaching)

- शिक्षण शब्द शिक्ष धातु से बना है, जिसका अर्थ ज्ञान देना या सिखाना होता है।
- शिक्षा प्राप्त करना मानव जीवन का उद्देश्य है और शिक्षक इस उद्देश्य का एक साधन है।
- शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास है।
- शिक्षण शिक्षा के विभिन्न उद्देश्यों को प्राप्त करने का साधन है।
- शिक्षा एक कला है।
- शिक्षण एक विज्ञान है।
- शिक्षण एक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान है।
- शिक्षण शिक्षक का स्व–मूल्यांकन है।
- शिक्षण–शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच की कड़ी है।

शिक्षण सूत्र

शिक्षण के अनुभवी लोगों ने शिक्षण विधि के संबंध में सूत्र में कुछ सामान्य नियम बनाये हैं।

ये नियम शिक्षण के मूलभूत सिद्धांतों तथा शिक्षा–मनोविज्ञान पर आधारित है। ये सूत्र निम्नानुसार है :

1. सरल से कठिन की ओर।
2. सरल से जटिल की ओर।
3. स्थूल से सूक्ष्म की ओर।
4. प्रत्यक्ष से अप्रत्यक्ष की ओर।
5. अनिश्चित से निश्चित की ओर।
6. पूर्ण से अंश की ओर।
7. मनोवैज्ञानिक क्रमबद्धता।
8. विश्लेषण से संश्लेषण की ओर।
9. स्वाध्याय को प्रोत्साहन।
10. अनुभव से तर्क की ओर।
11. प्रकृति का अनुकरण।

शिक्षण के सामान्य सिद्धांत

शिक्षण एक कला है जिसे सीखने के लिए अनेक नियमों, विधियों तथा सिद्धांतों का प्रयोग किया जाता है। इनमें से कुछ निम्नानुसार है :

1. रोचकता का सिद्धांत : बालक जिस कार्य में अधिक रुचि लेते हैं, उसे शीघ्र सीख लेते हैं।
2. जीवन से संबंध जोड़ने का सिद्धांत : बालक उन बातों को शीघ्रतापूर्वक सीखते हैं जिनका संबंध उनके जीवन से होता है।
3. क्रियाशीलता का सिद्धांत : फ्रॉबेल ने इस सिद्धांत का प्रतिपादन किया। यदि बालक को क्रिया द्वारा सीखाने पर वह उसे शीध्र आत्मसात् कर लेता है।
4. उत्प्रेरणा का सिद्धांत : बालक को पढ़ने के लिए उत्प्रेरित किया जाये तो वे आशा से अधिक सीख लेते हैं।
5. वैयक्तिक विभिन्नता का सिद्धांत : मंदबुद्धि बालक देर से सीखते हैं जबकि प्रखबुद्धि बालक उसी बात को पलक झपकते ही सीख लेते हैं। सभी बालकों की समस्याएँ भी समान नहीं होती।
6. चयन का सिद्धांत : व्यक्तिगत भेदों की पूर्ण जानकारी के पश्चात् शिक्षक समझ लेता है कि बालकों को कितना अंश पढ़ाया जाये कि वे उसे भलीभाँति ग्रहण कर सके।
7. स्वाभाविक क्रम के अनुसार का सिद्धांत : यदि पढ़ाते समय स्वाभाविक अनुसरण के सिद्धांत का प्रयोग किया जाये तो बालक पाठ को शीघ्रता से समझ लेता है।
8. विश्लेषण और संश्लेषण का सिद्धांत : यदि प्रसंगों को टुकड़ों में पढ़ाया जाये तो बालक उन्हें जल्दी ही हृदयगम कर लेते हैं।
8. अभ्सास का सिद्धांत : प्राप्त ज्ञान को दुबारा पढ़ा या दुहराया न जाये तो बालक उन्हें शीघ्र भूल जाते हैं।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

- प्राथमिक स्तर पर निर्देशन का कार्य मुख्यता संपन्न किया जाता है :
  (a) परामर्शदाता द्वारा (b) शिक्षक एवं परामर्शदाता द्वारा
  (c) शिक्षक द्वारा (d) इनमें से कोई नहीं (c)
- परामर्श से अभिप्राय है :
  (a) सलाह के आधार पर स्वयं अपने उत्तरदायित्व को निभाना
  (b) सलाह के आधार पर उत्तरदायित्व नहीं निभाना
  (c) स्वयं स्वतंत्रपूर्वक निश्चय लें
  (d) इनमें से कोई नहीं (a)
- प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के लिए उन्नयन का उपयुक्त अभिकरण है :
  (a) राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान
  (b) जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाइट)
  (c) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
  (d) इनमें से कोई नहीं (b)
- शैक्षिक–पत्र–पत्रिकाओं के पठन से अध्यापक :
  (a) अपने शिक्षण में सुधार कर सकता है
  (b) अपने ज्ञान में अभिवृद्धि कर सकता है
  (c) नवाचारों से अवगत होता है
  (d) इनमें से कोई नहीं (0)
- बालक को आत्म अभिव्यक्ति का अवसर देना चाहिए :
  (a) खेलों के आयोजन से
  (b) पाठ्य सहगामी क्रियाओं से
  (c) मनोरंजन के आयोजन से
  (d) सहयोग से (b)
- शोधन एक प्रकार का है :
  (a) मार्गातीकरण (b) दमन
  (c) विरोध (d) निरोध (a)
- बिनेटिका योजना विधि है :
  (a) सामूहिक शिक्षण की (b) व्यक्तिगत शिक्षण की
  (c) सामाजिक दृष्टिकोण की (d) आंतरिक संरचना की
  (b)
- कोई विद्यार्थी कुसंगत में पड़कर बिगड़ रहा है एक अध्यापक के रुप में आपका कर्त्तव्य होगाः
  (a) उसके माता–पिता से मिलेंगे
  (b) उसकी उपेक्षा करेंगे
  (c) उसे विश्वास में लेकर समझायेंगे
  (d) उसे बुलाकर डांटेंगे (c)
- विद्यार्थी में तर्कशक्ति के विकास के लिए आप क्या करेंगे?
  (a) एक छात्र से निष्कर्ष प्रस्तुत करवाना
  (b) एक–दो छात्रों से प्रतिवेदन तैयार करवाना
  (c) विषय पर किसी बालक के विचार प्रस्तुत करवाना
  (d) समूह चर्चा का आयोजन करवाना (d)

विकास (Development)

- विकास का अर्थ परिवर्तन है।
- मुनरो : "विकास परिवर्तन श्रृंखला की वह अवस्था है जिसमें बच्चा भ्रूणावस्था से प्रौढ़ावस्था तक गुजरता है।"
- सी.ई. स्किनर : "विकास, जीव और उसके वातावरण की अन्तःक्रिया का प्रतिफल है।"
- जेम्स ड्रेवर : 'विकास वह दशा है जो प्रगतिशील परिवर्तन के रुप में प्राणी में सतत् रुप से व्यक्त होती है। वह प्रगतिशील परिवर्तन किसी भी प्राणी में भ्रूणावस्था से लेकर प्रौढ़ावस्था तक होता है। यह विकास तंत्र को सामान्य रुप से नियंत्रित करता है। यह प्रगति का मानदंड है जो किसी निश्चित लक्ष्य की ओर निर्देशित होता है।'

विकास की अवस्थाएँ : डॉ. अरनेस्ट जोंस के अनुसार

1.	शैशवावस्था	Infianeey	जन्म से 5 या 6 वर्ष तक
2.	बाल्यावस्था	Childhood	5 या 6 वर्ष से 12 वर्ष तक
3.	किशोरावस्था	Adolescence	12 वर्ष से 18 वर्ष तक
4.	प्रौढ़ावस्था	Adulthood	18 वर्ष से बाद

कोल के अनुसार विकास की अवस्थाओं का वर्गीकरण

1.	शैशवास्था	Infancy	जन्म से 2 वर्ष तक
2.	प्रारंभिक बाल्यावस्था	Early Childhood	2 से 5 वर्ष
3.	मध्य बाल्यावस्था	Middle childhood	बालक 6 से 12 बालिका 6 से 10
4.	पूर्व किशोरावस्था	Pre adolescence	बालक 13 से 14, बालिका 11 से 12
5.	प्रारंभिक किशोरावस्था	Early adolescence	बालक 15 से 16, बालिका 12 से 14
6.	मध्य किशोरावस्था	Middle adolescence	बालक 17 से 18, बालिका 15 से 17
7.	उत्तर किशोरावस्था	Late adolescence	बालक 19 से 20, बालिका 18 से 20
8.	प्रारंभिक प्रौढ़ावस्था	Early adulthood	21 से 34 वर्ष
9.	मध्य प्रौढ़ावस्था	Middle adulthood	35 से 49 वर्ष
10.	उत्तर प्रौढ़ावस्था	Late adulthood	50 से 64 वर्ष
11.	प्रारंभिक वृद्धावस्था	Early Adulthood	65 से 74 वर्ष
12.	वृद्धावस्था	Sensescence	75 वर्ष से ऊपर।

शिक्षार्थी : अभिवृद्धि एवं विकास

(The Learner : Growth and Development)

- ☞ अध्यापक को बालक की अभिवृद्धि एवं विकास तथा उसकी विशेषताओं का ज्ञान होना आवश्यक है तभी वह शिक्षा की योजना का क्रियान्वयन सही तरीके से कर सकेगा।
- ☞ अभिवृद्धि शब्द का प्रयोग सामान्यतः शरीर और उसके अंगों के भार तथा आकार में वृद्धि के लिए किया जाता है। इस वृद्धि को नापा और तौला जा सकता है। विकास का सम्बन्ध अभिवृद्धि से अवश्य होता है पर यह शरीर के अंगों में होने वाले परिवर्तनों को विशेष रुप से व्यक्त करता है।
- ☞ विकास शारीरिक अवयवों की कार्य–कुशलता की ओर संकेत करता है।
- ☞ विकास एक बहुमुखी प्रक्रिया है। इसमें शारीरिक विकास के अतिरिक्त सामाजिक, मानसिक तथा संवेगात्मक अवस्था में होने वाले परिवर्तनों को भी शामिल किया जाता है।
- ☞ अभिवृद्धि को मापा जा सकता है किन्तु विकास व्यक्ति की क्रियाओं में निरंतर होने वाले परिवर्तनों में परिलक्षित होता है।
- ☞ हरलॉक के अनुसार – "विकास, अभिवृद्धि तक ही सीमित नहीं है। इसके बजाय, इसमें परिपक्वावस्था के लक्ष्य की ओर परिवर्तनों का प्रगतिशील क्रम निहित रहता है। विकास के परिणामस्वरुप व्यक्ति में नवीन विशेषताएँ और नवीन योग्यताएँ प्रकट होती है"।

कॉलसनिक के अनुसार विकास की अवस्थाएँ		ई.बी. हरलॉक के अनुसार विकास की अवस्थाएँ	
1.	शैशवास्थाः जन्म से 3-4 सप्ताह तक।	1.	गर्भाधान कालः जन्म से पूर्व की अवस्था।
2.	प्रारंभिक शैशवस्था : 1 से 1 वर्ष 4 माह तक।	2.	शैशव अवस्थाः जन्म से 2 सप्ताह तक।
3.	उत्तर शैशवावस्था : 1 वर्ष से $2\frac{1}{2}$ वर्ष तक।	3.	शिशु कालः 2. सप्ताह से दो वर्ष तक।
4.	पूर्व बाल्यावस्था : $2\frac{1}{2}$ वर्ष से 5 वर्ष तक।	4.	बाल्यावस्था : 2 सप्ताह से दो वर्ष तक। (पूर्व बाल्यावस्था : 6 वर्ष तक, उत्तर बाल्यावस्था : 7 से 12 वर्ष तक)
5.	मध्य बाल्यावस्था : 5 से 9 वर्ष तक।	5.	किशोर अवस्थाः 12 से 21 वर्ष तक। (प्रारंभिक किशोरावस्था : बालक 12 से 15 वर्ष, बालिकाएँ 11 से 14 वर्ष

अभिवृद्धि और विकास में अंतर

क्र	अभिवृद्धि	क्र	विकास
1.	अभिवृद्धि का स्वरुप बाह्य होता है।	1.	विकास आंतरिक होता है।
2.	अभिवृद्धि का प्रयोग संकुचित अर्थ में होता है।	2.	विकास शब्द प्रयोग व्यापक अर्थ में होता है।
3.	अभिवृद्धि कुछ समय के बाद रुक जाती है।	3.	विकास जीवन–पर्यन्त चलता रहता है।
4.	अभिवृद्धि की कोई निश्चित दिशा नहीं होती है।	4.	विकास की एक निश्चित दिशा होती है।
5.	अभिवृद्धि का कोई निश्चित क्रम नहीं होता है।	5.	विकास में एक निश्चित क्रम होता है।
6.	अभिवृद्धि का कोई लक्ष्य नहीं होता है।	6.	विकास का कोई न कोई लक्ष्य अवश्य होता है।
7.	अभिवृद्धि को सीधे मापा जा सकता है। उदाहरणार्थ : ऊँचाई और भार को सीधे मापा जा सकता है।	7.	विकास का सीधा मापन सम्भव नहीं है। बुद्धि को सीधे नहीं मापा जा सकता है।

विकास में होने वाले परिवर्तनों के प्रकार

(1) आकार में परिवर्तन : यह परिवर्तन शारीरिक एवं मानसिक, दोनों रुपों में प्रत्यक्ष रुप से दिखाई देता है।

मानसिक विकास के अंतर्गत शब्द–भंडार, तर्क, स्मरण, कल्पना शक्ति, चिन्तन शक्ति में प्रतिवर्ष विकास देखने को मिलता है। इस मानसिक विकास को बुद्धि–परीक्षण द्वारा मापा जा सकता है।

(2) अनुपात में परिवर्तन : बालक के सभी शारीरिक अंग एक साथ समान रुप से नहीं बढ़ते हैं।

प्रारम्भिक बाल्यावस्था में बालकों की कल्पना कम यथार्थपूर्ण होती है, किन्तु उम्र के साथ–साथ यह यथार्थवादी होता जाता है।

(3) पुरानी आकृतियों का लोपः बालक जैसे–जैसे बढ़ता है, उसके सीने में स्थित थाइमस ग्रंथि के पास स्थित पीनियल ग्रंथि धीरे–धीरे लुप्त हो जाती है।

(4) नवीन आकृतियों की प्राप्तिः परिपक्वता तथा अधिगम प्रक्रिया के फलस्वरुप होती है।

विकास के कारण

बालक के शारीरिक और मानसिक विकास के निम्नलिखित दो प्रमुख कारण बताये गये हैं :

(1) परिपक्वता : व्यक्ति के आंतरिक अंगों का परिपक्व होना तथा वंश परंपरा से प्राप्त गुणों का सम्पूर्ण विकास होना ही परिपक्वता है। परिपक्वता की प्रक्रिया बालक को जन्म से लेकर तक तब प्रभावित करती है जब तक कि उसकी मांसपेशियों एवं स्नायुतंत्र में पूर्ण रुप से दृढ़ परिपक्वता नहीं हो जाती है।

(2) अधिगम या सीखना : बालक वातावरण के साथ सामजस्य स्थापित करने के लिए उसके प्रति प्रतिक्रिया करता है। इस प्रतिक्रिया के फलस्वरुप बालक के शारीरिक एवं मानसिक क्रियाओं में जो परिवर्तन होता है यही अधिगम या सीखना है।

परिपक्वता का सम्बन्ध वंशानुक्रम से क्रम से तथा अधिगम का सम्बन्ध वातावरण से है।

☞ परिपक्वता व्यक्ति के आंतरिक विकास की प्रक्रिया है।

☞ वंशानुक्रम तथा वातावरण दोनों को विकास का आधार कहा जाता है।

अभिवृद्धि व विकास के सिद्धांत

(Principles of Growth of Development)

बालक का विकास कुछ सिद्धांतों के अनुसार होता है। अभिवृद्धि एवं विकास के प्रमुख सिद्धांत :

1. निरंतर विकास का सिद्धांत (Principle of Continuous Growth of Development) : मानव विकास एक सतत प्रक्रिया है। विकास की यह गति कभी तीव्र और कभी मंद होती है।

बालक निरंतर अधिगम प्रक्रिया के द्वारा धीरे–धीरे ही सीखता है।

2. विभिन्न गति का सिद्धांत (Principle of Different Rate of Growth) : विभिन्न व्यक्तियों के विकास की गति भिन्न–भिन्न होती है।

लगभग 6 वर्ष की आयु में बालक के मस्तिष्क में पूर्ण वृद्धि हो जाती है।

व्यक्तिगत शिक्षण की व्यवस्था पर जोर दिया जाता है।

3. विकास की दिशा का सिद्धांत (Principle of Development Direction) : शिशु के शरीर का विकास 'एक निश्चित दिशा' में होता है। यह विकास सदैव सिर से पैर की दिशा में होता है अर्थात् पहले सिर का विकास होता है, फिर धड़ का और बाद में हाथ–पैरों का विकास होता है।

इस सिद्धांत को ध्यान में रखते हुए शिशुओं के शिक्षण में लिखने की अपेक्षा याद करने पर विशेष बल दिया जाता है।

4. विकास क्रम का सिद्धांत (Principle of Development Sequence) : इस सिद्धांत के अनुसार बालक का गामक (motor) या गति सम्बन्धी और भाषा सम्बन्धी विकास एक क्रम में होता है।

शिक्षक को चाहिए कि वह विषयवस्तु को क्रमानुसार प्रस्तुत करे। पहले सरल और फिर कठिन विषय–वस्तु बालकों के सामने रखें।

5. एकीकरण का सिद्धांत (Principle of Integration) : इस सिद्धांत के अनुसार पहले बालक सम्पूर्ण अंग को, फिर अंग के भागों को चलाने की क्रिया करता है। इसके बाद वह उन भागों में एकीकरण करने प्रयास करता है।

इस सिद्धांत के अनुसार विषय–वस्तु का पहले विश्लेषण और उसके बाद संश्लेषण की क्रिया द्वारा बालकों के सामने प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

6. परस्पर सम्बन्ध का सिद्धांत (Principle of Interrelation): बालक के शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक आदि पहुलओं के विकास में परस्पर सम्बन्ध होता है।

शारीरिक विकास के साथ–साथ, बालक की रुचियों, ध्यान से केन्द्रीकरण और व्यवहार में भी परिवर्तन होते हैं। इन परिवर्तनों के साथ ही उसमें गाम (motor) और भाषा–विकास सम्बन्धी परिवर्तन भी होते हैं।

7. समान प्रतिमान का सिद्धांत (Principle of Uniform Pattern):
हरलॉक के अनुसार : "प्रत्येक जाति, चाहे वह पशु हो या मानव, अपनी जाति के अनुरुप विकास के प्रतिमान का अनुसरण करती है।"

8. सामान्य से विशिष्ट प्रतिक्रियाओं का सिद्धांत (Principle of General To Specific Response) :

इस सिद्धांत को ध्यान में रखते हुए ही 'सामान्य से विशिष्ट की ओर' के सिद्धांत को शिक्षण में अपनाया जाता है। इसके अनुसार बालक को पहले विषय से सम्बन्धित सामान्य बातों का ज्ञान दिया जाता है, तत्पश्चात् उसे सम्बन्धित विशिष्ट बातें बताई जाती है। इस प्रकार वह शीघ्र सीख लेते है।

9. वंशानुक्रम व वातावरण की अंतःक्रिया का सिद्धांत (Principle of Interaction of Heredity and Environment) बालक का विकास वशांनुक्रम और वातावरण की अंतःक्रिया के कारण होता है। माता–पिता और अध्यापक वंशानुक्रम को तो नियंत्रित नहीं कर सकते, लेकिन वे बालक को ऐसा वातावरण अवश्य प्रदान कर सकते हैं जिसमें उसका सही दिशा में विकास हो सके।

☞ प्रमि तीन वर्षो में बालक के विकास की प्रक्रिया तीव्र रहती है, उसके बाद मंद हो जाती है।

☞ सृजनात्मक कल्पना का विकास बाल्यावस्था में तीव्र गति से आरम्भ होता है और किशोरावस्था में पूर्ण होता है। सामान्य बुद्धि पूर्ण रुप से 15 वर्ष की अवस्था में विकसित हो पाती है।

☞ विभिन्न गति से सिद्धांतानुसार पाठ्यक्रम में विषय वस्तु का आयोजन किया जाता है।

☞ विकास क्रम सिद्धांतानुसार छोटे बालकों को छोटे–छोटे वाक्यों द्वारा शिक्षण दिया जाये।

☞ शिक्षा बालक की रुचि के अनुसार होनी चाहिए।

विकास को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक

(Main Factors Influencing Development)

1. बुद्धि : मंद बुद्धि वाले बालक का विकास मंद गति से तथा कुशाग्र बुद्धि वाले बालक का विकास तीव्र गति से होता है।
2. अंतःस्त्रावी ग्रंथियाँ : अंतःस्त्रावी ग्रंथियाँ भी बालक के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
3. यौन–भिन्नताएँ : लड़कियों का शारीरिक विकास लड़कों की अपेक्षा शीघ्र होता है।
4. शुद्ध वातावरण : स्वच्छ वातावरण में रहने वाले बालकों का विकास, गंदे वातावरण में रहने वाले बालकों की अपेक्षा पहले और अच्छी तरह से होता है।

5. पोषण : सुतुलित भोजन के अभाव में विकास मंद गति से होता है।
6. रोग तथा चोट : शारीरिक और मानसिक चोट बालक के विकास को रोक देती है या उचित दिशा में विकास नहीं होने देती है।
7. संस्कृति : बालक के विकास पर भौतिक और अभौतिक दोनों प्रकार की संस्कृतियों का प्रभाव पड़ता है।
8. प्रजाति : भूमध्यसागरीय देशों के बालकों का शारीरिक विकास उत्तरी यूरोप के बालकों की अपेक्षा शीघ्र होता है। इसी प्रकार नीग्रो और भारतीय बच्चों का विकास श्वेत प्रजति के बच्चों से मंद गति से होता है।
9. परिवार में स्थान : पहले बच्चे की अपेक्षा दूसरे, तीसरे या चौथे बच्चे का विकास शीघ्र होता है।

शैशवावस्था (Infancy)	
☞ अवधि :	इसका काल जन्म से 5 वर्ष तक माना जाता है।
☞ विकास की अवस्था :	शैशवावस्था को सबसे अधिक महत्वपूर्ण
☞ फ्रायड :	इनके अनुसार शिशु में काम, प्रवृत्ति बहुत प्रबल होती है।
☞ मूल प्रवृत्ति :	शिशु के अधिकांश व्यवहारों का आधार।
☞ शिक्षण व्यवस्था :	शैशवास्था में सचित्र पुस्तकों, कहानियों व खेल का विशेष स्थान होना चाहिए।

☞ फ्रायड : "मनुष्य को जो कुछ बनना होता है, प्रारम्भ के चार–पांच वर्षो में ही बन जाता है"।

☞ गुडएनफ : 'व्यक्ति का जितना भी मानसिक विकास होता है, उसका आधा तीन वर्ष की आयु तक हो जाता है।'

☞ क्रो एवं क्रो के अनुसार : "शैशवावस्था, औसतन जन्म से पांच या छः वर्ष तक चलती है, जिसमें संवेदनात्मक मार्ग कार्य करने लगते हैं तथा बच्चा रेंगता, चलना और बोलना सीखता है।"

बाल्यावस्था (Childhood)		
☞	अवधि	इसका काल लगभग 6 से 12 वर्ष के बीच की आयु का माना जाता है।
☞	संचय काल :	6 से 9 वर्ष तक के समय को कहा जाता है।
☞	परिपाक काल :	10 से 12 वर्ष के समय को कहा जाता है।
☞	फ्रायड :	बालक का निर्माणकारी काल माना गया है।
☞	किलपैट्रिक :	प्रतिद्वंद्वात्मक समाजीकरण का काल कहा है।
☞	रॉस :	'मिथ्या परिपक्वता' काल माना है।
☞	बाल्यावस्था को शिक्षा शास्त्रियों द्वारा 'प्रारम्भिक विद्यालय की आयु' एवं 'समूह की आयु' कहा गया है।	

☞ स्ट्रैंग के अनुसार : "बालक अपने को अति विशाल संसार में पाता है और उसके बारे में जल्दी से जल्दी जानकारी प्राप्त करना चाहता है।"

☞ रॉस : 'शारीरिक और मानसिक स्थिरता बाल्यावस्था की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है'।

☞ रचनात्मक कार्यो में आनन्द की अनुभूति : इस अवस्था में बालक कोई नया काम करना चाहता है।

☞ सामूहिक प्रवृत्ति की प्रमुखता।

☞ बालक में सहयोग, सद्भावना, आज्ञाकारिता, सहनशीलता आदि सामाजिक व नैतिक गुणों का विकास होता है।

☞ बालक में बहिर्मुखी व्यक्तित्व का विकास होता है। बालक में समाज के साथ समायोजित होंगे को क्षमता विकसित हो जाती है।

☞ बालक अपनी उन भावनाओं का दमन करता है जिसे उसके माता–पिता पसंद नहीं करते।

☞ शिक्षा आनंदपूर्ण वातावरण में दी जानी चाहिए व नैतिकता का पाठ व्यावहारिक होना चाहिए।

☞ बालक में संग्रह करने की प्रवृत्ति विशेष रुप से पाई जाती है।

किशोरावस्था		
☞	पूर्व किशोरावस्था :	12 वर्ष से 16 वर्ष की आयु तक का काल। इस अवस्था को 'एक बड़ी उलझन की अवस्था' बताया गया है।
☞	उत्तर किशोरावस्था :	इसकी अवधि 17 वर्ष की आयु से 19 वर्ष की आयु तक मानी जाती है।
☞	किशोरावस्था :	तनाव व द्वन्द्व की अवस्था कहलाती है।
☞	ई.ए. किलपैट्रिक :	किशोरावस्था को जीवन का सबसे कठिन काल।
☞	किशोरावस्था :	बुद्धि का विकास लगभग पूर्ण हो जाता है। दिया–स्वप्न देखने की प्रवृत्ति पाई जाती है। बालक में समाजसेवा की भावना प्रबल होती है। बाल्य अवस्था के समापन (13 वर्ष) के पश्चात् बालक की किशोरावस्था प्रारंभ होती है।
☞	स्टैनली हाल :	"किशोरावस्था प्रबल दबाव तथा तनाव, तूफान एवं संघर्ष का काल है।"

3 : 02

☞ अंग्रेजी भाषा में किशोरावस्था का अनुरुप शब्द 'एडोलेसेन्स' है। शब्द 'एडोलेसेन्स' की उत्पत्ति लेटिन भाषा के शब्द 'एडोलेसियर' से हुई है। जिसका अर्थ होता है – 'परिपक्वता की ओर बढ़ना'।

☞ किशोरावस्था को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है –

☞ पूर्व किशोरावस्था : स्टेनली हॉल ने इसे 'एक अत्यंत संवेगात्मक उथल–पुथल, झंझावत और तनाव की अवस्था' माना है।
कुछ वैज्ञानिकों ने पूर्व किशोरावस्था को 'एक अटपटी अथवा समस्याओं की आयु' बताया है।

☞ त्वरित विकास का सिद्धांतानुसार "किशोर में जो शारीरिक, मानसिक और संवेगात्मक परिवर्तन होते हैं वे अकस्मात् होते हैं"।

☞ शारीरिक दृष्टि से किशोरावस्था को विकास का सर्वश्रेष्ठ काल माना गया है।

☞ रॉस के अनुसार : "किशोरावस्था में शैशवास्था की पुनरावृत्ति होती है।"

☞ इस अवस्था में शैशवास्था की भाँति स्थिरता और समायोजन का अभाव होता है।

☞ किशोर, किशोरियाँ प्रायः अपने साथियों और मित्रों का साथ पसन्द करते हैं। वे जिस समूह में रहते हैं उसे परिवार और विद्यालय दोनों से अधिक महत्व देते हैं।

☞ किशारों में नये अनुभवों की इच्छा, निराशा, प्रेम तथा स्नेह का अभाव, असफलता, कुसमायोजन आदि की प्रवृत्तियाँ अपराध प्रवृत्ति को विकसित करती है।

☞ स्टैनले हॉल के अनुसार : 'किशोरावस्था एक नया जन्म है, क्योंकि इसी में उच्चतर और श्रेष्ठतर मानव विशेषताएँ प्रकट होती है।'

☞ वह अपने भावी जीवन के संबंध में चिंतित रहता है।

☞ सत्य–असत्य, नैतिक–अनैतिक आदि का विचार करता है।

☞ इस अवस्था में बालक स्वयं के जीवन–दर्शन का निर्माण कर लेता है।

☞ किशोर में संवेगों की बहुत प्रभाविता होती है।

शिक्षार्थी : मानसिक विकास

(The Learner : Mental Development)

मानसिक विकास को प्रभावित करने वाले तत्व			
1.	बीमारी	2.	वंश
3.	बुद्धि	4.	भाषा
5.	मानसिक क्रिया	6.	परिवार
7.	विद्यालय	8.	चिंतन
9.	कल्पना।		

☞ अरस्तु : 'स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता हैं'।

सोरेन्सन के अनुसार : 'जीवन के प्रथम पांच वर्षो में सामान्य मानसिक विकास अत्यधिक तीव्र, पांच से दस वर्ष के बीच तीव्र, दस से पन्द्रह वर्ष के बीच कम और पन्द्रह से बीस वर्ष की आयु में अत्यधिक कम होता है।'

☞ मानसिक विकास का तात्पर्य मानसिक शक्ति का उदय होना, पुष्ट होना फिर चरम–सीमा पर पहुंचने के साथ–साथ व्यक्ति में उस योग्यता का विकास होना है जिसके द्वारा वह वातावरण की परिस्थितियों के अनुकूल व्यवहार करता है।

☞ स्किनर के अनुसार मानसिक विकास का अभिप्राय स्मरण करने की शक्ति, समझने की शक्ति, कल्पना–शक्ति, निरीक्षण–शक्ति, ध्यान केन्द्रित करने की शक्ति, विचार–शक्ति, तर्क–शक्ति, बुद्धि–अभिवृद्धि, भाषा तथा समस्या समाधान करने की शक्ति के विकास से है।

☞ मानसिक क्रियाओं की तीव्रता–शैशव अवस्था में शिशु में संवेदना, कल्पना, ध्यान आदि का पर्याप्त विकास हो जाता है।

☞ शिशु में नैतिकता का पूर्ण अभाव होता है, उसे सुख चाहिए चाहे वह किसी भी कार्य से मिले।

☞ शिशु अपने दोस्तों, भाई–बहिनों व माता–पिता के व्यवहार व कार्यो का अनुकरण कर कुछ सीखने का प्रयास करता है।

☞ शिशु दूसरे बालकों के प्रति अपनी रुचि या अरुचि अस्पष्ट रुप से प्रकट करने लगता है।

☞ बाल्यावस्था में बालक का चिंतन और तर्क आत्मकेन्द्रीत न होकर, बाह्य केन्द्रित होने लगता है।

☞ बाल्यावस्था में बालक दूसरों में रुचि दिखाने लगता है। नये–नये लोगों और वस्तुओं तथा घटनाओं के सम्पर्क में आने से उसकी जिज्ञासा प्रवृत्ति में तीव्रता आने लगती है।

☞ बालक में इस काल में आदतों, इच्छाओं, रुचियों के जो भी प्रतिरुप बनते हैं वे लगभग स्थायी रुप धारण कर लेते हैं और उन्हें सरलतापूर्वक रुपांतरित नहीं किया जा सकता।

☞ किशोरावस्था में मानसिक विकास तीव्र गति से होता है और अपनी उच्चतम सीमा को प्राप्त कर लेता है।

☞ वुडवर्थ के अनुसार मानसिक विकास 15 से 20 वर्ष की आयु में चरम सीमा पर पहुंच जाता है।

☞ एलिस क्रो के अनुसार : "किशोर में उच्च मानसिक योग्यताओं का प्रयोग करने की क्षमता उत्पन्न हो जाती है, पर वह प्रौढ़ों के समान उसका प्रयोग नहीं कर पाता है।"

☞ किशोरावस्था में बुद्धि का विकास लगभग पूर्ण हो जाता है। यह विकास हामन के अनुसार 15 वर्ष में, जोंस और कोनराड के अनुसार 16 वर्ष में तथा स्पियरमैन के अनुसार 14 से 16 वर्ष के मध्य होता है।

☞ स्ट्रैंग के अनुसार : "माता–पिता की शिक्षा, बच्चों की मानसिक योग्यता से निश्चित रुप से सम्बन्धित है।"

☞ अरस्तू का मत है कि शिक्षा मनुष्य की शक्ति का विशेष रुप से उसकी मानसिक शक्ति का विकास करती है।

☞ पियाजे के अनुसार बौद्धिक विकास की चार अवस्थाएँ हैं :

1. संवेदानात्मक : गामक अवस्था या संवेदी पेशी अवस्था (जन्म से दो वर्ष तक) – इसमें ज्ञानेन्द्रियों का विकास होता है।
2. पूर्व : संक्रियात्मक अवस्था (2 से 7 वर्ष तक)
3. मूर्त : संक्रियात्मक अवस्था या वैचाारिक क्रिया अवस्था (7 से 12 वर्ष तक)
4. औपचारिक : संक्रियात्मक अवस्था (15 वर्ष तक)

शिक्षार्थी : शारीरिक विकास (The Learner : Physical Development)	
☞	बाल्यावस्था : प्रथम तीन वर्षो 6 वर्ष से 9 वर्ष तक) में शारीरिक विकास तीव्र गति से होता है। बाद के तीन वर्षो (9 वर्ष से 12 वर्ष तक) में इसका सृदृढ़ीकरण होता है।
☞	किशोरावस्था : इस अवस्था में बालक का तीव्रतम विकास 14 से 15 वर्ष तथा बालिकाओं में 11 से 13 वर्ष की आयु तक होता है।
☞	6 वर्ष : इस आयु में बालक के मस्तिष्क में पूर्ण वृद्धि हो जाती है।
☞	15 वर्ष : सामान्य बुद्धि पूर्ण रुप से इस अवस्था में विकसित होती है।

शारीरिक विकास से प्रभावित होने वाले व्यवहार के प्रमुख क्षेत्र

1. तंत्रिका तंत्र का विकास : तंत्रिका तंत्र के विकास से बालक में संवेगात्मक स्थिरता आ जाती है जिससे उसके व्यवहार संयत और संतुलित होने लगते हैं।
2. मांसपेशियों में अभिवृद्धिः मांसपेशियों में अभिवृद्धि होने से बालक की गामक क्षमता और शक्ति में विकास होता है। इससे बालक में अपने अंगों पर नियंत्रण करने की शक्ति आ जाती है।
3. शारीरिक ढांचे में विकास : ये परिवर्तन बालक के व्यवहार को प्रभावित करते हें। शारीरिक विकास अच्छे स्वास्थ्य पर निर्भर होता है और बालक के सर्वांगीण विकास उसके स्वस्थ होने पर ही सम्भव है।

शारीरिक विकास के नियम

☞ प्रथम चक्र जन्म से दो वर्ष तक की आयु में दिखाई देता है। इस समय शारीरिक विकास की गति तीव्र होती है।

☞ द्वितीय विकास चक्र दो वर्ष से ग्यारह वर्ष तक रहता है। इस समय विकास की गति अपेक्षाकृत धीमी रहती है।

☞ तृतीय चक्र ग्यारह वर्ष से पन्द्रह वर्ष की आयु तक रहता है। इसमें विकास की गति पुनः तीव्र हो जाती है।

- चतुर्थ विकास चक्र का समय पन्द्रह वर्ष से अठारह वर्ष की आयु तक होता है। इस चक्र में विकास की गति पुनः धीमी हो जाती है।
- उपर्युक्त से स्पष्ट है कि शारीरिक विकास–एक समान गति से नहीं होता है। विकास की यह प्रथक आयु–अंतराल में भिन्न–भिन्न होती है।

शैशवावस्था में शारीरिक विकास

- जन्म से तीन वर्ष की आयु तक – यह संचय अवस्था है और इसमें विकास–गति काफी तीव्र होती है।
- तीन से छः वर्ष की आयु तक – यह परिपाक अवस्था है और इसमें विकास की गति पहले की अपेक्षा मंद होती है।
- शारीरिक विकास में तीव्रताः शैशव अवस्था में शिशु की लम्बाई व भार में पर्याप्त वृद्धि होती है, उसकी मांसपेशियों, इन्द्रियों का पर्याप्त विकास होता है।

बाल्यावस्था में शारीरिक विकास

- बाल्यावस्था के प्रथम तीन वर्षो (6 वर्ष से 9 वर्ष तक) में शारीरिक विकास तीव्र गति से होता है। बाद के तीन वर्षो (9 वर्ष से 12 वर्ष तक) में इसका सुदृढ़ीकरण होता है।
- स्ट्रैंग के अनुसार : "किशोरावस्था व्यक्ति के विकास का महत्वपूर्ण काल है। इस काल में अधिकांश बालकों और बालिकाओं में शारीरिक परिपक्वता आ जाती है, अर्थात् वे सन्तान उत्पन्न करने के योग्य हो जाते हैं और वे शारीरिक आकृति में प्रौढ़ों के समान हो जाते हैं"

सांवेगिक विकास

बालक के जीवन में संवेग बहुत भूमिका निभाते हैं। सकारात्मक संवेग प्रेम, हर्ष और उत्सुकता जैसे अभिनन्दनीय संवेग उसके शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास में सहायता करते हैं, जबकि नकारात्मक संवेग भय, क्रोध और ईर्ष्या जैसे निंदनीय संवेग उसके विकास को विकृत एवं कुंठित कर सकते हैं।

संवेग की विशेषताएँ

- संवेग व्यापक होते हैं जो हर प्राणी में पाए जाते हैं।
- वैयक्तिक होता है – एक व्यक्ति का संवेग दूसरे से भिन्न होता है।
- इनका स्थानांतरण होता है।
- बाह्य या आंतरिक उद्दीपन के परिणामस्वरुप होता है।
- विचार, प्रक्रिया का लोप हो जाता है।
- मूल प्रवृत्तियों से संबंध होता है।
- क्रियात्मक अनुभूति होती है।

संवेग के प्रकार

मैक्डगल तथा गिलफोर्ड ने कुल 14 प्रमुख संवेग बताये हैं। ये हैं – क्रोध, भय, वात्सल्य, अधिकार भावना, आमोद, भूख, कृतिभाव, कामुकता, आत्मभिमान, एकाकीपन, आश्चर्य, करुणा, आत्महीनता एवं घृणा।

☞	ब्रिजिस :	2 वर्ष तक बालक में सभी संवेगों का विकास हो जाता है।
☞	शैशवस्था :	मुख्य चार संवेग – भय, क्रोध और पीड़ा।
☞	बाल्यावस्था :	संवेगों को दमन करने की क्षमता उत्पन्न। बालक के संवेग अधिक निश्चित और कम शक्तिशाली हो जाते हैं। बाल्यावस्था में बालक दूसरे बालक के प्रति अपने व्यवहार में इन संवेगों को व्यक्त करने लगता है एवं उसमें जिज्ञासा संवेग का विकास होता है।
☞	किशोरावस्था :	आत्म–सम्मान का स्थायी भाव। जिज्ञासा प्रवृत्ति प्रबल, सत्यान्वेषण की भावना का विकास।

शैशवावस्था में संवेगात्मक विकास

- सभी संवेग जन्म से नहीं पाये जाते हैं। उनका विकास क्रमशः धीरे–धीरे होता है। स्पिज – "संवेग का जन्म से ही अंग के समान, उनका विकास होता है।"
- गेट्स के अनुसार : "प्रारम्भ में क्रोध, भय, हर्ष आदि की स्पष्ट अभिव्यक्ति न होकर संवेगात्मक प्रतिक्रियाएँ अधिकतर सामान्य उत्तेजना के रुप में ही प्रकट होता है।"
- जॉन बी. वॉट्सन का मत है कि "नवजात शिशु में मुख्य रुप से तीन संवेग विद्यमान रहते हैं : भय, क्रोध और स्नेह"।
- थार्नडाइक के अनुसार : "तीन से छः वर्ष तक के बालक प्रायः अर्द्ध–स्वप्नों की दशा में रहते हैं।"
- शिशु जन्म से ही संवेगात्मक व्यवहार प्रदर्शित करता है। जन्म से ही वह रोने, चिल्लाने, हाथ–पैर पटकने की क्रियाएँ प्रदर्शित करता है।
- इसमें शिशु अंतर्मुखी होता है। शिशु सीखने की गति में तीव्र तथा जिज्ञासु प्रवृत्ति का होता है।
- आत्म–प्रेम की भावना शिशु अपने सामने किसी दूसरे से प्रेम–प्रदर्शन नहीं देख सकता है। ऐसा होने से उसे उससे ईर्ष्या हो जाती है।
- शैशवावस्था के अंतिम वर्षो में सामाजिक भावना का विकास प्रारम्भ हो जाता है।
- वैलेंटाइन के अनुसार : "चार या पांच वर्ष के बालक में अपने छोटे भाईयों–बहनों या साथियों की रक्षा करने की प्रवृत्ति होती है। वह दो से पांच वर्ष तक के बच्चों के साथ खेलना पसंद करता है। वह अपनी वस्तुओं में दूसरों को भागीदार बनाता है। दुख में उनको सांत्वना देने का प्रयास करता है।"
- शिशु अपनी विभिन्न क्रियाओं द्वारा अपनी जिज्ञासा को शांत करने की चेष्टा करता है।
- जॉन बी. वॉट्सनः इन्होंने शैशवावस्था में तीन संवेग, भय, क्रोध और स्नेह बताये हैं।

  शिशु का संवेगात्मक व्यवहार अधिक अस्थिर होता है।
- आरम्भ में शिशु के संवेग काफी तीव्र होते हैं किन्तु धीरे–धीरे यह तीव्रता कम हो जाती है।
- शिशु की संवेगात्मक अभिव्यक्ति में क्रमशः परिवर्तन होता जाता है।

बाल्यावस्था में संवेगात्मक विकास

- कोल के अनुसार : "बाल्यावस्था संवेगात्मक विकास का अनोखा काल होता है।"
- क्रो व क्रो के अनुसार : "बाल्यावस्था के सम्पूर्ण वर्षो में संवेगों की अभिव्यक्ति में निरंतर परिवर्तन होते रहते हैं।"
- संवेग बालक को शैशवावस्था के समान उत्तेजित नहीं कर पाते हैं। बालक में संवेगों को दमन करने की क्षमता जाग जाती है।
- कारमाइकेल के अनुसार : "कोई भी बात जो बालक के आत्म–विश्वास को कम करती है या उसके आत्म सम्मान को ठेस पहुंचाती है, या उसके कार्य में बाधा उपस्थित करती है, या उसके द्वारा महत्वपूर्ण समझे जाने वाले लक्ष्यों की प्राप्ति में अवरोध उत्पन्न करती है, उसकी चिंतित और भयभीत रहने की प्रवृत्ति कर सकती है"।
- बाल्यावस्था में बालक निराशा और असहायपन की भावना से पीड़ित रहता है।

  इसका कारण उस पर अभिभावकों एवं शिक्षकों का कड़ा नियंत्रण, पारिवारिक एवं सामाजिक वातावरण होता है।
- बाल्यावस्था में बालक दूसरे बालक के प्रति अपने व्यवहार में इन संवेगों को व्यक्त करने लगता है जैसे व्यंग्य करने,

चिढ़ाना, झूठे आरोप लगाना, निंदा करना, तिरस्कार करना आदि।

- ☞ शैशव अवस्था के बाद प्रारंभ होने वाली इस अवस्था में बालक के व्यक्तित्व का निर्माण होता है।
- ☞ इस अवस्था में बालक अपने संवेगों पर नियंत्रण करना और अच्छे–बुरे की भावना में अंतर करना सीख जाता है।
- ☞ उत्तर–बाल्यावस्था में स्नेह भाव की अभिव्यक्ति, प्रारम्भिक बाल्यावस्था की तुलना में कुछ कम होती है।
- ☞ कोल व ब्रूस के अनुसार : "6 से 12 वर्ष की अवधि की एक अपूर्व विशेषता है – मानसिक रुचियों में स्पष्ट परिवर्तन"। "बाल्यावस्था संवेगात्मक विकास की अनोखी अवस्था होती है।"
- ☞ इस अवस्था में बालक को रचनात्मक कार्य करने में आनंद प्राप्त होता है।
- ☞ इस अवस्था में बालक निरुद्देश्य भ्रमण करता रहता है।
- ☞ बालक में काम प्रवृत्ति की न्यूनता पाई जाती है।
- ☞ इस अवस्था में बालक विभिन्न बातों के बारे में तर्क और विचार करने लगता है।
  बालक में संवेदना और प्रत्यक्षीकरण करने की शक्तियों में वृद्धि होती रहती है।

किशोरावस्था में संवेगात्मक विकास

- ☞ किशोरावस्था में संवेग–प्रकाशन में स्पष्टता आ जाती है।
- ☞ किशोर का ज्ञान–क्षेत्र काफी बढ़ जाता है। उसमें विरोधी मनोदशाएँ दिखाई देने लगती है, उसका संवेगात्मक विकास काफी विचित्र होता है। किशोर अधिकतर संवेगात्मक तनाव की स्थिति में रहता है जिसका प्रकाशन प्रायः उसकी उदासीनता, निराशा, विद्रोह तथा अपराध प्रवृत्ति के रुप में होता है।
- ☞ किशोरावस्था में बालक में क्रोध, घृणा, चिड़चिड़ापन, उदासीनता आदि का अभ्युदय हो जाता है, अपराधी प्रवृत्ति अपनी पराकाष्ठा पर पहुंच जाती है।
- ☞ किशोर में आत्म–सम्मान का स्थायी भाव विकसित हो जाता है।
- ☞ किशोर में चिंता की तीव्रता रहती है। वह सदैव अपनी आकृति, स्वास्थ्य, सम्मान, धन–प्राप्ति, सामाजिक सफलता के लिए चिंतित रहता है।
- ☞ किशोर बालक को अपने संवेगात्मक जीवन में वातावरण से अनुकूलन करने में काफी कठिनाई का सामना करना पड़ता है।
- ☞ किशोरावस्था में जिज्ञासा प्रवृत्ति प्रबल हो जाती हैं उसमें दार्शनिक, वैज्ञानिक खोज तथा सत्यान्वेषण की भावना का विकास होता है।
- ☞ किशोरावस्था, वास्तव में संवेगात्मक बुद्धि की अवस्था है।

शिक्षार्थी : सामाजिक विकास
(The Learner : Social Development)

हरलॉक के अनुसार : "सामाजिक विकास का अर्थ सामाजिक सम्बन्धों में परिपक्वता को प्राप्त करता है।"

समाज में अन्य लोगों के साथ सम्पर्क एवं अनुकूलन स्थापित करने की योग्यता को समाजीकरण या सामाजिक विकास करते हैं। समाजीकरण, शिक्षा–प्रक्रिया के माध्यम से होता है। शिक्षा प्रक्रिया आजन्म चलती है। अतः समाजीकरण भी निरंतर जन्म से लेकर मृत्यु तक चलता रहता है।

सामाजिक विकास अर्थ :

- ☞ दूसरों के विचारों की सहन–शक्ति की क्षमता का विकास।
- ☞ दूसरों के साथ सहयोग की भावना का विकास।
- ☞ दूसरों के दुख–सुख को बांटने की क्षमता का विकास।
- ☞ दूसरों के साथ मेल–मिलाप की भावना का विकास।
- ☞ सामाजिक मूल्यों एवं आदर्शो के अनुरुप व्यवहार करने की क्षमता का विकास।

शैशवावस्था में सामाजिक विकास

क्रो व क्रो के अनुसार : "जन्म के समय शिशु न तो सामाजिक प्राणी होता है और न असामाजिक, पर इस स्थिति में वह बहुत समय तक नहीं रहता है।"

बाल्यावस्था में सामाजिक विकास

- ☞ लगभग 6 वर्ष की आयु में बालक विद्यालय जाने लगता है। विद्यालयी वातावरण उसके सामाजिक विकास में सहायक होता है।
- ☞ विद्यालय में बालक किसी न किसी टोली का सदस्य बन जाता है। जिससे उसमें उत्तरदायित्व सहकारिता की भावना का विकास होता है।
- ☞ हरलॉक के अनुसार : "टोली, बालक में आत्मनियंत्रण, साहस, न्याय, सहनशीलता, नेता के प्रति भक्ति, दूसरों के प्रति सद्भावना आदि गुणों का विकास करती है"।
- ☞ इस अवस्था में बालक, सामाजिक स्वीकृति एवं प्रशंसा पाने के लिए इच्छुक रहता है। जिन्हें घर में, विद्यालय में तथा बाहर स्नेह एवं प्रशंसा प्राप्त होती है वे अच्छे कार्य करते हैं। ये इसके विपरीत व्यवहार पाने वाले बालक समाज विरोधी तथा विद्रोही हो जाते हैं। ये बालक बाल–अपराधी कहलाते हैं।
- ☞ क्रो व क्रो के अनुसार : "6 से 10 वर्ष तक बालक अपने वांछनीय या अवांछनीय व्यवहार में निरंतर प्रगति करता है। वह बहुधा उन्हीं कार्यो को करता है जिनके किया जाने का कोई उचित कारण नहीं जान पड़ता है।"

बाल्यावस्था .....

- ☞ आत्मनियंत्रण, साहस, न्याय, सहनशीलता, नेता के प्रति भक्ति, सद्भावना के गुणों का विकास होता है।
- ☞ घर या विद्यालय में स्नेह एवं प्रशंसा न मिलने पर इस अवस्था में बाल अपराध की प्रवृत्ति जन्म लेती है।

किशोरावस्था में सामाजिक विकास

- ☞ जब बालक 12 या 14 वर्ष की आयु में प्रवेश करता है, तक उसके प्रति दूसरों के और दूसरों के प्रति उसके कुछ दृष्टिकोण न केवल उसके अनुभवों में वरन् उसके सामाजिक सम्बन्धों में भी परिवर्तन करने लगते हैं।
- ☞ किशोरावस्था में मित्रता की भावना का समुचित विकास हो जाता है। उत्तर किशोरावस्था आते ही किशोरों ओर किशोरियों में एक–दूसरे के प्रति आकर्षण उत्पन्न हो जाता है। अतः वे अपनी सर्वोत्तम वेशभूषा, बनाव–श्रृंगार और सज–धज में अपने को एक–दूसरे के सामने उपस्थित करते हैं।
- ☞ समूह के सदस्य होने के कारण उनमें नेतृत्व, उत्साह सहानुभूति, सद्भावना आदि सामाजिक गुणों का विकास होता है।
- ☞ इस अवस्था में किशोर व किशोरियों का अपने माता–पिता तथा बड़ों से किसी न किसी बात पर मतभेद हो जाता है।
- ☞ किशोरावस्था में परमार्थ, समाज सेवा और आत्म–सम्मान की भावना भी प्रबल होती है।
- ☞ किशोरावस्था में वीर–पूजा की भावना, धर्म और ईश्वर के प्रति आस्था प्रबल होती है।
- ☞ किशोरावस्था की प्रमुख विशेषता काम–भावना का विकास होना है।
- ☞ किशोर किसी न किसी राजनीतिक दल से प्रभावित होकर उसका अनुगामी बन जाता है।

सामाजिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक

1. वंशानुक्रम :

क्रो व क्रो के अनुसार : "शिशु की प्रथम मुस्कान या उसका कोई विशिष्ट व्यवहार वंशानुक्रम से उत्पन्न होने वाला हो सकता है।"

2. स्वास्थ्य :
स्वस्थ एवं अच्छे मानसिक विकास वाला बालक अपने को समाज में शीघ्र समायोजित कर लेता है।

3. संवेग :
नकारात्मक एवं सकारात्मक संवेग मानसिक विकास को प्रभावित करते हैं।
क्रो व क्रो के अनुसार : "संवेगात्मक और सामाजिक विकास साथ–साथ चलते हैं।"

4. परिवार :
परिवार से जिस संतान को अधिक स्नेह और प्रशंसा मिलती है वह अच्छा व्यवहार करते हैं और जिस संतान की उपेक्षा की जाती है, वह समाज–विरोधी कार्य करने लगता है और बाल–अपराधी बन जाता है।
धनी माता–पिता के बालकों का सामाजिक विकास, निर्धन परिवार के बालकों की अपेक्षा अधिक अच्छा होता है।
अनुचित समूह बालक को अपराधी बना सकता है।

5. विद्यालय :
बालक के सामाजिक विकास की दृष्टि से परिवार के बाद विद्यालय का सबसे अधिक महत्व होता है। जनतंत्रीय एवं खुले वातावरण वाले विद्यालय में बालक का विकास स्वस्थ एवं उत्तम होता है।

6. शिक्षक :
जो शिक्षक शिष्ट, शांत और सहयोगी प्रकृति के होते हैं तथा जिन्हें अपने विषय का पूर्ण ज्ञान होता है उनके शिष्य भी उन्हीं की भाँति बनने का प्रयास करते हैं। उनके छात्र उनकी हर बात मानने को तैयार रहते हैं।

7. खेलकूद :
बालक खेल द्वारा ही सामाजिक प्रवृत्तियाँ और सामाजिक व्यववहार का प्रदश्रन करता हैं खेल के माध्यम से ही बालक में सहयोग, सामंजस्य, सहिष्णुता, नेतृत्व, आज्ञाकारिता, उत्तरदायित्व आदि सामाजिक गुणों का विकास होता है।

सामाजिक विकास का शैक्षिक महत्व
(Educational Importance of Social Development)

शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य बालक का सामाजिक विकास करना है। इसीलिए शिक्षा को 'सप्रयोजन–क्रिया' कहा गया है।
बालक की बुद्धि के अनुसार ही शिक्षा प्रदान करनी चाहिए। ऐसा न होने से मंद बुद्धि बालक कक्षा में आने को समायोजित नहीं कर पाता है। जिससे उसमें हीन–भावना का विकास होने के कारण उसका सामाजिक विकास कुंठित हो जाता है।
जॉन डीवी के अनुसार : "विद्यालय समाज का सच्चा प्रतिनिधि होना चाहिए।"
जॉन डीवी ने विद्यालय को 'लघु समाज' की संज्ञा दी है।
सामाजिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक वंशानुक्रम, शारीरिक व मानसिक विकास, संवेगात्मक विकास, परिवार, परिवार की आर्थिक स्थिति, समवयस्क समूह, विद्यालय का वातावरण, शिक्षक, खेलकूद व संस्कृति।

शिक्षार्थी : नैतिक विकास
(The Learner : Moral Development)

नैतिकता का विकास शिक्षा का लक्ष्य है। नैतिकता का विकास सामाजिक–सांवेगिक विकास से प्रभावित होता है। वस्तुतः इस अवस्था में दमन से अधिक शोधन और मार्गान्तरीकरण से समस्या हल होनी चाहिए। नैतिक विकास के पियाजे एवं कोहलबर्ग के दृष्टिकोण विशेष रुप से उल्लेखनीय है।

पियाजे के अनुसार नैतिक अवस्थाएँ

1. अनियमित (5 वर्ष तक)
2. विषय जातीय अधिकार (5-8 वर्ष)
3. विषय जातीय परस्परता (9-13 वर्ष)
4. स्वशासित

1. अनियमित (5 वर्ष तक) : इस अवस्था में बालक न तो नैतिक होता है और न ही अनैतिक अर्थात् उसका व्यवहार नैतिक स्तर से नियंत्रित नहीं होता। खुशी और दुख उसके व्यवहार को नियंत्रित करते हैं।
2. विषम जातीय अधिका (5-8 वर्ष) इस अवस्था में नैतिक विकास अंग्रेजी के दबाव के कारण से होता है। नैतिक विकास पर नियंत्रण बाह्य अधिकार से होता है। यह विकास पुरस्कार और दंड के द्वारा संयमित होता है।
3. विषम जातीय परस्परता (9-13 वर्ष) इस अवस्था में नैतिक विकास साथियों के सहयोग से होता है और परस्परता पर निर्भर होता है। इसमें यह धारणा अपनाई जाती है। कि हमें ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए जो हमारे लिए आक्रामक हो।
4. स्वशासित : पियाजे इसे समान अवस्था मानते हैं। जब परस्परता की मांग समान हो जाती है, स्वशासन का विकास होता है इस अवस्था में व्यक्ति अपने व्यवहार के लिए उत्तरदायी होता है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

☞ 6 से 12 वर्ष की अवधि की एक अपूर्व विशेषता है :
(a) अधिगम योग्यता का अधिक विकसित हाना।
(b) मानसिक शक्तियों का तीव्र विकास होना।
(c) मानसिक रुचियों में स्पष्ट परिवर्तन।
(d) धार्मिक भावना का विकास। (c)

☞ किस मनोवैज्ञानिक ने बाल्यावस्था को बालक का निर्माणकारी काल माना है एवं इसे अत्यधिक महत्व दिया है?
(a) वाटसन (b) स्कीनर
(c) फ्रायड (d) स्ट्रैंग (c)

☞ किस अवस्था में अपराधी प्रवृत्ति अपनी पराकाष्ठा पर पहुंच जाती है?
(a) बाल्यावस्था (b) प्रौढ़ावस्था
(c) शैशवावस्था (d) किशोरावस्था (d)

☞ बिग और हंट के अनुसार किशोरावस्था की विशेषताओं को सर्वोत्तम रुप से व्यक्त करने वाला एक शब्द है :
(a) परिवर्तन (b) तीव्र विकास
(c) अनोखा काल (d) प्रतिद्वंद्वात्मक सामाजिकता (a)

☞ किशोरावस्था में बालक में पाया जाने वाला लक्षण नहीं है :
(a) उद्दण्डता (b) कठोरता
(c) पशुओं के प्रति दया (d) आत्म प्रदर्शन की प्रवृत्ति (c)

☞ किशोरावस्था में आने वाली समस्याओं में से नहीं है :
(a) योग्य नागरिक बनने के लिए उचित कुशलताओं को प्राप्त करना।
(b) जीवन के प्रति निश्चित दृष्टिकोण का निर्माण करना।
(c) विवाह, पारिवारिक जीवन और भावी व्यवसाय के लिए तैयारी करना।
(d) नये सामाजिक सम्बन्धों को स्थापित नहीं करना। (d)

☞ किस आयु के बाद बालक की रुचियों में स्थिरता आ जाती है?
(a) 15 वर्ष (b) 11 वर्ष
(c) 6 वर्ष (d) 25 वर्ष (a)

☞ किस अवस्था में उच्चतर और श्रेष्ठतर मानव विशेषताओं के दर्शन होते हैं?
(a) बाल्यावस्था (b) प्रौढ़ावस्था
(c) शैशवास्था (d) किशोरावस्था (d)

☞ निम्न में से कौन सी किशोरावस्था की सामाजिक और संवेगात्मक विशेषता नहीं है?
(a) किशोर का बहुधा आदर्शवादी होना
(b) अपनी व्यक्तिगत पर्याप्तता का मूल्यांकन करना।
(c) दूरवर्ती उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए उतावला होना।
(d) भिन्नता दिखाने के लिए कभी–कभी भद्दा दिखाई देना। (a)

☞ किशोर को निर्णय करने का कोई अनुभव नहीं होता, यह कथन किस मनोवैज्ञानिक का है?
(a) स्ट्रैंग (b) फिशर
(c) स्टेनले हॉल (d) स्कीनर (d)

☞ किशोर के प्रति कैसा व्यवहार अपेक्षित है?
(a) वयस्क के तुल्य (b) बालक के तुल्य
(c) शिशु के तुल्य (d) प्रौढ़ के तुल्य (a)

☞ किस आयु वर्ग में सामान्य बालक में तर्क, जिज्ञासा और निरीक्षण की शक्तियों का विकास हो जाता है?
(a) 6 से 8 वर्ष (b) 3 से 5 वर्ष
(c) 11 से 13 वर्ष (d) 15 से 18 वर्ष (c)

☞ प्राथमिक आवश्यकताएँ होती है :
(a) समाज में सम्मान रखने की
(b) व्यक्ति के अस्तित्व को बनाए रखने की
(c) विद्यालय के बनाए रखने की
(d) उपर्युक्त में से कोई भी नहीं (b)

☞ बाल्यवस्था के समापन व किशोरावस्था के प्रारंभ होने का वर्ष है?
(a) 10-11 वर्ष (b) 8-9 वर्ष
(c) 12-13 वर्ष (d) 15-16 वर्ष (c)

☞ खेलों के माध्यम से सामाजिकता का विकास होता है, क्योंकि :
(a) बालक कल्पना करके खलेता है।
(b) बालक स्वतंत्र होकर खेलेता है।
(c) बालक समूह में खेलता है जिससे अनेक–सामाजिक गुणों का विकास होता है।
(d) उपर्युक्त सभी (c)

☞ "चरित्र आदतों का पुंज होता है।" कथन :
(a) सत्य है (b) असत्य है
(c) सत्य व असत्य दोनों है (d) कह नहीं सकते (a)

☞ बालकों के विकास की किस अवस्था को सबसे कठिन काल के रुप में माना जाता है?
(a) किशोरावस्था (b) बाल्यावस्था
(c) शिशुवस्था (d) युवावस्था (a)

☞ बालक के चरित्रिक विकास का स्तर है :
(a) मूल प्रवृत्यात्मक (b) पुरस्कार एवं दंड
(c) सामाजिकता (d) उपर्युक्त सभी (d)

☞ संवेगात्मक विकास में तीव्र परिवर्तन किस अवस्था में होता है?
(a) बाल्यावस्था (b) युवावस्था
(c) प्रौढ़ अवस्था (d) किशोरावस्था (d)

☞ किशोरावस्था की प्रमुख विशेषता नहीं है :
(a) धार्मिकता का विकास (b) संचय की प्रवृत्ति
(c) कल्पना की बहुलता (d) संवेगों का आधिक्य (a)

☞ बालकों में सौंदर्यभूति विकसित करने का आधारभूत साधन है :
(a) टेलीविजन (b) खेलकूद
(c) साहित्यिक अध्ययन (d) प्रकृति अवलोकन (d)

☞ विकास एक प्रक्रिया है :
(a) खंडित (b) निरंतर
(c) पूर्ण (d) अपूर्ण (b)

☞ बाल्यावस्था में मस्तिष्क का विकास होता है :
(a) 50% (b) 70%
(c) 40% (d) 90% (d)

☞ वृद्धि और विकास है :
(a) एक दूसरे के पूरक (b) एक दूसरे के समान
(c) परस्पर विरोधी (d) इनमें से कोई नहीं (a)

☞ "बालक के जन्म के कुछ माह बाद ही यह निश्चित किया जा सकता है कि जीवन में उसका क्या स्थान है", कथन किसका है?
(a) ब्राउन का (b) एडवर्ड का
(c) एडलर का (d) फ्रायड का (c)

☞ संवेग हमारे कार्यो को प्रदान करते हैं :
(a) कुशलता (b) रुकावट
(c) गति (d) अनुकरण (c)

☞ पुरुषों में संवेग की तीव्रता पाई जाती है :
(a) स्त्रियों से अधिक (b) स्त्रियों से कम
(c) बराबर (d) इनमें से कोई नहीं (b)

☞ प्रसन्नता के समय मुस्कराना उदाहरण है :
(a) सामाजिक परिवर्तन का (b) आंतरिक परिवर्तन का
(c) मानसिक परिवर्तन का (d) बाह्य परिवर्तन का (d)

बुद्धि (Intelligence)

☞ बुद्धि व्यक्ति की सभी मानसिक योग्यताओं का योग एवं अभिन्न अंग है।

☞	बुद्धि :	यह जन्मजात शक्ति हे और वंशानुक्रम से प्राप्त होती है।
☞	पिंटर :	बुद्धि का विकास जन्मकाल से किशोरावस्था के मध्यकाल तक माना।
☞	मूर्त :	थार्नडाइक ने इस बुद्धि को गामक या यांत्रिक बुद्धि कहा है।
☞	प्राचीन काल :	ज्ञान के आधार पर बुद्धि की परीक्षा की जाती थी।
☞	मध्यकाल :	शारीरिक बनावट के आधार पर बुद्धि की परीक्षा की जाती थी।
☞	आधुनिक काल :	बुद्धि को एक स्वाभाविक एवं जन्मजात शक्ति मानकर उसकी परीक्षा की जाती है।

☞	वुडवर्थ :	कार्य करने की एक विधि
☞	गाल्टन :	पहचानने तथा सीखने की शक्ति
☞	टरमन :	अमूर्त विचारों के बारे में सोचने की योग्यता
☞	मैक्डूगल :	पूर्व अनुभवों के प्रकाश में जन्मजात प्रवृत्ति को सुधारने की योग्यता

☞ कालविन के अनुसार : "यदि व्यक्ति ने अपने वातावरण से सामंजस्य करना सीख लिया या सीख सकता है, तो उससे बुद्धि है।"
बुद्धि परीक्षण की शैक्षणिक उपादेयता : छात्रों का वर्गीकरण करने में विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के चयन में, विषय के चयन में, शिक्षा प्रणाली का मूल्यांकन करने में इनकी उपदेयता है।

बुद्धि की विशेषताएँ
(Characteristics of Intelligence)

- बुद्धि जन्मजात शक्ति है और वंशानुक्रम से प्राप्त होती है।
- बुद्धि सीखने की क्षमता और विभिन्न बातों को सीखने में सहायता प्रदान करती है।
- बुद्धि अमूर्त चिंतन की योग्यता प्रदान करती है।
- बुद्धि पूर्व अनुभवों से लाभ उठाने की क्षमता और कठिन परिस्थितियों को सरल बनाने में सहायता प्रदान करती है।
- बुद्धि भले–बुरे, सत्य–असत्य, नैतिक–अनैतिक कार्यो में अंतर करने की योग्यता विकसित करती है।
- बुद्धि नवीन परिस्थितियों से सामंजस्य करने की योग्यता प्रदान करती है।
- बुद्धि वातावरण से भी प्रभावित होती है।
- बुद्धि में आत्म–निरीक्षण की शक्ति होती है।

बुद्धि के प्रकार
(Kinds of Intelligence)

मनोवैज्ञानिक गैरट ने बुद्धि के निम्नलिखित प्रकार बताये हैं :

(अ) मूर्त बुद्धि (Concrete Intelligence) :

थार्नडाइक ने इस बुद्धि को गामक या यांत्रिक बुद्धि कहा है। जिस व्यक्ति में यह बुद्धि होती है वह यंत्रों और मशीनों से सम्बन्धित कार्यो में विशेष रुचि लेता है। ऐसा बालक खिलौने, घड़ी आदि को खोलकर ठीक करने का प्रयास करते हैं।

(ब) अमूर्त बुद्धि (Abstract Intelligence) : इस बुद्धि वाला व्यक्ति ज्ञानार्जन में, पढ़ने–लिखने से सम्बन्धित पुस्तकीय ज्ञान प्राप्त करने में और शब्दों तथा प्रतीकों के रुप में उपस्थित समस्याओं के हल करने में विशेष रुचि लेता है।

गणित के सूत्रों को हल करने में, साहित्यिक रचनाओं की सौन्दर्यानुभूति में अमूर्त बुद्धि ही काम करती है।

इस बुद्धि वाले व्यक्ति मंत्री, व्यवसायी, सामाजिक कार्यकर्त्ता आदि बनते हैं।

EduBull.com

बुद्धि के सिद्धांत
(Theories of Intelligence)

	सिद्धांत	समर्थक
☞	एक तत्व/एकसत्तात्मक सिद्धांत :	बिने, टरमन तथा स्टर्न।
☞	द्वि–तत्व एवं त्रि–तत्व सिद्धांत :	स्पीयरमैन।
☞	बहुतत्व या असत्तत्मक सिद्धांत :	थार्नडाइक। थार्नडाइक ने बुद्धि को तीन भागों–सामाजिक बुद्धि, स्थूल बुद्धि व अमूर्त बुद्धि में विभाजित किया।
☞	बहुमानसिक योग्यता का सिद्धांत	थर्स्टन और कैली। इन्होंने बुद्धि को नौ मानसिक योग्यताओं का समूह माना।
☞	क्रमिक महत्व का सिद्धांत :	बर्ट और वर्णन।
☞	संघ सत्तात्मक सिद्धांत	गाडफ्रे थॉमसन

(1) एक तत्व या एक सत्तात्मक सिद्धांत : (Unifactor or Manarchic Theory) : इसके अनुसार बुद्धि एक इकाई और सम्पूर्ण बुद्धि एक समय में सक्रिय होकर ही प्रकार का कार्य करती है।

इसके अनुसार बुद्धि सबसे शक्तिशाली मानसिक शक्ति है और सभी मानसिक योग्यताओं को नियंत्रण करती है। इस सिद्धांत को दोषपूर्ण माना जाता है क्योंकि ऐसा नहीं है कि जो व्यक्ति विज्ञान में निपुण हो वह इतिहास में भी निपुण होगा।

(2) द्वि–तत्व सिद्धांत (Two Factor Theory) : इस सिद्धांत का समर्थन मनोवैज्ञानिक स्पीयरमैन ने किया है। इस सिद्धांत के अनुसार बुद्धि में दो तत्व होते हैं :

(i) सामान्य तत्व या योग्यता
(General Ability or 'G' Factor)

सामान्य योग्यता व्यक्तित्व को सभी प्रकार के कार्यो में सहायता करती है और विशिष्ट योग्यता, विशेष कार्यो में सहायक होती है। उदाहरणार्थ : कोई गणित में प्रवीण होता है, कोई संगीत में, कोई चित्रकला में और कोई भूगोल में।

G तत्व की निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं :

- ☞ सभी व्यक्तियों में सदैव समान एवं जन्मजात पाया जाता है।
- ☞ जिस व्यक्ति में अधिक होता है वह दूसरों की अपेक्षा जीवन में अधिक सफल रहता है।
- ☞ सामान्य योग्यता में प्रत्येक व्यक्ति भिन्न होता है।
- ☞ जीवन के सभी कार्यो के लिए आवश्यक है।

(ii) सामान्य तत्व या योग्यता
(Specific Ability or 'S' Factor)

S तत्व की निम्नलिखित विशेषताएँ होती है :

- ☞ यह तत्व भिन्न–भिन्न व्यक्तियों में कम या अधिक मात्रा में पाया जाता है।
- ☞ यह तत्व क्रिया होता है।
- ☞ व्यक्ति में जिस विशिष्ट तत्व की अधिकता होती है, वह उसी में निपुण होता है।
- ☞ विशिष्ट तत्व को अर्जित किया जा सकता है।
- ☞ यह व्यक्तिगत भिन्नता का एक कारण होता है।

(3) त्रि–तत्व सिद्धांत (Three Factor Theory) : इस सिद्धांत में स्पीयर मैन ने बुद्धि के 'G' और 'S' तत्वों के साथ एक और सामूहिक तत्व जोड़ दिया। इसके अनुसार बुद्धि परीक्षा में सामान्य बुद्धि, विशिष्ट और भाषा या स्थानात्मक ज्ञान की आवश्यकता होती है।

(4) बहु–तत्व या असत्तात्मक सिद्धांत (Multifactor or Anarchic Theory) : इसका प्रतिपादन अमेरिका के प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक थार्नडाइक ने किया। इनके अनुसार बुद्धि अनेक प्रकार की शक्तियों का एक समूह होती है और इन विभिन्न प्रकार की शक्तियों में किसी तरह की समानता का होना आवश्यक नहीं है।

थार्नडाइक, बुद्धि के सामान्य या 'G' तत्व को नहीं मानते हैं इनके अनुसार सभी व्यक्तियों में विशेष प्रकार की ही बुद्धि होती है।

थार्नडाइक ने बुद्धि को तीन भागों–सामाजिक बुद्धि, स्थूल बुद्धि, अमूर्त बुद्धि में विभाजित किया है।

(5) बहु–मानसिक योग्यता का सिद्धांत (Multi-Mental Ability) : थार्नडाइक ने बुद्धि को अनेक योग्यताओं का समूह माना है।

थर्स्टन और कैली ने बुद्धि को निम्नलिखित 9 मानसिक योग्यताओं का समूह माना है :

(i) सामाजिक योग्यता, (ii) वाचिक योग्यता,
(iii) संख्यात्मक योग्यता, (iv) क्रियात्मक योग्यता,
(v) शारीरिक क्षमता, (vi) यांत्रिक योग्यता,
(vii) संगीतात्मक योग्यता (viii) अभिरुचि और
(ix) स्थानिक सम्बन्धों के साथ व्यवहार करने की क्षमता

थर्स्टन ने बुद्धि को 7 प्राथमिक मानसिक योग्यताओं का समूह माना है :

(i) संख्यात्मक योग्यता,
(ii) शाब्दिक योग्यता
(iii) स्थान सम्बन्धी योग्यता
(iv) शब्द–प्रवाह योग्यता
(v) तार्किक–योग्यता
(vi) स्मृति–सम्बन्धी योग्यता
(vii) प्रत्यक्ष सम्बन्धी योग्यता

संक्षेप में इन्हें निम्न प्रकार लिखा जा सकता है :

बुद्धि (Intelligence) =
(N + V + S + W + R + M + P)

गिलफोर्ड का त्रिआयामीय सिद्धांत – गिलफोर्ड के अनुसार मानसिक योग्यता के तीन प्रमुख तत्व है – संक्रिया, विषय वस्तु और उत्पादन। गिलफोर्ड ने डिब्बे के आकार का मॉडल प्रस्तुत किया। इसे बुद्धि संरचना मॉडल के नाम से जाना जाता है।

(6) क्रमिक महत्व का सिद्धांत (Mierarchial Theory) : इस सिद्धांत के समर्थक मनोवैज्ञानिक बर्ट और वर्नन है। इन्होंने मानसिक योग्यताओं को क्रमिक महत्व दिया है।

बुद्धि परीक्षण		
☞	पी.एन. मल्होत्रा :	मिश्रित प्रकार की बुद्धि का परीक्षण भारत में पहली बार किया।
☞	अल्फ्रेड बिने :	बुद्धि परीक्षण के लिए प्रश्नवलियों का निर्माण साइमन की सहायता से किया। इस बिने–साइमन परीक्षण में मानसिक आयु के आधार पर परीक्षण किया जाता है।
☞	एम.एल. टरमन :	1937 ई. में टरमन ने टरमन–मैरिल मानक्रम का विकास किया।

☞	अशाब्दिक व्यक्तिगत बुद्धि परीक्षण	भाषा ज्ञान में असक्षम व्यक्तियों के लिए उपयुक्त। इसे क्रियात्मक बुद्धि परीक्षण भी कहते हैं।
☞	वस्तु संयोजन परीक्षण :	वैक्सलर द्वारा इस परीक्षण का प्रयोग वैक्सलर वेलव्यू बुद्धि मोनक्रम में किया गया।
☞	आर्मी अल्फा परीक्षण :	इसे शाब्दिक सामूहिक बुद्धि परीक्षण भी कहते हैं।
☞	आर्मी बीटा परीक्षण :	इसे अशाब्दिक सामूहिक बुद्धि परीक्षण भी कहते हैं।

- ☞ **जेम्स ड्रेवर :** "बुद्धि परीक्षण किसी प्रकार का कार्य या समस्या होती है, जिसकी सहायता से एक व्यक्ति के मानसिक विकास के स्तर का अनुमान लगाया जा सकता है या मापन किया जा सकता है।"
- ☞ **अल्फ्रेड बिने :** फ्रांस के मनोवैज्ञानिक, बुद्धि परीक्षण के सम्बन्ध में सबसे पहला ठोस कदम उठाया।
- ☞ **अल्फ्रेड बिने** सन् 1905 में 'बिने–साइमन मानक्रम' का निर्माण किया।
- ☞ **एम.एल. टरमन :** अमेरिका के स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय में इनकी अध्यक्षता में बिने–साइमन मानक्रम का संशोधन किया गया और इसका नाम 'स्टेनफोर्ड बिने मानक्रम' कर दिया गया।
- ☞ 1937 ई. में टरमन ने मेरिल की सहायता से इसमें संशोधन किया और इसका टरमन–मैरिल मानक्रम रखा गया।
- ☞ भारत में भारतीय बालकों के लिए उत्तर प्रदेश में इलाहाबाद स्थित मनोविज्ञानशाला में भी बिने–साइमन परीक्षाओं का संशोधन किया गया। भारत में डॉ. सोहनलाल, डॉ. जलोटा, प. लज्जा शंकर झा तथा डॉ. सी.एम. भाटिया आदि ने विभिन्न बुद्धि परीक्षाओं का निर्माण किया।

बुद्धि परीक्षणों के प्रकार

बुद्धि परीक्षणों को दो प्रकारों में विभाजित किया जाता है :

(अ) व्यक्तिगत बुद्धि परीक्षण
(Individual Intelligence Tests)

व्यक्तिगत बुद्धि परीक्षण दो प्रकार के होते हैं :

(i) शाब्दिक व्यक्तिगत बुद्धि परीक्षण : इन परीक्षणों का प्रयोग उन्हीं व्यक्तियों पर किया जाता है जिन्हें भाषा का ज्ञान और पढ़े–लिखे हैं।
इन परीक्षणों में प्रायः बिने–साइमन परीक्षण विधि तथा टरमन बुद्धि परीक्षण विधि का प्रयोग किया जाता है।
टरमन ने बिने के 54 प्रश्नों के स्थान पर अपनी प्रश्नावली में 10 प्रश्न निर्धारित किये।
इन प्रश्नालियों के आधार पर मानसिक आयु ज्ञात करते हैं तथा इसका वास्तविक आयु से मिलान करके बुद्धि के विषय में निर्णय लेते हैं।

(ii) अशाब्दिक व्यक्तिगत बुद्धि परीक्षण (Non-verbal individual intelligence tests) : ये परीक्षण उन व्यक्तियों के लिए होते हैं जिन्हें भाषा–ज्ञान नहीं होता है।
जो अनपढ़, गूंगे–बहरे या अंधे होते हैं। इन परीक्षणों में मूर्त वस्तुओं, चित्रों, व्यूहों, ज्यामिति, आकृतियों आदि का प्रयोग किया जाता है। इनके साथ व्यक्ति को हाथ से क्रियाएँ करनी पड़ती है।
अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण में निम्नलिखित शामिल है :

(अ) चित्रांकन परीक्षण : इस परीक्षा में बालक को कागज और पेंसिल देकर कोई चित्र (मनुष्य, गाय, भैंस आदि का) खींचने को कहा जाता है।

(ब) चित्रपूर्ति परीक्षण : इस परीक्षा में बालक के सामने एक चित्र प्रस्तुत किया जाता है जिसमें से अनेक वर्गाकार टुकड़े काटकर निकाल दिये जाते है। इसके बाद बालकों से उन वर्गाकार टुकड़ों को उचित स्थान पर रखकर चित्र को पूरा करने के लिए कहा जाता है।
जो बालक चित्र को शीघ्र पूरा कर देते हैं वे तीव्र बुद्धि के समझे जाते हैं।

(स) वस्तु संयोजन परीक्षण : इसका प्रयोग वैक्सलर ने अपने वैक्सलर–वेलव्यु बुद्धि मानक्रम में किया।

(द) भूल–भुलैया : इस परीक्षा में बालकों को कागज पर बना एक ऐसा चित्र दिया जाता है जिसमें लक्ष्य तक पहुंचने के कई मार्ग होते हैं। बालक मार्ग में भटके बिना पेंसिल द्वारा छोटे से छोटा एवं जल्दी से जल्दी मार्ग ढूंढ लेता है वह बुद्धिमान समझा जाता है।

(य) आकृति फलक परीक्षण : इसमें बालक के सामने एक ऐसे तख्ते को प्रस्तुत करते हैं इसमें विभिन्न आकृति के छिद्र होते हैं। छिद्रों में उनके अनुरुप कटे हुए टुकड़ों को उचित स्थान में बैठाना पड़ता है जो बालक, नियम समय में टुकड़ों को ठीक स्थान पर रख देता है उसे बुद्धिमान समझा जाता है।

(ब) सामूहिक बुद्धि परीक्षण

इन परीक्षणों में व्यक्ति समूह की बुद्धि की परीक्षा की जाती है। सामूहिक बुद्धि परीक्षणों का जन्म प्रथम विश्व–युद्ध के समय सन् 1917-1918 में हुआ। सामूहिक बुद्धि परीक्षण में निम्नलिखित परीक्षण शामिल हैं :

(i) आर्मी अल्फा परीक्षण : यह परीक्षण उन लोगों के लिए बनाया गया जो अंग्रेजी पढ़ना तथा लिखना जानते थे।
इन परीक्षणों में अधिकतर भाषा का ही प्रयोग होता है। इनमें शब्दों और संख्याओं पर आधारित बहुत से प्रश्न एक छोटी सी पुस्तिका के रुप में संग्रहित होते हैं।
उत्तर प्रदेश में इलाहाबाद स्थित मनोविज्ञानशाला ने 12, 13 और 15 वर्ष के बालकों के लिए आर्मी अल्फा परीक्षण का निर्माण किया है।

(ii) आर्मी बीटा परीक्षण : यह परीक्षण उन लोगों के लिए बनाया गया था जो अनपढ़ और विदेशी थे। ये भाषा से अनभिज्ञ थे। यह चित्रात्मक परीक्षण है।

बुद्धि मापन में प्रयुक्त आधारभूत प्रत्यय

(अ) वास्तविक आयु (Chronological Age) : यह व्यक्ति के जन्म के समय से, परीक्षा देने के समय तक गिनी जाती है। इसे संक्षेप में C.A. लिखा जाता है।

(ब) मानसिक आयु (Mental Age) : बुद्धि परीक्षण के परिणामों को अधिक प्रामणिक बनाने के लिए मानसिक आयु के विचार को सन 1908 ई. में बिने ने दिया। इसे संक्षेप में M.A. लिखा जाता है।

(स) बुद्धि लब्धि (Intelligence Quotient) : बुद्धि को मापने के लिए टरमन ने बुद्धि लब्धि के विचार का आविष्कार किया।

$$\text{बुद्धि लब्धि} = \frac{\text{मानसिक आयु} \times 100}{\text{वास्तविक आयु}}$$

$$\text{या, I.Q.} = \frac{\text{M.A}}{\text{C.A}} \times 100$$

उदाहरणार्थ : बालक की मानसिक आयु 8 वर्ष है और उसकी वास्तविक आयु 12 वर्ष है तो उसकी बुद्धि लब्धि ?

$$I.Q. = \frac{M.A}{C.A} \times 100$$

$$= \frac{8}{12} \times 100 = 0.66 \times 100 = 66$$

बुद्धि लब्धि बालक या व्यक्ति की सामान्य योग्यता के विकास की गति बताती है।
आयु के साथ–साथ सीमा (21 या 22 वर्ष की आयु तक) मानसिक आयु बढ़ती है और इसलिए बुद्धि बढ़ती है, किन्तु बुद्धि लब्धि स्थिर रहती है।

बुद्धि लब्धि का वर्गीकरण (Classification of Intelligence Quotient)

- **18 वर्ष** : सामान्य बुद्धि बालकों और श्रेष्ठ बालकों की बुद्धि इस आयु तक ही बढ़ती है।
- **20 वर्ष** : अति श्रेष्ठ बालकों की बुद्धि इस आयु तक बढ़ती है।
- **21 वर्ष** : प्रतिभाशाली बालकों की बुद्धि इस आयु तक बढ़ती है।
- टरमन द्वारा प्रतिपादित बुद्धि लब्धि का वर्गीकरण निम्न अनुसार किया गया है :

बुद्धि लब्धि	बुद्धि वर्ग
141 से अधिक	प्रतिभाशाली (Genious)
124 से 140	प्रखर बुद्धि (Very Suerpior)
111 से 125	उत्कृष्ट बुद्धि (Superior)
91 से 110	सामान्य बुद्धि (Average)
71 से 90	मन्द बुद्धि (Dull)
51 से 70	निर्बल बुद्धि (Feebl Minded)
25 से 50	मूर्ख (Moron)
25 से कम	जड़ बुद्धि (Idiot)

बुद्धि परीक्षाओं की उपयोगिता

- विद्यालय प्रवेश, छात्रवृत्तियों आदि के लिए सर्वोत्तम बालकों का चुनाव।
- पिछड़े और मानसिक व शारीरिक दृष्टि से दोष युक्त बालकों का चुनाव।
- बालक अपराधी, असंतुलित और समस्यात्मक क्यों है? वे ऐसे बुद्धिहीन होने के कारण हैं या अन्य कारणों से है?
- कक्षा के बालकों को तीव्र बुद्धि, साधारण बुद्धि और मंद बुद्धि बालकों में विभाजित करके उन्हें अलग–अलग शिक्षा दी जा सकती है।
- बालकों की विशेष योग्यताओं का ज्ञान।
- बालक की व्यावसायिक योग्यताओं का ज्ञान।
- बालक की सफलताओं के बारे में भविष्यवाणी।
- बुद्धि परीक्षाओं द्वारा उद्योगों के कर्मचारियों, अधिकारियों और विशेषज्ञों के चुनाव में भी सहायता ली जा सकती है।

उपलब्धि परीक्षण

विद्यालय में पढ़ाये जाने वाले विभिन्न विषयों में अर्जित की गई योग्यता की जांच परीक्षा द्वारा की जाती है। इस परीक्षा को ज्ञानार्जन या उपलब्ध परीक्षा या परीक्षण कहते हैं।

इसकी सहायता से विद्यालय में पढाये जाने वाले विषयों और सिखाई जाने वाली कुशलताओं में छात्रों की प्रगति का ज्ञान प्राप्त किया जाता है।

उपलब्धि परीक्षण के प्रकार
(अ) परीक्षण के उद्देश्य की दृष्टि से

- **मौखिक परीक्षण** : इस परीक्षण में बालकों से उनकी अर्जित ज्ञान पर मौखिक प्रश्न पूछे जाते हैं।
- **क्रियात्मक परीक्षण** : इस प्रकार के परीक्षण में बालकों के ज्ञान की जांच करने के लिए चित्रों, लकड़ी के टुकड़ों आदि का प्रयोग किया जाता है।
- **निबंधात्मक परीक्षण** : इस प्रकार के परीक्षण में बालकों को निबन्ध के रुप में प्रश्नों के उत्तर देने होते हैं।
- **वस्तुनिष्ठ परीक्षण** : इस परीक्षण में बालकों को संकेत लिखकर उत्तर देने पड़ते हैं। वर्तमान में इनका महत्व दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है।
- इस प्रणाली में बालकों द्वारा अर्जित ज्ञान का वास्तविक मापन होता है।
- **जे.एम.राइस** : वस्तुनिष्ठ परीक्षणों का विकास करने का श्रेय इन्हें दिया जाता है।
- वस्तुनिष्ठ परीक्षा में विभिन्न परीक्षक स्वतंत्रतापूर्वक उत्तर–पुस्तिका जांचने के बाद समान उत्तर को समान अंक देते हैं।

ज्ञान लब्धि

ज्ञान आयु और मानसिक आयु का अनुपात होता है।
ज्ञान आयु : जिस प्रकार बुद्धि परीक्षा द्वारा मानसिक आयु ज्ञात करते हैं उसी प्रकार एक निश्चित आयु के लिए निर्धारित उपलब्धियाँ या ज्ञानार्जन परीक्षा द्वारा ज्ञान आयु या उपलब्धि आयु ज्ञात करते हैं।

ज्ञान लब्धि : बालक के ज्ञानार्जन की गति को जांचने हेतु इस प्रत्यय का अनुप्रयोग किया जाता है। ज्ञान लब्धि अधिक होने पर ज्ञानार्जन तीव्र होता है।

सूत्र : ज्ञान लब्धि (Achievement Quotient) =

$$\frac{\text{ज्ञान आयु}}{\text{मानसिक आयु}} \times 100$$

औसत बालक की उपलब्धि लब्धि या ज्ञान लब्धि 100 इकाई माना जाता है।
उदाहरणार्थ : यदि किसी बालक की ज्ञान आयु 12 वर्ष है और उसकी मानसिक आयु 10 वर्ष है तो ज्ञान लब्धि =

$$\frac{12}{10} \times 100 = 120$$

अतः बालक की ज्ञानार्जन गति अधिक है।

शिक्षा लब्धि (Educational Quotient)

ज्ञान आयु और वास्तविक आयु के आनुपातिक स्वरुप को शिक्षा लब्धि कहते हैं।

औसत बालकों की शिक्षा लब्धि 100 मानी जाती है।

शिक्षा लब्धि 100 से कम होने पर बालक शिक्षा में पिछड़ा हुआ माना जाता है, अधिक होने पर बालक शिक्षा में अग्रणी है। शिक्षक ऐसे बालकों की कमजोरियों का पता लगाकर उन्हें दूर कर सकता है एवं अधिगम को अधिक प्रबल बना सकता है।
सूत्र : शिक्षा लब्धि (Educational Quotient) =

$$\frac{\text{ज्ञान आयु}}{\text{वास्तविक आयु}} \times 100$$

उपलब्धि परीक्षणों के उपयोग

थार्नडाइक व हैगेन के अनुसार उपलब्धि परीक्षणों का शिक्षकों के लिए निम्नलिखित उपयोग है :

- **श्रेणी विभाजन** : इस परीक्षाओं के द्वारा छात्रों को उनकी उपलब्धियों के आधार पर कई श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है।
- **वर्गीकरण** : उपलब्धि परीक्षाओं में प्राप्त अंकों से बालकों के मानसिक स्तर पर सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। अंतः शिक्षण के लिए उन्हें मानसिक स्तर के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है।
- **प्रेरणा** : इन परीक्षाओं के परिणाम बताकर छात्रों को ज्ञानार्जन के लिए प्रेरित किया जा सकता है।
- **व्यक्तिगत शिक्षण** : इन परीक्षाओं की सहायता से प्रतिभाशाली बालकों को समय से पहले आगे की कक्षा दी जा सकती है और मंद बुद्धि बालकों की सहायता करके उन्हें सामान्य बालकों के स्तर पर लाया जा सकता है।
- **शैक्षिक निर्देशन** : इन परीक्षाओं द्वारा बालकों की क्षमता को जानकर भविष्य के लिए उन्हें निर्देशन शैक्षिक, व्यावसायिक तथा व्यक्तिगत रुप से दिया जा सकता है।
- **छात्रों का परामर्श** : इस परीक्षाओं से बालक की अभिरुचियों और कार्य–क्षमताओं का ज्ञान प्राप्त होता है। इसके आधार पर उनके भावी अध्ययन के सम्बन्ध में परामर्श देकर उनकी सहायता की जा सकती है।
- **अध्यापक कार्य का परीक्षण** : ये परीक्षाएं अध्यापक के कार्यो का भी निरीक्षण करती हैं। यदि किसी परीक्षा में अधिकांश छात्र कम अंक प्राप्त करते हैं तो इसका तात्पर्य है कि या तो शिक्षण विधि अच्छी नहीं है या विषय सामग्री छात्रों के मानसिक स्तर से अनुकूल नहीं थी।

इस प्रकार वह अपनी शिक्षण विधि और विषय सामग्री में परिवर्तन करके, अच्छे छात्रों के अनुकूल बना सकता है।

EduBull.com

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

☞ प्रतिभाशाली बालकों की पहचान नहीं की जा सकती है :
(a) अध्यापक द्वारा
(b) ग्रंथपाल द्वारा
(c) विद्यालयी संचयी आवर्ती पत्रक द्वारा
(d) सहपाठी द्वारा (d)

☞ जड़ बालक की शारीरिक विशेषता नहीं है :
(a) इनकी अधिकतम लंबाई तीन फुट तक होती है।
(b) हाथ–पैर की तुलना में धड़ अधिक बड़ा होता है।
(c) इनका बौद्धिक स्तर 50 से नीचे होता है।
(d) ये बालक वाचाल होते हैं। (d)

☞ धीमी गति से सीखने वाले बालक की बुद्धि लब्धि होती है :
(a) 75 से 90 मध्य (b) 60 से 70 मध्य
(c) 100 से 110 मध्य (d) 40 से 60 मध्य (a)

☞ मंद बुद्धि बालकों की विशेषता नहीं है :
(a) स्मृति की अत्यंत कमजोर निस्पादन
(b) भाषा एवं वाग्मिता की समस्या
(c) अल्प शैक्षणिक उपलब्धियाँ
(d) आत्म संकल्पना की प्रचुरता (d)

☞ प्रशिक्षण योग्य मंद बुद्धि बालक की बुद्धि लब्धि होती है :
(a) 75 से 90 मध्य (b) 50 से 70 मध्य
(c) 25 से 50 मध्य (d) 70 से 80 मध्य (c)

☞ जब मनुष्यों की बौद्धिक प्रक्रियाओं की अभिव्यक्ति कम्प्यूटर द्वारा होती है, तो इसे कहा जाता है?
(a) मशीन बुद्धि (b) स्वाभाविक बुद्धि
(c) कृत्रिम बुद्धि (d) पृथक्–बुद्धि (c)

☞ एक सफल पेंटर में किस तरह की बुद्धि की प्रबलता होती है?
(a) अमूर्त बुद्धि (b) मूर्त बुद्धि
(c) सामाजिक बुद्धि (d) तरल बुद्धि (a)

☞ प्रतिभाशाली बालक की बुद्धि लब्धि होती है?
(a) 150 (b) 140
(c) 130 (d) 120 (a)

☞ निम्न में से थार्नडाइक के अनुसार कौन सा बुद्धि का प्रकार नहीं है?
(a) मूर्त बुद्धि (b) अमूर्त बुद्धि
(c) सामाजिक बुद्धि (d) असामाजिक बुद्धि (d)

☞ आधुनिक विधि से बुद्धि मापन का इतिहास कब से माना जाता है?
(a) 1854 (b) 1875
(c) 1863 (d) 1902 (b)

☞ बुद्धि लब्धि के अनुसार बालक होते हैं :
(a) मंद बुद्धि (b) औसत
(c) प्रखर बुद्धि (d) उपर्युक्त सभी (d)

☞ किसी बालक की वास्तविक आयु 16 वर्ष है और उसकी मानसिक आयु भी उतनी ही है, तो उसकी बुद्धि लब्धि क्या होगी :
(a) 46 (b) 12
(c) 546 (d) 100 (d)

☞ भारत में बुद्धि परीक्षण का आरंभ कब हुआ?
(a) 1920 (b) 1930
(c) 1923 (d) 1938 (a)

☞ किस सिद्धान्त के अनुसार बुद्धि सभी मानसिक क्रियाओं पर शासन करती है :
(a) एक सत्तात्मक (b) द्वि–तत्व
(c) बहु सत्तात्मक (d) संघ सत्तात्मक (a)

☞ बुद्धि के संघ सत्तात्मक सिद्धान्त के समर्थक गाडफ्रे थॉमसन से संबंधित देश है :
(a) जर्मनी (b) स्विट्जरलैण्ड
(c) ब्रिटेन (d) यू.एस.ए. (b)

☞ बुद्धि का वह सिद्धान्त जिसमें बुद्धि को विभिन्न मानसिक योग्यताओं का समूह माना गया है :
(a) बहु तत्व सिद्धान्त
(b) एकात्मक सिद्धान्त
(c) बहु मानसिक योग्यता सिद्धान्त
(d) द्वि–तत्व सिद्धान्त (c)

☞ जेम्स ड्रेवर : "माता–पिता की शारीरिक और मानसिक विशेषताओं का संतान में हस्तांतरण होना वंशानुक्रम है।"

☞ पीटरसन : "व्यक्ति अपने माता–पिता के माध्यम से पूर्वजों की भी विशेषताएँ प्राप्त करता है, उसे वंशानुक्रम कहते हैं।"

☞ बी.एन.झाः "वंशानुक्रम व्यक्ति की जन्मजात विशेषताओं का पूर्ण योग है।"

वंशानुक्रम के सिद्धांत

	सिद्धांत	संबंधित व्यक्ति
☞	जनन–द्रव्य की निरंतरता का सिद्धांत :	वीजमैन।
☞	उपार्जित गुणों का असंचरण का सिद्धांत :	वीजमैन।
☞	उपार्जित गुणों का संचरण का सिद्धांत	पावलॉव।
☞	जीव–सांख्यिकी सिद्धांत :	गाल्टन।
☞	प्रधान प्रकार की ओरन प्रत्यागमन का सिद्धांत	ग्रेगर जॉन मेंडल।

☞ वैज्ञानिक संदर्भो में वंशानुक्रम एक जैविकीय प्रत्यय है जो आनुवंशिकी के सिद्धांतों पर आधारित है।

☞ प्राणिशास्त्रीय या जैविकीय विरासत – एक पीढ़ी द्वारा दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित किये जाने वाले विशिष्ट गुण अथवा लक्षण।

वंशानुक्रम के सिद्धांत
(Theories of Heredity)

वंशानुक्रम की क्रिया–विधि के अध्ययन और परीक्षण के पश्चात् वैज्ञानिकों ने कुछ सिद्धांत प्रतिपादित किये हैं, जो निम्नलिखित है :

1. जनन–द्रव्य की निरंतरता का सिद्धांत :
इस सिद्धांत के अनुसार शरीर का निर्माण करने वाला जनन–द्रव्य कभी नष्ट नहीं होता है।

2. उपार्जित गुणों के असंचरण का सिद्धांत :
इस नियम के अनुसार, माता–पिता द्वारा अपने जीवन काल में उपार्जित गुणों का संचरण या हस्तांतरण उनकी संतानों में नहीं है क्योंकि इन गुणों का प्रभाव जनन–द्रव्य पर नहीं होता है।
इस सिद्धांत की पुष्टि हेतु वीजमैन ने चूहों पर प्रयोग किये। इन्होंने कुछ चूहों को लिया और उनकी मूँछें काट दी। इस प्रकार वह कई पीढ़ियों तक पूँछें काटता रहा किन्तु किसी भी पीढ़ी में कोई पूँछ विहीन चूहा पैदा नहीं हुआ।

3. उपार्जित गुणों के संचरण का सिद्धांत :
इस सिद्धांत के प्रतिपादन हेतु पॉवलव ने चूहों पर प्रयोग किये। इन्होंने सफेद चूहों पर प्रयोग करके देखा कि पहली पीढ़ी के चूहे 30 बार घंटी सुनने पर भोजन पाने के लिए आते थे। यह प्रयोग इन्होंने इन चूहों की आगे उत्पन्न होने वाली पीढ़ियों पर भी किया। उन्होंने पाया कि पांचवीं पीढ़ी में चूहे 5 बार ही घंटी सुनकर भोजन प्राप्त करने के लिए आ जाते हैं।
उपार्जित गुण अगली पीढ़ी को संचरित होते हैं जिनका प्रभाव जनन–द्रव्य पर पड़ता है।

4. जीव–सांख्यिकी सिद्धांत :

इस सिद्धांत का प्रतिपादन मनोवैज्ञानिक गाल्टन ने किया।

इनके अनुसार जीव के लक्षण उसे माता–पिता ही नहीं वरन उसके पूर्वजों से भी प्राप्त होते हैं। व्यक्ति की समस्त विशेषताओं के कुल योग का आधा उसे माता–पिता से प्राप्त होता है, एक–चौथाई, दादा–दादी से, एक–आंठवा भाग परदादा–परदादी से तथा इसी अनुपात में वह गुण अपने पूर्वजों से प्राप्त करता है।

5. मेंडल का सिद्धांत :

इस सिद्धांत के अनुसार वर्णसंकर प्राणी या जीव अपने मौलिक रुप की ओर अग्रसर होती है।

मेंडल ने मटर पर प्रयोग करके यह नियम प्रतिपादित किया।

मेंडल द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत से यह निष्कर्ष निकलता है कि प्रकृति सदैव प्रजाति के गुणों की रक्षा करने का प्रयास करती है। अर्थात् वह यह चाहती है कि केवल विशुद्ध प्रजाति ही आगे बढ़े।

उपर्युक्त सिद्धांत एक ही माता पिता से उत्पन्न सन्तानों में भिन्नता के कारणों को स्पष्ट करने में सहायक होता है।

वंशानुक्रम के नियम

(Laws of heredity)

1. समानता का नियम (Law of Resemblance) : 'समान, समान को जन्म देता है' बिल्ली, बिल्ली के बच्चे को और मानव, मानव के बच्चे को जन्म देते हैं।
   अंतः बुद्धिमान माता पिता की संतान बुद्धिमान और सामान्य बुद्धि वाले माता पिता की संतान भी सामान्य बुद्धि की ही होगी।
2. भिन्नता का नियम (Law of Variation) : एक ही माता पिता की सन्तानें एक दूसरे से समान होते हुए भी बुद्धि, रंग और स्वभाव में भिन्न होती हैं।
3. प्रत्यागमन का नियम (Law of Regression) : तीव्र बुद्धि के माता पिता की संतान मंद बुद्धि और मंद बुद्धि वाले माता पिता की संतान प्रखर बुद्धि की ही होती है अर्थात् संतान में, माता पिता के विपरीत गुण पाये जाते हैं। इस प्रक्रिया को प्रत्यागमन कहते हैं।

मनोवैज्ञानिक सोरेन्सन के अनुसार : "बहुत प्रतिभाशाली माता पिता के बच्चों में कम प्रतिभाशाली होने की प्रवृत्ति और बहुत निम्नकोटि के माता पिता के बच्चों में कम निम्न कोटि होने की प्रवृत्ति ही प्रत्यागमन है।"

वातावरण / पर्यावरण

बाह्य वातावरण में वे सभी परिस्थितियाँ आती हैं जो सामूहिक या मिश्रित रुप से उसके विकास और व्यवहार को प्रभावित करती रहती है।

सभी सामाजिक परिस्थितियाँ, रीति–रिवाज, रुढ़ियाँ एवं रहन सहन के ढंग सामाजिक वातावरण को बनाते हैं।

☞	वातावरण	मानव विकास का प्रमुख कारक।
☞	व्यक्ति	वंशानुक्रम और वातावरण का प्रतिफल है।
☞	सामाजिक वंशानुक्रम	मनोवैज्ञानिक वातावरण को कहते हैं।
☞	सामाजिक दाय	सामाजिक परिस्थितियाँ।
☞	जॉन लॉक	बालक का विकास वातावरण के अनुसार होता है।

☞ पर्यावरण या वातावरण वह वस्तु हैं जो व्यक्ति को चेतन या अचेतन रुप में चारों ओर ढंके या घेरे हुए है।

☞ वातावरण के अंतर्गत वे सभी तत्व सम्मिलित किये जाते हैं जो व्यक्ति के जीवन, उसके व्यसवहार और सामाजिक सम्बन्धों को प्रभावित करते हैं। इसकी कारण मनोवैज्ञानिक इसे सामाजिक वंशानुक्रम भी कहते हैं।

☞ वह सब कुछ वातावरण ही है जो व्यक्ति को प्रभावित करता है।

☞ रास के अनुसार : "वातावरण कोई बाहरी शक्ति है जो हमें प्रभावित करती है।"

☞ जिसबर्ट के अनुसार : "वातावरण वह सब कुछ है जो किसी वस्तु को चारों ओर से घेरे रहता है और उस पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालता है।"

☞ बोरिंग लैंगफील्ड तथा वेल्ड के अनुसार : "व्यक्ति का वातावरण उन सभी उद्दीपकों का योग है जिनको वह गर्भाधान से लेकर मृत्यु तक ग्रहण करता है।"

☞ वुडवर्थ के अनुसार : "वातावरण में वह सब बाह्य तत्व आ जाते हैं, जिन्होंने व्यक्ति को जीवन आरंभ करने के समय से प्रभावित किया है।"

☞ डगलस व हालैंड के अनुसार : "वातावरण शब्द का प्रयोग उन सब बाह्य शक्तियों, प्रभावों और दशाओं का सामूहिक रुप से वर्णन करने के लिए किया जाता है, जो जीवित प्राणियों के जीवन, स्वभाव, व्यवहार, बुद्धि विकास और परिपक्वता पर प्रभाव डालते हैं।"

वातावरण के प्रकार

(Types of Environment)

(1) आंतरिक वातावरण : आंतरिक वातावरण गर्भावस्था की परिस्थितियों से है।
इस वातावरण को अन्तर–कोशिय वातावरण कहते हैं।

(2) बाह्य वातावरण : इस वातावरण में वे सभी परिस्थितियाँ आती है जो सामूहिक या मिश्रित रुप से उसके विकास और व्यवहार को प्रभावित करती है। बाह्य वातावरण को निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है :

(अ) भौतिक वातावरण : इसे प्राकृतिक वातावरण भी कहते हैं। किसी न किसी प्रकार से व्यक्ति को आजन्म प्रभावित करती रहती हैं।

(ब) सामाजिक वातावरण : इसका तात्पर्य उन सभी परिस्थितियों से है जो बालक के शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास पर प्रभाव डालती है।
सामाजिक–वातावरण, सामाजिक व्यवहारों तथा सम्बन्धों को स्पष्ट एवं प्रत्यक्ष रुप से प्रभावित करता है।

सामाजिक वातावरण को निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है:

(i) आर्थिक वातावरण : इसमें समाज की आर्थिक प्रक्रियाएँ – सम्पत्ति का उपयोग, उत्पादन तथा विनियम आदि सम्मिलित होती है।

(ii) सांस्कृतिक वातावरण : इसका निर्माण संस्कृति और सभ्यता से सम्बन्धित बातें – जन–रीतियाँ, रुढ़ियाँ, प्रथाएँ, संस्थाएँ, वैज्ञानिक अन्वेषण, रहन–सहन का ढंग आदि द्वारा होता है।

(iii) मनः सामाजिक वातावरण : समाज में एक व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति पर पड़े प्रभाव को मनः सामाजिक परिस्थितियाँ कहते हैं। इस वातावरण के निर्माण में व्यक्तियों का महत्वपूर्ण स्थान होता है।

वातावरण का महत्व एवं प्रभाव

(Importance of Environment and its Influence on Child)

☞ वातावरण को मानव–विकास का प्रमुख कारक बताया गया है।

☞ वाट्सन के अनुसार : "मुझे नवजात शिशु दे दो, मैं उसे डॉक्टर, वकील, चोर या जो चाहूँ बना सकता हूँ।"

☞ जॉन लॉक के अनुसार, जन्म के समय बालक का मस्तिष्क एक कोरी स्लेट के समान होता है जिसके ऊपर कुछ भी लिखा जा सकता है अर्थात् जन्म के बाद बालक को जिस

प्रकार के वातावरण में रखा जाता है उसी के अनुसार उसका विकास होता है।

- रॉबर्ट ओवेन के अनुसार व्यक्ति का विकास पूर्णतया वातावरण पर निर्भर है। जिस समाज में शिक्षा की अच्छी व्यवस्था है वहां के व्यक्ति अच्छी प्रगति करते हैं।
- वातावरण, बालक के शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक आदि सभी अंशों को प्रभावित करता है।

वंशानुक्रम और वातावरण का सापेक्षिक महत्व

क्रो व क्रो के अनुसार : "व्यक्ति का निर्माण न केवल वंशानुक्रम और न केवल वातावरण से होता है। वास्तव में वह जैविक दाय और सामाजिक विरासत के एकीकरण की उपज है।"

मानव विकास में दोनों का अपने–अपने स्थान पर महत्व है और उचित विकास के लिए दोनों में से किसी की भी अवहेलना नहीं की जा सकती है। दोनों ही मानव–विकास में सापेक्ष प्रभाव डालते हैं और एक–दूसरे के पूरक एवं सहायक है।

लैंडिस और लैंडिस ने अपनी पुस्तक 'Social Living' में लिखा है कि "वंशानुक्रम विकसित होने की क्षमताएँ प्रदान करता है, किन्तु इन क्षमताओं के विकास के लिए वातावरण से अवसर अवश्य प्राप्त होने चाहिए। वंशानुक्रम हमें हमारी कार्यशील पूंजी देता है और वातावरण हमें इसका उपयोग करने का अवसर देता है।"

विभिन्न परीक्षणों द्वारा भी सिद्ध हो चुका है कि व्यक्ति, वंशानुक्रम और वातावरण का प्रतिफल है।

व्यक्ति = वंशानुक्रम (H) × वातावरण (E)

वंशानुक्रम सीमा निर्धारित कर देता है। बालक को मंद बुद्धि का गुण उसके वंशानुक्रम से प्राप्त होता है।

वातावरण की सहायता से उसे प्रतिभावान तो नहीं बनाया जा सकता है किन्तु अच्छा वातावरण देकर उसकी बुद्धि में वृद्धि अवश्य की जा सकती है। इस प्रकार वंशानुक्रम और वातावरण का संक्षेप महत्व है और दोनों एक–दूसरे के बिना अधूरे हैं।

मॉर्स और विंगो के अनुसार : "मानव व्यवहार की प्रत्येक विशेषता, वंशानुक्रम और वातावरण की अंतक्रिया का फल है।"

शिक्षा में वंशानुक्रम का महत्व
(Importance of Heredity in Education)

- वंशानुक्रम के ज्ञान से बालक के अभद्र या अवांछनीय व्यवहार को सुधारा जा सकता है।
- कुछ बालकों में वंशानुक्रम जनित विकार आ जाते हैं। ऐसे बालकों को सहानुभूतिपूर्वक शिक्षा देनी चाहिए।
- वंशानुक्रम में, समानता, भिन्नता और प्रत्यागमन के नियमों के पूर्ण ज्ञान से बालकों को भावन–ग्रंथियों से बचाया जा सकता है।
- बालक अपना अधिकांश समय अपने परिवार, पड़ोस, मोहल्ले तथा खेल के मैदान में व्यतीत करता है। अतः शिक्षक को चाहिए कि इन स्थानों के वातावरण का ज्ञान होने पर वह बालक को उचित निर्देशन देकर उसके विकास को सही दिशा प्रदान करें।
- न्यूमैन तथा फ्रीमैन ने जुड़वाँ बच्चों पर अध्ययन करके यह सिद्ध किया कि शैक्षिक उपलब्धियों, व्यक्तित्व और स्वभाव पर वातावरण का अधिक प्रभाव पड़ता है।

  इसके फलस्वरुप शिक्षक कक्षा के वातावरण को अनुकूल बनाने का प्रयत्न कर सकता है।
- अनुकूल वातावरण मिलने पर बालक सदाचारी और चरित्रवान बनता है तथा प्रतिकूल वातावरण मिलने पर वह दुराचारी और चरित्रहीन हो सकता है।
- शिक्षा बालक की अन्तर्निहित शक्तियों का विकास करती है। इस अन्तर्निहित शक्तियों का स्वाभाविक विकास उपयुक्त वातावरण में ही होता है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

- स्टीफेन्स के अनुसार बालकों को निम्न वातावरण से हटाकर उत्तम वातावरण में रखा जाता है, तो :
  (a) उनका शारीरिक विकास अधिक होता है
  (b) उनकी बुद्धिलब्धि में वृद्धि होती है
  (c) वे अधिक सामाजिक होते हैं
  (d) बर्हिमुखी हो जाते हैं (b)
- बालक के विकास की दिशा निश्चित करता है :
  (a) वातावरण
  (b) वंशानुक्रम
  (c) वातावरण एवं वंशानुक्रम
  (d) न वातावरण न वंशानुक्रम (a)
- "विभिन्न प्रजातियों के शारीरिक अंतर का कारण वंशानुक्रम न होकर वातावरण है।" यह मत है :
  (a) फ्रेजबॉन्स का (b) क्लार्क का
  (c) कैन्डोल का (d) गोर्डन का (a)
- पर्यावरण बालक को प्रेरित करता है :
  (a) स्वाध्याय के लिए (b) अरोचक शिक्षा के लिए
  (c) हत्तोत्साह के लिए (d) इनमें से कोई नहीं (a)

विशिष्ट बालक
(Exceptional Children)

☞	टरमन और मैरिल :	इन्होंने 140 बुद्धि लब्धि से ऊपर वाले बच्चों को प्रतिभावान माना है।
☞	योजना विधि :	प्रतिभाशाली बालकों के शिक्षण हेतु सर्वश्रेष्ठ।
☞	सृजनात्मक बालक :	इनकी बुद्धिलब्धि लगभग 110 होती है।
☞	पिछड़े बालक :	इनकी शैक्षणिक लब्धि 90 से 80 तक होती है।
		इनकी बुद्धि लब्धि 70 से कम मानी जाती है।
☞	ब्रेल	पूर्ण रुप से अंधे बालकों को शिक्षा देने हेतु प्रयुक्त प्रणाली।

विशिष्ट बालक वे हैं जिनमें शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, भावनात्मक, संवेगात्मक आदि विकास में अंतर होने के कारण उनके गुणों में कुछ विशिष्टताएँ आ जाती है जिनके कारण वह दूसरों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लेता है।

प्रतिभाशाली बालक
(Gifted Children)

- स्किनर व हैरीसन के अनुसार : "प्रतिभाशाली" शब्द का प्रयोग उन एक प्रतिशत बालकों के लिए किया जाता है जो सबसे अधिक बुद्धिमान होते हैं।"
- मनोवैज्ञानिक टरमन के अनुसार प्रतिभाशाली बालक विद्यालय जाने से पहले घर पर ही लिखना–पढ़ना सीख लेते हैं। बालक साहसी जीवन पसंद करते हैं जबकि बालिकाएं घरेलू जीवन पसंद करती हैं।
- बुद्धि लब्धि प्रतिभावान बालकों के वर्गीकरण का कोई विश्वसनीय मापदंड नहीं है।

प्रतिभाशाली बालक

- विटी ने प्रतिभाशाली बालकों की कुछ विशेषताएँ बताई है, जो निम्नलिखित है :
- प्रतिभाशाली बालक दूसरों का सम्मान करते हैं।
- ये बालक खेल में अधिक रुचि लेते हैं।

- ☞ इनमें धैर्य होता है और संवेगात्मक अस्थिरता भी अधिक होती है।
- ☞ इनमें से 96% अनुशासन मानने वाले होते हैं।
- ☞ मनोवैज्ञानिक स्किनर और हैरीमन के अनुसार प्रतिभाशाली बालकों की विशेषताएँ :
- ☞ दैनिक कार्यो में विभिन्नता।
- ☞ सामान्य ज्ञान, सामान्य बालकों की अपेक्षा श्रेष्ठ।
- ☞ पढ़ने–लिखने में अधिक रुचि।
- ☞ अमूर्त एवं कठिन विषयों में अधिक रुचि।
- ☞ आश्चर्यजनक अंतर्दृष्टि का होना।
- ☞ विद्यालय के कार्यो के प्रति उदासीन।
- ☞ सामान्य बालकों की अपेक्षा सामाजिकता का गुण कम।
- ☞ शारीरिक गुणों में सामान्य बालकों की तुलना में श्रेष्ठ।
- ☞ दूरदर्शी एवं उच्च वंश परंपरा से सम्बन्धित।
- ☞ कार्य क्षमता एवं अध्ययन योग्यता अधिक।
- ☞ अवधान योग्यता।
- ☞ प्रतिभावान बालक नियमों और सिद्धांतों का स्वयं सामान्यीकरण कर लेते हैं, वातावरण की प्रत्येक वस्तु के बारे में ज्ञान प्राप्त करने के लिए उत्सुक रहते हैं।

संवेगात्मक व सामाजिक दृष्टि से अधिक दृढ़ होते हैं।

प्रतिभाशाली बालक ....

- ☞ खेल व अध्ययन में अधिक रुचि,
- ☞ अधिक संवेगात्मक अस्थिरता,
- ☞ आश्चर्यजनक अंतदृष्टि,
- ☞ सामाजिकता का गुण कम,
- ☞ कार्य क्षमता अधिक,
- ☞ सहपाठियों के साथ असमायोजन,

प्रतिभाशाली बालकों की शिक्षा

- ☞ ऐसे बालकों को विशेष शिक्षण विधि तथा व्यक्तिगत शिक्षण पद्धति से शिक्षा देनी चाहिए।
- ☞ कुछ मनोवैज्ञानिक के अनुसार प्रतिभाशाली बालकों को सामान्य बालकों से अलग विशिष्ट कक्षा और विशिष्ट विद्यालयों में शिक्षा प्रदान करनी चाहिए।

प्रतिभाशाली बालकों की समस्याएँ

- ☞ सहपाठियों के साथ समायोजन न कर पाना।
- ☞ घर व समाज के साथ समायोजन की समस्या : प्रतिभावान बच्चे समाज, परिवार व कक्षा में समायोजन नहीं कर पाते।
- ☞ विद्यालय में समायोजन की समस्या : प्रतिभावान बालक साधारण कक्षा शिक्षण से संतुष्ट नहीं हो पाते। अतः उनमें व्यवहार संबंधी समायोजन दोष (अपनी बड़ाई करना कक्षा से भाग जाना, दलबंदी आदि) उत्पन्न हो जाते हैं।

सृजनशील बालक

सृजन वह अवधारणा है जिसमें उपलब्ध साधनों से नवीन या अनजानी वस्तु, विचार या धारणा को जन्म दिया जाता है। सृजनात्मक से अभिप्राय है रचना सम्बन्धी योगदान, नवीन उत्पाद की रचना।

सृजनाशीलता : वेबस्टर शब्दकोश के अनुसार सृजनशीलता शब्द करे जिसका अर्थ है : अस्तित्व में आना या उगना से बना है।

विशेषण के रुप में Creative का अर्थ योग्यता, शक्ति, कल्पनाशील होता है तथा Creativity = ability to create होता है।

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से सृजनात्मक स्थिति अन्वेषणात्मक होती है।

रुश के अनुसार : "सृजनात्मकता मौलिकता वास्तव में किसी भी प्रकार की क्रिया में घटित होती है।"

मेडनिक : "सृजनात्मक चिंतन में साहचर्य के तत्वों का मिश्रण रहता है जो विशिष्ट आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु संयोगशील होते हैं या किसी अन्य रुप में लाभदायक होते हैं। नवीन संयोग के विचार जितने कम होंगे, सृजनात्मकता की संभावना उतनी ही अधिक होगी।"

स्टेन : "जब किसी कार्य का परिणाम नवीन हो, जो किसी समय में समूह द्वारा उपयोगी मान्य हो, वह कार्य सृजनात्मकता कहलाता है।"

जेम्स ड्रेवर : "सृजनात्मकता मुख्यतः नवीन रचना या उत्पादन में होती है।"

सृजनशील बालक ......

- ☞ अन्वेषणात्मक प्रवृत्ति,
- ☞ नवीन कार्य के लिए जिज्ञासु,
- ☞ अधिक संवेदनशील,
- ☞ मौलिकता,
- ☞ तर्क एवं चिंतन से प्रभावित करने वाले।

सृजनात्मक बालक की विशेषता

- ☞ तात्कालिक स्थिति से परे जाने की योग्यता : मौलिकता के कारण वे नवीन आविष्कार करने के योग्य होते हैं।
- ☞ समस्या की पूनर्व्याख्या : ये बालक समस्या की व्याख्या अपने ढंग से करते हैं। ये लकीर के फकीर नहीं होते।
- ☞ सामंजस्य : ये बालक असामान्य किन्तु प्रासंगिक विचारों तथा तथ्यों के साथ सामंजस्य स्थापित करते हैं।
- ☞ विचारों में परिवर्तन : ये अपने तर्क, चिंतन तथा प्रमाण से अन्य व्यक्तियों की सोच की दिशा बदल सकते हैं।

सृजनात्मक बालक पहचान

1. स्वतंत्र निर्णय क्षमता : सृजनशील बालकों की स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता उच्च होती है।
2. परिहास प्रियता : सृजनशील बालक खुशमिजाज होते हैं।
3. उत्सुकता : ये नवीन कार्य करने के लिए जिज्ञासु होते हैं।
4. संवेदनशीलता : उनमें संवेदनशीलता अधिक पाई जाती है।
5. स्वायत्तता : इनमें स्वायत्तता का भाव अधिक होता है।

सृजनात्मकता के परीक्षण

- ☞ चित्रपूर्ति परीक्षण : इसमें अपूर्ण चित्रों को पूर्ण करना होता है।
- ☞ वृत्त परीक्षण : इस वृत्त में चित्र बनाये जाते हैं।
- ☞ नवीन खिलौनों का प्रयोग : चूने के खिलौनों द्वारा नवीन विचारों को लेखबद्ध करके सृजनात्मकता पर बल दिया जाता है।

----

3 : 11

- ☞ टीन के डिब्बे : खाली डिब्बों से नवीन वस्तुओं का सृजन कराया जाता है।

बालकों में सृजनात्मकता का विकास करने के उपाय

- ☞ समस्या के स्तरों की पहचान
- ☞ तथ्यों का अधिगम
- ☞ स्तरानुकूल विषय सामग्री का उपयोग
- ☞ पाठ्य सहगामी क्रियायें
- ☞ विभिन्न उत्तर देने की स्वतंत्रता देना
- ☞ वस्तुओं से संबंध स्थापित करना
- ☞ मौलिकता एवं लचीलेपन को प्रोत्साहित करना
- ☞ भय एवं झिझक से मुक्ति
- ☞ स्वस्थ आदतों का विकास करना
- ☞ सृजनात्मक अभिव्यक्ति हेतु उचित वातावरण देना
- ☞ समुदाय के सृजनात्मक साधनों का उपयोग
- ☞ औसत उदाहरण एवं आदर्श प्रस्तुत करना
- ☞ छात्रों में अपना मूल्यांकन स्वयं करने की प्रवृत्ति का विकास

पिछड़े बालक

(Backward Children)

इसमें वे आते हैं जो कक्षा में किसी बात को बार–बार समझाने पर भी नहीं समझते हैं।

ये बालक अन्य समान आयु तथा योग्यता वाले छात्रों की तुलना में कम प्रगति करते हैं। पिछड़ा हुआ बालक वह है –

पिछड़े बालक की शिक्षा ....

☞ विशिष्ट कक्षाओं की स्थापना,
☞ व्यावहारिक शिक्षक की नियुक्ति,
☞ विशेष पाठ्यक्रम,
☞ हस्तशिल्प की शिक्षा,

पिछड़े बालकों के प्रकार

1. मानसिक दोष के कारण पिछड़े बालक : आंख का कमजोर होना, हकलाना या तुतलाना, कम सुनना आदि।
2. मानसिक दृष्टि से पिछड़े बालक : मानसिक विकास समस्याएँ होने के कारण उनकी बुद्धि लब्धि 80 से
3. संवेगात्मक दृष्टि से पिछड़े बालक : इन बालकों में चिंता, निराशा, तनाव एवं उदासीनता के भाव उत्पन्न होते हैं।
4. शिक्षा का अभाव से पिछड़े बालक : विद्यालय में शिक्षा प्राप्त नहीं हो पाती है।
5. वातावरण और परिस्थितियों के कारण : घर–परिवार का वातावरण, आर्थिक स्थिति तथा उनका सामाजिक व सांस्कृतिक वातावरण अच्छा नहीं होता है।
6. विद्यालय में प्रतिकारक : सुविधाओं की कमी, विद्यालय में अनुपस्थिति, अयोग्य अध्यापक, शैक्षिक मार्ग दर्शन की कमी।

पिछड़े बालक की शिक्षा

☞ विशिष्ट विद्यालयों की स्थापना : पिछड़े बालकों के लिए आवास विद्यालय हो तो पिछड़े बालक शिक्षा में अपने आप को सुरक्षित महसूस करेंगे।
☞ विशिष्ट कक्षाओं की स्थापना : पिछड़े बालकों की कक्षाओं में 20 से अधिक छात्र नहीं होने चाहिए।
☞ विशिष्ट विद्यालयों का संगठन : बालकों को नियंत्रित स्वतंत्रता एवं अनुशासन में रखना चाहिए। बालक की प्रगति का पूर्ण अभिलेख विद्यालय द्वारा तैयार करना चाहिए।
☞ योग्य शिक्षकों की नियुक्ति : शिक्षा के लिए व्यावहारिक शिक्षक को नियुक्त करना चाहिए।
☞ विशेष पाठ्यक्रम का निर्माण : पाठ्यक्रम ऐसा करना चाहिए जो उनको विद्वान बनाने के बजाए जीवन के लिए तैयार करे।
☞ अध्ययन के विषय : विषयों का सम्बन्ध उनके सामाजिक वातावरण से होना चाहिए।
☞ हस्तशिल्पों की शिक्षा : उन्हें मूर्त विषयों के रुप में हस्तशिल्पों की शिक्षा दी जानी चाहिए।
☞ सांस्कृतिक विषयों की शिक्षा : उन्हें उत्तम नैतिक गुणों वाले वीर मनुष्यों एवं महान पुरुषों की कहानियों एवं नाटकों की शिक्षा दी जानी चाहिए।
☞ विशेष शिक्षण विधियों का प्रयोग : कम से कम मौखिक शिक्षण एवं धीमी विधियों का प्रयोग करना चाहिए।

मंद बुद्धि बालक

☞ क्रो एवं क्रो के अनुसार : "जिन बालकों की बुद्धि लब्धि 70 से कम होती हो, उन्हें मंद बुद्धि बालक कहते हैं।"

मंद बुद्धि बालक की विशेषताएँ

☞ दूसरों को मित्र की विशिष्ट इच्छा।
☞ असफलताओं के कारण निराशा।
☞ संवेगात्मक और सामाजिक असमायोजन।
☞ पूर्व ज्ञान का विभिन्न परिस्थितियों में प्रयोग करने में असमर्थ।
☞ मान्यताओं के सम्बन्ध में अटल विश्वास।
☞ स्वयं की चिंता।
☞ परिस्थितियों की अवहेलना।
☞ कार्य और कर्म के सम्बन्ध में अनूठी धारणाएँ।
☞ आत्मविश्वास का आगमन।
☞ भावावेश पूर्ण व्यवहार।

मंद बुद्धि बालकों की शिक्षा

1. सामाजिक प्रशिक्षण।
2. आर्थिक प्रशिक्षण।
3. क्रियात्मक पाठ्यक्रम।
4. विशिष्ट कक्षाएँ – इनकी कक्षाओं में छात्र संख्या 12 से 15 होनी चाहिए।

विकलांग बालक

(Physically Handicapped Children)

☞ कुछ बालक ऐसे होते हैं जिनके शरीर का कोई न कोई अंग जन्म से ही दोषपूर्ण होता है या किसी बीमारी, चोट, दुर्घटना या आघात के कारण शरीर के किसी अंग में दोष आ जाता है।
☞ पूर्ण रुप से अपंग बालकों को शिक्षा देने हेतु विशेष विद्यालयों की स्थापना की गई हैं जिनमें ब्रेले प्रणाली द्वारा शिक्षा दी जाती है।

समस्यात्मक बालक

(Problem Children)

☞ विद्यालय में कुछ असामान्य व्यवहार वाले बालक भी होते हैं। ये कक्षा और विद्यालय में अपने को समायोजित नहीं कर पाते हैं तथा शिक्षकों के लिए नियमित समस्या बने रहते हैं।
☞ ऐसे बालक अपने असामान्य व्यवहार (चोरी करना, झूठ बोलना) के कारण समस्या बन जाते हैं।

अपराधी बालक

☞ स्पयेर के अनुसार : "इस प्रकार अपराध का अर्थ समाज विरोधी व्यवहार का कोई प्रकार है जो व्यक्तिगत तथा सामाजिक विघटन उत्पन्न करता है"
☞ हीली के अनुसार : "वह बालक जो समाज द्वारा निर्धारित व्यवहार के सामान्य प्रतिमान का अनुसरण नहीं करता, बालापराधी कहलाता है।"
☞ कॉल के अनुसार : "बालापराधी वह है जिसमें मूलप्रवृत्यात्मक प्रेरक शक्तिशाली होते हैं, चेतना निर्बल होती है और उसका अंह तात्कालिक संतोष से शांत होता है, सह सामान्य व्यवहार के प्रतिमानों को स्वीकार नहीं करता।"

बालापराधी ....

☞ मूलप्रवृत्यात्मक शक्तिशाली,
☞ सामान्य व्यवहार के प्रति अस्वीकृति,
☞ विमाता के दुर्व्यवहार के कारण अपराधी प्रवृत्ति का विकास,
☞ अनुचित मार्गदर्शन

बालापराध के कारण

(1) इअ
(2) इअ
(3) इअ
(4) विमाता के दुर्व्यवहार के कारण बच्चे अपराधी बन जाते हैं।
(5) शारीरिक व मानसिक दोष से पीड़ित माता–पिता की संताने मनमानी करने लगती हैं।
(6) ऐसे परिवार जहां माता–पिता दोनों ही नौकरी करते हैं, जहां घर पर वातावरण तनावपूर्ण रहता है, जहां परिवार के सदस्यों की संख्या अधिक होती है, जिन परिवारों का अनुशासन ज्यादा कठोर या ढ़ीला होता है, वहां के बच्चे अपराध की ओर उन्मुख हो जाते हैं।
(7) पक्षपातपूर्ण वातावरण में बच्चे स्वयं को उपेक्षित महसूस करते हैं।

☞ समुदाय से संबंधित :

समाज का दूषित वातावरण बालक को बाल अपराधी बनाने में सहायक सिद्ध होता है।

(1) यदि घर के पास वेश्यालय, शराब घर या सिनेमा हो तो बच्चों के बाल अपराधी बनने की संभावना अधिक रहती है।

(2) अपराधी मित्र होने पर बच्चे के अपराधी होने की संभावना अधिक होती है।

(3) मनोरंजन के साधनों का अभाव होने पर बच्चा गलत राह पर जाने लगता है।

☞ विद्यालय के वातावरण का प्रभाव :

(1) विद्यालय में मनोरंजन के साधनों के अभाव से संवेगात्मक विकास नहीं हो पाता जो प्रत्यक्ष रुप से बाल अपराध को जन्म देता है।

(2) विद्यालय में बच्चों के व्यक्तिगत बुद्धि, योग्यता व रुचियों को ध्यान में नहीं रखने पर बालकों के अपराधी बनने की संभावना अधिक रहती है।

(3) मंदबुद्धि परीक्षा में पास होने के लिए हर अनुचित साधन अपनाने का प्रयास करता है।

(4) उचित मार्गदर्शन की कमी के कारण व विद्यालय के घर से दूर होने की स्थिति में बच्चे के अपराधी होने की संभावना ज्यादा बढ़ जाती है।

☞ समाज का प्रभाव :

(1) समाज द्वारा पक्षपातपूर्ण व्यवहार व भेदपूर्ण नीति बालक पर नकारात्मक प्रभाव डालती है।

(2) राजनीतिक दलों द्वारा छात्रों को चुनावी गतिविधियों में सम्मिलित करने का प्रयास किया जाता है। जिससे उनमें अपराध प्रवृत्ति उत्पन्न होती है।

☞ मनोवैज्ञानिक प्रभाव :

(1) मंदबुद्धि बालकों के अपराधी होने की संभावना अधिक रहती है।

(2) जीवन में निरंतर संघर्षशील व असफलता से ग्रसित बालक अपराध वृत्ति की ओर जल्दी ही अग्रसर हो जाते हैं।

(3) मानसिक रोग से ग्रसित बालकों के अपराधी बनने की संभावना ज्यादा होती है।

(4) संवेगात्मक रुप से अस्थिर बालक अपराध प्रवृत्ति की ओर जल्दी उन्मुख हो जाते हैं।

मानसिक दृष्टि से पिछड़े बालक

☞ बुद्धि लब्धि की दृष्टि से 70 से कम बुद्धि लब्धि (I.Q.) वाले बालकों को मानसिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ माना जाता है।

विशेषताएँ

☞ सीखने की धीमी गति : बालक बार–बार अभ्यास करने पर ही कुछ सीख पाते हैं, उनमें स्मरण व प्रत्यास्मरण की क्षमता नहीं के बराबर होती है।

☞ अमूर्त चिंतन का अभाव : ऐसे बालक किसी समस्या का स्वतंत्र रुप से संश्लेषण व विश्लेषण नहीं कर सकते।

☞ सीमित रुचि : मंद बुद्धि बालक किसी बात पर अधिक समय तक ध्यान नहीं देता।

☞ मौलिकता का अभाव : ऐसे बालक एक परिस्थिति में प्राप्त अनुभव को दूसरे परिस्थिति में प्रयोग करने में अक्षम होते हैं।

☞ संकेत पाने वाले : मंदबुद्धि बालक दूसरों के कहे अनुसार कार्य करने से अधिक रुचि रखते हैं, उनमें स्वतंत्र चिंतन का अभाव पाया जाता है।

☞ मंदबुद्धि बालकों में कई प्रकार की शारीरिक अनियमितताएँ पाई जाती है। उनमें पेशीय समन्वय का अभाव पाया जाता है।

स्नायविक बालक

(Neurotic Child)

☞ स्नायविक बालकों से अभिप्राय उन बालकों से है जो किसी भी शारीरिक तथा मानसिक रोग के कारण असामान्य व्यवहार का परिचय देते हैं और आयु तथा सामान्य स्तर के कार्य को करने में समर्थ रहते हैं। इनकी विशेषता पिछड़े बालकों के समान होती है।

☞ इनकी प्रवृत्ति पिछड़े बालकों के समान होती है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

☞ प्रतिभावान बालक की विशेषता है :
(a) अध्ययन की योग्यता
(b) निर्देशन की कम आवश्यकता
(c) उच्च बुद्धि लब्धि एवं नेतृत्व की क्षमता
(d) उपरोक्त (d)

☞ कौन सा बाल अपराध है?
(a) यौन अपराध (b) चुनौती देने की प्रवृत्ति
(c) धूम्रपान (d) उपरोक्त सभी (d)

☞ बाल अपराधी के उपचार की विधि नहीं है :
(a) वातावरण विधि
(b) मनोवैज्ञानिक विधि
(c) मनोविश्लेषणात्मक विधि
(d) अधिगम की विधि (d)

☞ मंद बुद्धि बालकों की शिक्षा का स्वरुप है :
(a) विशिष्ट कक्षाएँ
(b) अपनी देखभाल प्रशिक्षण
(c) व्यक्तित्व शिक्षण
(d) उपरोक्त सभी (d)

☞ मंदबुद्धि बालक की विशेषता है :
(a) अमूर्त चिंतन का अभाव
(b) सीखने की धीमी गति
(c) शारीरिक दोष
(d) उपरोक्त सभी (d)

☞ बालकों के जटिल/समस्यात्मक व्यवहार की विशेषता नहीं है :
(a) चोरी करना (b) झूठ बोलना
(c) धोखा देना (d) आज्ञा पालन (d)

☞ मनस्तापी बालकों की समस्या नहीं है :
(a) मौलिकता
(b) एकाग्रता
(c) शारीरिक दोष, सीखने की धीमी गति
(d) अमूर्त चिंतन का अभाव (a)

☞ मनस्तापी बालकों में मानसिक हीनता का कौन–सा कारण नहीं है?
(a) वंशानुक्रम (b) जन्म के समय आघात
(c) धार्मिक आघात (d) मानसिक आघात
(c)

☞ अंधे बालकों को शिक्षण दिया जाता है :
(a) दृश्य–श्रव्य सामग्री द्वारा
(b) ब्रेल पद्धति द्वारा
(c) गाने–बजाने द्वारा
(d) टंकण द्वारा (b)

☞ कोई भी व्यवहार जो सामाजिक नियमों या कानूनों के विरुद्ध बालकों द्वारा किया जाता है, वह कहलाता है :
(a) बालापराध (b) असामान्यता
(c) उद्दंडता (d) इनमें से कोई नहीं (a)

☞ पिछड़े बालकों के चयन की विधि निम्नांकित में से कौन सी है?
(a) मनोवैज्ञानिक विधि (b) खेल विधि
(c) निष्पत्ति विधि (d) उपर्युक्त सभी (d)

व्यक्तित्व (Personality)

	प्रतिपादक	व्यक्तित्व सिद्धांत
☞	फ्रायड	मनोविश्लेषण सिद्धांत
☞	हर्जबर्ग मास्लो	आत्मज्ञान का सिद्धांत
☞	शैलडन	रचना का सिद्धांत
☞	ऑलपोर्ट	ऑलपोट का सिद्धांत
☞	इरिकफ्राम, करेन हॉर्नी, इरिक्सन	नव फ्रायड सिद्धांत
☞	जीव सिद्धांत	गोल्डस्टीन

☞	व्यक्तित्व शब्द लेटिन भाषा के 'परसोना' शब्द से बना है।	
☞	गिलफार्ड के अनुसार व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले प्रतिकारकों में शामिल है: सामाजिक अनुक्रिया, संगठन पर बल और सर्वव्यापी तत्व।	
☞	फ्रायड के अनुसार व्यक्तित्व के निर्माण में इद, इयो, और सुपर इगो तत्वों का योगदान है।	
☞	बोरिंग :	"व्यक्तित्व, व्यक्ति का अपने वातावरण के साथ अपूर्व और स्थायी समायोजन है।"
☞	शैलडॉन :	व्यक्तित्व के रचना (Constitution) सिद्धांत के प्रतिपादक।
☞	आर.बी. कैटल :	व्यक्तित्व के प्रति (Factorial) सिद्धांत के प्रतिपादक।
☞	शिक्षा का मुख्य उद्देश्य :	बालकों के व्यक्तित्व का समुचित विकास करना है।
☞	प्रक्षेपण विधि के प्रकार :	
1.	कक्षा प्रसंग परीक्षण :	उपनाम : प्रासंगिक अंतर्बोध परीक्षण। इसका निर्माण मनोवैज्ञानिक मॉर्गन एवं मुर्रे ने 1935 में किया।
2.	बाल सम्प्रत्यक्ष परीक्षणः	इस विधि का आविष्कार मनोवैज्ञानिक डॉ. अरनेस्ट क्रिस ने किया। बच्चों के व्यक्तित्व परीक्षण के लिए उपयुक्त विधि।
3.	रोर्शा इंक ब्लाक परीक्षणः	इसके प्रवर्तक हरमैन रोर्शा है।
4.	प्रासंगिक अन्तर्बोध	इस परीक्षण का निर्माण मार्गन एवं मुर्रे ने 1935 में किया।
5.	वाक्य पूर्ति परीक्षण :	इस परीक्षण का विकास पाइन एवं टैण्डलर ने किया। इस दिशा में सबसे सराहनीय कार्य रोटर्स ने किया।

☞ व्यक्तित्व केवल बाहरी गुणों से ही निर्धारित नहीं होता है।
☞ आलपोर्ट : "व्यक्तित्व, व्यक्ति में उन मनोदैहिक व्यवस्थाओं का संगठन है जो वातावरण के साथ उसका समायोजन निर्धारित करती है।"
☞ लिंटन : "व्यक्तित्व, व्यक्ति से संबंधित समस्त मनोवैज्ञानिक क्रियाओं एवं दशाओं का सम्मिलित स्वरुप है।"
☞ वाट्सन : "हम जो कुछ कहते हैं, वही व्यक्तित्व है।"
☞ वैलेन्टीन : "व्यक्तित्व जन्मजात और अर्जित प्रवृत्तियों का योग है।"
☞ स्किनर के अनुसार : "व्यक्तित्व जटिल होता है, व्यक्तियों में इसकी भिन्नताओं में व्यापकता होती है"।
☞ मन के अनुसारः "व्यक्तिगत एक व्यक्ति के व्यवहार के तरीकों, दृष्टिकोणों, क्षमताओं, योग्यताओं तथा अभिरुचियों का विशिष्टतम् संगठन है।"
☞ बीसन्ज और बीसन्ज के अनुसार : "व्यक्तित्व मनुष्य की आदतों, दृष्टिकोणों तथा विशेषताओं का संगठन है। यह प्राणिशास्त्रीय, सामाजिक तथा सांस्कृतिक कारणों के संयुक्त कार्य द्वारा उत्पन्न होता है।"
☞ म्यूरहेड के अनुसार : "व्यक्तित्व में सम्पूर्ण व्यक्ति का समावेश होता है। व्यक्तित्व व्यक्ति के गठन, रुचि के प्रकारों, अभिवृत्तियों, व्यवहारों, क्षमताओं, योग्यताओं और प्रवणताओं का विचित्रतम संगठन है।"
☞ ऑलपोर्ट के अनुसार : "व्यक्तित्व के भीतर उन मनोशारीरिक गुणों का गत्यात्मक संगठन है जो वातावरण के साथ उसका अद्वितीय समायोजन निर्धारित करता है।"
☞ ड्रेवर के अनुसार : "व्यक्तित्व शब्द का प्रयोग व्यक्ति के उन शारीरिक, मानसिक, नैतिक और सामाजिक गुणों के संसुगठित और गत्यात्मक संगठन के लिए किया जाता है जिसे वह अन्य व्यक्तियों के साथ अपने सामाजिक जीवन के आदान–प्रदान में प्रदर्शित करता है।"
☞ मार्टन प्रिंस के अनुसार : "व्यक्तित्व व्यक्ति के समस्त जन्मजात संस्थानों, आवेगों, प्रवृत्तियों, झुकावों एवं मूल प्रवृत्तियों और अनुभव के द्वारा अर्जित संस्कार एवं प्रवृत्तियों का योग है।"
☞ निष्कर्ष : व्यक्तित्व एक व्यक्ति के समस्त मानसिक एवं शारीरिक गुणों का ऐसा गत्यात्मक संगठन है जो वातावरण के साथ उस व्यक्ति का समायोजन निर्धारित करता है।
☞ व्यक्तित्व को परिभाषित करना संभव नहीं है।
☞ व्यक्तित्व वह नहीं है जो कुछ बाहर से दिखाई देता है।
☞ व्यक्तित्व गतिशील होता है।
☞ व्यक्तित्व मनुष्य के बाह्य रुप एवं उसके अंतर्निहित गुणों का सम्मिलित स्वरुप है।